## सम्पादक परिचय

**डॉ प्रतिभा नेगी**, एम॰ए॰, पीएच॰डी॰ (अर्थशास्त्र)

वर्तमान में रा॰स्ना॰महाविद्यालय बेरीनाग पिथौरागढ, सोबन सिंह जीना अल्मोडा में पिछले 05 से अधिक वर्षों से स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षाओं के अध्यापन कार्य में संलग्न है। उनके द्वारा लिखित/सम्पादित 02 पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 10 से अधिक शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुकी हैं। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में शोध संलग्न डॉ॰ नेगी द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भी अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं तथा एक सेमिनार का आयोजक सचिव के रूप में सफल आयोजन कर चुकी हैं। वर्तमान में भी विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

**डॉ॰ जितेन्द्र कुमार लोहनी**, एम॰ए॰, पी-एच॰डी॰, यू-सेट (अर्थशास्त्र), एडीसीएचएन, डीसीपीएम।

वर्तमान में अर्थशास्त्र विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल में पिछले 12 से अधिक वर्षों से स्नातक, स्नातकोत्तर एवं प्री॰ पी-एच॰डी॰ कक्षाओं के अध्यापन कार्य में संलग्न हैं। उनके द्वारा लिखित/सम्पादित 05 पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 30 से अधिक शोध-पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय तथा यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं और लगभग 10 से अधिक पुस्तकों के चैप्टर के रूप में अपना योगदान दे चुके हैं। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में शोध संलग्न डॉ॰ लोहनी द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय सेमिनारों में भी अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये हैं तथा एक वेबिनार का आयोजन सचिव के रूप में सफल आयोजन कर चुके हैं। वर्तमान में एक प्रतिष्ठित नेशनल जर्नल के रिव्यूअर के रूप में जुड़े डॉ॰ लोहनी को वर्ष 2019 में 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेंस' तथा 'सर्टिफिकेट ऑफ एप्रीशियेशन' तथा वर्ष 2022 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल द्वारा 'प्रो॰ वाई॰पी॰एस॰ पांगती रिसर्च अवार्ड 2021' से भी सम्मानित किया जा चुका है।

NB Publications
SF-1, 2nd Floor, A-5/3, DLF Ankur Vihar
Loni Ghaziabad-201 102 U.P. (India)
E-mail: nbpublications26@gmail.com
Mob.: 9999829572, 8700829963

₹ 1195/-

ISBN 978-93-91550-23-3

उत्तराखण्ड : संस्कृति एवं पर्यटन • डॉ॰ प्रतिभा नेगी, डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी

# उत्तराखण्ड
## संस्कृति एवं पर्यटन

डॉ॰ प्रतिभा नेगी
डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी

# उत्तराखण्ड
## संस्कृति एवं पर्यटन

सम्पादक

**डॉ. प्रतिभा नेगी**

**डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी**

**N. B. Publications**

Ghaziabad - 201102 (India)

Published By:
**N. B. Publications**
SF-1, A-5/3, D.L.F., Ankur Vihar,
Loni, Ghaziabad-201102, U.P. (India)
Phones : 8700829963, 9999829572
E-mail : nbpublications26@gmail.com

Sale Distributor By:
**KUNAL BOOKS**
4648/21, 1st Floor, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002.
Phones: 011-23275069, 9811043697
E-mail: kunalbooks@gmail.com
Website: www.kunalbooks.com

**उत्तराखण्ड : संस्कृति एवं पर्यटन**

© Editors
First Published : March 2023
ISBN: 978-93-91550-23-3

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

The opinions and views expressed are exclusively those of the authors and in no way the editors or the publisher is responsible for the same.

Published in India by N.B. Publications, and printed at **Trident Enterprises,** Noida, (U.P.)

# कथन

देवभूमि उत्तराखण्ड अपनी बहुआयामी संस्कृति के लिये वैश्विक स्तर पर अपना विशिष्ट स्थान रखती है। पूर्वकाल से ही प्रदेश में प्रचलित संस्कृति को वर्तमान में भी यहाँ के खान–पान, वेश–भूषा, आभूषणों, देवालयों, नौलों, मेले एवं यात्राओं, पर्वों आदि विभिन्न रूप में देखा जा सकता है। यह समृद्ध संस्कृति जहाँ राज्य को भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख आयाम के रूप में स्थापित करती है वहीं यह पर्यटकों के लिये भी सदैव से ही आकर्षण का केन्द्र रही है। प्रत्येक वर्ष घरेलू तथा अंर्तराष्ट्रीय पर्यटक देवभूमि में अपने उद्देश्य के अनुसार पर्यटन गतिविधियों का आनंद लेने पहुँचते हैं। एक ओर जहाँ यह स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को संचालित करता है वहीं दूसरी ओर यह राज्य की आय के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में भी जाना जाता है। पर्यटन एवं उससे जुड़ी गतिविधियां राज्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने में भी सहायक की भूमिका का निर्वहन करती है। प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाओं को देखते हुए इसे पर्यटन प्रदेश के रूप में भी स्थापित किये जाने की दिशा में समय–समय पर विभिन्न सरकारों द्वारा प्रयास किये जाते रहे हैं।

राज्य में विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों का अपना एतिहासिक एवं पौराणिक महत्व रहा है। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले ये मेले विभिन्न संस्कृतियों का संगम होते हैं जिनमें स्थानीय लोकगीत, लोकवाद्य, लोककथाओं, वेशभूषा, आभूषण, खान–पान आदि को देखने एवं जानने का अवसर प्राप्त होता है। ये पौराणिक मेले आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण होने के साथ ही सामाजिकता का एक वृहद केन्द्र भी होते हैं तथा स्थानीय लोगों की आर्थिकी से भी प्राचीन समय से जुड़े रहे हैं। जौलजीवी मेला, थल मेला, बागेश्वर मेला, देवीधुरा मेला, कुम्भ मेला आदि वैश्विक पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं जिनमें

प्रतिवर्ष असंख्य लोग शामिल होते हैं। प्रदेश में विभिन्न अंतरालों में होने वाली यात्राओं का भी अपना महत्व है। नन्दा राजजात यात्रा इनमें प्रमुख है। गढ़वाल क्षेत्र के अंतर्गत चमोली जनपद से शुरू होने वाली यह यात्रा प्रत्येक बारह वर्ष में आयोजित की जाती है जिसमें देश से ही नहीं वरन् विदेशों से भी श्रृद्धालु शामिल होने आते हैं।

उत्तराखण्ड में उगने वाले विभिन्न किस्मों के अनाज तथा उनसे बनने वाले स्वादिष्ट व्यंजन भी पर्यटकों को वर्तमान में आकर्षित करने लगे हैं। अधिकतर भोजन अथवा व्यंजन प्राचीन पारंपरिक पद्यतियों से बनाये जाने के कारण अपने बेहतर स्वाद के लिये पर्यटकों के मध्य देश ही नहीं वरन् विदेशों में भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। कफुली, चुड़कानी, डुबके, चैंसा, ठठवाणी, बाल मिठाई, खेंचुआ, झंगोरे की खीर और भी न जाने कितने व्यंजन इस श्रेणी मे शामिल होते हैं जो प्रदेश को एक विशिष्ट स्थान दिलवाते हैं। वर्तमान कुछ समय से पर्यटकों का इन स्वादिष्ट व्यंजनों की ओर रूझान को देखते हुए राज्य में फूड टूरिज्म के अवसर बढ़ने की संभावना के रूप में देखा जाने लगा है। जो एक ओर रोजगार के अवसर उत्पन्न करेगा वहीं दूसरी ओर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की संभावनाओं को भी बढ़ाने की ओर कार्य करेगा।

प्रदेश में प्राचीन समय से ही तीर्थाटन के लिये श्रृद्धालु आते रहे हैं। केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंमोत्री तथा यमुनोत्री चार धाम के नाम से विख्यात हैं जिनमें प्रति वर्ष तीर्थाटन एक निश्चित समयान्तराल तक चलता रहता है। इसके अतिरिक्त तुंगनाथ, मदमहेश्वर, त्रियुगीनारायण, गोपीनाथ मंदिर, नरसिंह मंदिर, पंच बद्री, पंच केदार, पंच प्रयाग जैसे पर्यटन स्थल सदैव से ही उत्तराखण्ड को विशिष्ट स्थान प्रदान करते रहे हैं। कत्यूरी शासनकाल में निर्मित अधिकांष मंदिरों की वास्तुशिल्प देखते ही बनती है। जिनके निर्माण का समय इतिहासकारों द्वारा लगभग एक हजार वर्ष से भी पुराना माना जाता है। केदारनाथ, तुंगनाथ, मदमहेश्वर, जागेश्वर, बैजनाथ, कपिलेश्वर, बागेश्वर आदि स्थानों में शिव मंदिर तथा कोसी कटारमल अल्मोड़ा में निर्मित भव्य सूर्य मंदिर अपनी वास्तुकला का अद्वितीय नमूना है। नानकमत्ता साहिब, रीठासाहिब, हेमकुंड साहिब, पीरान कलियर आदि भी राज्य में तीर्थाटन की दृष्टि से प्रमुख स्थल प्राचीन काल से ही रहे हैं। जिनके दर्शनार्थ प्रत्येक वर्ष तीर्थाटन का उद्देश्य लेकर दर्शनार्थी प्रदेश में आते हैं। इन सबके अतिरिक्त प्रदेश को कैलाश मानसरोवर यात्रा के भारतीय क्षेत्र की तरफ से यात्रा तय करने के मार्ग के रूप में भी जाना जाता है जो कि प्रतिवर्ष भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित की जाती है।

तीर्थाटन के अतिरिक्त पर्यटन के विभिन्न आयाम उत्तराखण्ड की धरती को पर्यटन के क्षेत्र में समृद्ध बनाते हैं। पर्यावरण को संरक्षित करते हुए संपोषणीय रूप से पर्यटन गतिविधियों का स्वरूप जिसे ईको पर्यटन के नाम से भी संबोधित किया जाता है। विभिन्न साहसिक खेलों की भूमि होने के कारण साहसिक पर्यटन की अपार संभावनाएं युवा पर्यटकों को आकर्षित करती हैं तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन का कार्य भी करती है। ट्रेकिंग, माउन्टेनियरिंग, कयाकिंग, व्हाइट वाटर राफ्टिंग जैसे विभिन्न साहसिक खेल राज्य में साहसिक पर्यटन को गति प्रदान करने वाले हैं। वर्तमान समय में प्रदेश के खाली होते गांवों को पुनः मुख्यधारा से एवं पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति एवं भोजन से जोड़ने के लिये रूरल टूरिज्म जैसी नवीन विधा का प्रदेश में संचालन शुरू हुआ है। जिसमें होम स्टे जैसी योजना के माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों को स्वरोजगार उपलब्ध हो रहा है।

इन पर्यटन विधाओं के अतिरिक्त योग एवं स्वास्थ्य हेतु भी विभिन्न केन्द्र पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। मेडिकल टूरिज्म का भी महत्व राज्य के परिप्रेक्ष्य में बढ़ता चला जा रहा है। आर्युवेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्यतियों के माध्यम से ईलाज मेडिकल टूरिज्म की संभावनाएं राज्य में बढ़ाता है। वनों एवं एकांत से लगाव रखने वाले पर्यटकों हेतु विभिन्न नेशनल पार्क, वाइल्ड लाइफ सेंक्च्युरी, बर्ड वाचिंग रिजर्व जैसे अनेक स्थल राज्य में पर्यटकों को जीव एवं वानस्पतिक विविधता के दर्शन कराते हैं। जिसे वर्तमान में फॉरेस्ट टूरिज्म के नाम से भी जाना जाने लगा है तथा यह राज्य में लोगों की आजीविका के महत्वपूर्ण साधन के रूप में भी स्थापित होता जा रहा है।

राज्य अपनी प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक विभिन्न प्राचीन धरोहरों के लिये भी जाना जाता रहा है जिन्हें देखने प्रतिवर्ष पर्यटक राज्य में आते हैं। यदि हम प्रागैतिहासिक कालखण्ड को अनुभव करना चाहते हैं तो लखुउडियार, फड़कानौला, ल्वेथाप, देवीधुरा, अलकनन्दा घाटी, जालली, नैनीताल का खुटानी नाला एवं अन्य बहुत से स्थानों पर गोलनुमा आकृति जिसे 'कपमार्क्स' के लिए जाना जाता है। इन स्थानों पर आदिमानव के विचरण के साक्ष्य वर्तमान में भी देखने को मिलते हैं। उस इतिहास से रू–ब–रू होने तथा उसके जीवंत दर्शन करने के लिये यह पर्यटन संभावनाओं में वृद्धि में सहायक हो सकते हैं। प्रागैतिहासिक काल से इतिहास में पौराणिक कालखण्ड का उल्लेख करते बहुत से स्थान उत्तराखण्ड में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। हरिद्वार तथा कनखल जैसे स्थान पौराणिक उल्लेखों में भी उल्लिखित किये गये हैं।

उत्तराखण्ड के एतिहासिक कालखण्ड की तरफ बढ़ें तो कत्यूरी तथा चंद शासकों द्वारा विभिन्न स्थानों पर निर्मित भव्य मंदिर तथा जलकुण्ड जिन्हें स्थानीय भाषा में 'नौला' नाम से संबोधित किया जाता है राज्य के महत्वपूर्ण एतिहासिक धरोहर के रूप में पर्यटकों को आध्यात्मिक, एतिहासिक तथा संस्कृति के दर्शन कराते हैं। जनपद बागेश्वर में पाँचवीं सदी में निर्मित 'बद्रीनाथ का नौला', चम्पावत में 'एक हथिया नौला', 'बालेश्वर का नौला' कुछ अति प्रसिद्ध तथा एतिहासिक कालखण्ड की यात्रा कराने वाले भवन हैं। राज्य में औपनिवेशिक काल में बने भव्य भवन आज भी जीवंत तथा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहे हैं प्रतिवर्ष इन भवनों की वास्तुकला को देखने पर्यटक इन स्थलों पर पहुँचते हैं। स्वतंत्रता के बाद एवं राज्य की स्थापना के पश्चात् भी पर्यटकों के आकर्षण को बढ़ाने हेतु सरकारों द्वारा विभिन्न प्रयास इस दिशा में समय–समय पर किये जाते रहे हैं तथा वर्तमान में भी किये जा रहे हैं। चार धाम योजना, शिव सर्किट योजना, अपनी धरोहर अपनी पहचान, मानसखण्ड माला योजना जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रदेश की संस्कृति एवं पर्यटन को विकसित किये जाने की दिशा में प्रयास जारी हैं।

इस सम्बन्ध में यह पुस्तक "उत्तराखण्ड : संस्कृति एवं पर्यटन" जो कि उन विद्वजनों का सम्मिलित प्रयास है जिन्होंने उत्तराखण्ड की संस्कृति एवं पर्यटन के विभिन्न आयामों को विवेकपूर्ण विश्लेषण के आधार पर अपने शोधपत्र एवं लेख के माध्यम से इस पुस्तक के प्रयोजन को सफल बनाने हेतु अपने सहयोग के रूप में प्रस्तुत किया है। हम आशा तथा विश्वास करते हैं कि हमारा यह प्रयास अकादमिक जगत में भविष्य में इस दिशा में होने वाले महत्वपूर्ण शोधों के साथ–साथ आम पाठकों के ज्ञानार्जन में सहायक होगा। अतः सर्वप्रथम हमारा प्रणाम माँ सरस्वती को जिनके आर्शीवाद से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। हमारा हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं उन समस्त प्रबुद्धजनों को जिनके लेखों के बिना इस कार्य को एक पुस्तक का रूप देना संभव नहीं हो पाता क्योंकि यह शोधपूर्ण अंर्तयात्रा उनके कारण ही संभव हो पाई।

हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं अपने समस्त परिजनों एवं सहयोगियों का जिन्होंने पग–पग पर हमें इस संकल्प की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया तथा हमारी प्रेरणा का स्रोत बने। भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की आशा एवं पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि होने पर क्षमाप्रार्थना एवं मार्गदर्शन की भी अपेक्षा रखते हैं।

पुस्तक के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग हेतु श्री प्रेम सिंह बिष्ट, एन. बी. पब्लिकेशन, गाजियाबाद को भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करना हमारा परम कर्तव्य है।

अतः अंत में हम यह आशा करते हैं कि अपने समस्त प्रबुद्ध लेखकों के सहयोग से किया गया हमारा यह सहकारी प्रयास उत्तराखण्ड की संस्कृति एवं पर्यटन के अध्ययन को एक पृथक एवं नवीन आयाम देने तथा निकट भविष्य में इस दिशा में होने वाले शोध एवं कार्यों में सहयोगी साबित होगा।

**डॉ. प्रतिभा नेगी**

**डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी**

# अनुक्रम


1. जनपद पिथौरागढ़ के मेलों का आर्थिक स्वरूप : एक अध्ययन 1
*दिव्या ओली/डॉ. जितेंद्र कु. लोहनी/प्रो. पदम एस. बिष्ट*

2. उत्तराखण्ड के पर्यटन पर स्थानीय कला एवं हस्तशिल्प का प्रभाव 10
*डॉ. प्रतिभा नेगी*

3. उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ में पर्यटन की सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ 21
*डॉ. धीरज सिंह खाती*

4. मध्य हिमालयी राज्य उत्तराखंड में सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी–पर्यटन में अंर्तसंबंध 30
*डी. एस. परिहार/महेन्द्र सिंह/नीरज कुमार*

5. हिमालयी राज्य में कोविड–19 के बाद यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य उद्योग 52
*नीरज कुमार/डी.एस. परिहार/महेन्द्र सिंह*

6. विलुप्त होते महत्त्वपूर्ण तीर्थ–मन्दिर उत्तराखण्ड की तीर्थाटन–पर्यटन अर्थव्यवस्था के लिए गम्भीर चुनौती 64
*डॉ. प्रीतम कुमारी*

7. उत्तराखण्ड में आपदा एवं पर्यटन 77
*डॉ. पारूल भारद्वाज/प्रमोद कुमार/नमिता मिश्रा*

8. कुमाऊँ के लघु कुटीर उद्योग में उद्यमिता संभावनाएं ('पिछौड़ा' परिधान के विशेष संदर्भ में) 81
*आरती जोशी/डॉ. रूचि द्विवेदी*

9. कुमाऊँ के गंगावाली क्षेत्र का सांस्कृतिक महत्व एवं पर्यटन के अवसर 85
*कौशल उप्रेती*

10. उत्तराखण्ड की संस्कृति में पर्यटन वर्तमान स्थिति 94
*डॉ. निशा आर्या*

11. उत्तराखण्ड में पर्यटन के अवसर एवं संभावनाएँ एक विवेचना 99
*डॉ. कवलजीत कौर*

12. भारतीय संस्कृति का पारम्परिक स्वरूप 110
*डॉ. प्रदीप कुमार पेटवाल*

13. उत्तराखण्ड की सुदृढ़ लोक संस्कृति एवं लोक कला एक अध्ययन 120
*डॉ. नीति गोयल*

14. हिमालय में पर्यटन की संभावनाएं एवं चुनौतियां 126
*डॉ. विजय कुमार*

15. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण 137
*डॉ. शैला जोशी*

16. उत्तराखण्ड की प्राकृतिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में पर्यटन : एक दृष्टि 143
*डॉ. विनीता बिष्ट*

17. बागेश्वर जनपद में पर्यंटन की सम्भावनायें (कांडा तहसील के विशेष सन्दर्भ में) 148
*डॉ. निधि अधिकारी*

18. उत्तराखण्ड के पर्यटन क्षेत्र पर कोविड–19 का प्रभाव 154
*मनोज कुमार*

19. उत्तराखण्ड के पर्यटन पर कोविड–19 का प्रभाव 159
*सुनीता यादव/प्रोफेसर मनीषा तिवारी*

20. उत्तराखण्ड में पर्यटन का एक स्वरूप : पारिस्थितिकीय पर्यटन 168
*अरूण सिंह/डॉ. नन्दन सिंह बिष्ट*

21. उत्तराखण्ड का ग्रामीण जन जीवन थारू जनजाति के परिपेक्ष्य में 175
*डॉ. बिनीता बिष्ट*

22. उत्तराखण्ड में पर्यटन की वर्तमान स्थिति 180
*हरीश सिंह*

23. उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विरासत : द्वाराहाट मंदिर समूह 186
*डॉ. पूनम पन्त*

24. पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाएँ 192
(कुमाऊँ मण्डल के विशेष सन्दर्भ में)
*डॉ. दीपक कुमार टम्टा/अलका आर्या/विपिन चन्द्र टम्टा*

25. देवभूमि उत्तराखण्ड हिमालय में पर्यटन : रोजगार के संसाधन के रूप में अध्ययन 201
*सुरेन्द्र सिंह/भगवती नेगी*

26. उत्तराखण्ड में पर्यटन क्षेत्र पर कोविड–19 का प्रभाव 223
*विनीता भौर्याल/डॉ. अर्चना त्रिपाठी*

27. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में व्यक्ति की भूमिका 231
*प्रोफेसर सरोज वर्मा*

28. उत्तराखंड की लोकसंस्कृति 236
*मोनिका/दीपा/भावना पंत/प्रीति*

29. उत्तराखण्ड में पर्यटन और धार्मिक स्थल 244
*डॉ. कविता राठौर*

30. मानव की उत्पत्ति और सभ्यता का उद्गम है श्री बदरिकाश्रम 257
*डॉ. भगवती प्रसाद पुरोहित*

*31* उत्तराखण्ड पर्यटन : अतिथि देवो भवः 267
*कुसुम सुयाल*

# 4

# मध्य हिमालयी राज्य उत्तराखंड में सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी-पर्यटन में अंर्तसंबंध

**डी. एस. परिहार**
*भूगोल विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,*
*डी. एस. बी. परिसर, नैनीताल, उत्तराखण्ड*
**महेन्द्र सिंह**
*भूगोल विभाग, सोबन सिंह जीना वि.वि.,*
*अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड*
**नीरज कुमार**
*भूगोल विभाग, रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,*
*रानीखेत, उत्तराखण्ड*

**सार**

पारिस्थितिकी पर्यटन, वैश्विक अर्थव्यवस्था में सबसे बड़े और सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से एक है और दुनिया का सबसे बड़ा बढ़ता उद्योग भी पर्यटन ही है और इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के महत्वपूर्ण पर्यावरणीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव हैं। उत्तराखंड पूरे भारत और दुनिया में अपनी महान हिमालय पर्वत श्रृंखला, नदियों और पर्यटन स्थलों के लिए प्रसिद्ध सुंदर राज्य के साथ ही गरीबी और बेरोजगारी के परिणाम स्वरूप भेदभाव और पलायन की दर्दनाक वास्तविकता निहित है। उत्तराखण्ड के सतत् विकास के लिये सतत् पर्यटन को चार अलग–अलग व्याख्याओं में लिया जा सकता है, जिसमें पर्यटन की सामाजिक–आर्थिक स्थिरता, पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ पर्यटन, पर्यावरण के साथ–साथ उद्योग की दीर्घकालिक व्यावहारिकता के साथ टिकाऊ पर्यटन विकास और

अंत में एक रणनीति के हिस्से के रूप में पर्यटन शामिल है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक विविधता एवं पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देने तथा अंर्तसंबंध स्थापित करने पर केन्द्रित रहेगा, उत्तराखंड में सांस्कृतिक विविधता का प्रयोग करके पारिस्थितिकी पर्यटन परिपथों का निर्माण और विकास के लिए एक उपयुक्त योजना का सुझाव देना है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड के ऐसे स्थानीय रिवाज और पारंपरिक खाद्य पदार्थ, व्यंजन, संस्कृति, लोकगीत, हस्तशिल्प, वास्तुकला, विरासत आदि को बढ़ावा देना है, जिनका स्थानीय समुदायों में उच्च मूल्य है लेकिन अभी तक आर्थिक स्रोत के आधार पर उचित सिफारिश नहीं की गई है। उक्त सांस्कृतिक विविधताओं को पारिस्थितिकी–पर्यटन के साथ अंर्तसंबंध स्थापित करना और हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड को एक सतत् पर्यटन केंद्र के रुप में विकासीय सम्भावनाओं पर आधारित है। जो आध्यात्मिक, ग्रामीण, साहसिक और समुदाय–आधारित पर्यटन के साथ एकीकृत है और स्थानीय समुदायों में रोजगार के अवसर पैदा करता है और उत्तराखंड में दूरदराज के क्षेत्रों में आर्थिक स्थिति में सुधार करता है।

**मुख्य शब्दः** हिमालयी राज्य, सांस्कृतिक विविधता, पारिस्थितिकी–पर्यटन, स्थिति एवं सम्भावनायें।

## परिचय एवं साहित्य की समीक्षा

पर्यटन दुनिया के सबसे टिकाऊ और गतिशील क्षेत्रों में से एक है, जिसका हमेशा एक अंधेरा पक्ष होता है। Mowforth and Munt, 2015 के अनुसार 1970 के दशक से पर्यटन की मांग में प्राकृतिक और संरक्षित क्षेत्र (राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य) रहे हैं। उत्तराखंड संसाधन विशेष रूप से जल (बर्फ से ढके और वन पुनर्भरण के माध्यम से) और कई ग्लेशियरों, नदियों, घने जंगलों और बर्फ से ढके जंगल पहाड़ी चोटियाँ प्राकृतिक रूप से समृद्ध है। जिससे राज्य में साहसिक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं साथ ही अवकाश और सभी तीर्थयात्रा के बाद जो पर्यावरण–पर्यटन से जुड़ सकता है। जलवायु पर बढ़ती मानव गतिविधि के प्रभाव के कारण महत्वपूर्ण रूप से और प्राकृतिक क्षेत्र (संरक्षित और गैर–संरक्षित) में दुनिया भर में सतत् पर्यटन का महत्व बढ़ गया है। पर्यटन की संभावना गरीब, सबसे वंचित, महिलाएं और युवा के साथ समावेशी विकास के लिए आजीविका समर्थन से पूरा फायदा उठाया जा सकता है। आम तौर पर जन पर्यटन समस्याग्रस्त, असंवेदनशील और पर्यावरण के लिए विनाशकारी माना जाता है। इसलिए, पर्यटन और इसके

पर्यावरणीय प्रभाव के कारण बढ़ती पर्यावरणीय चिंता, संयुक्त पर्यटन के ऐसे रूपों के प्रति सामान्य असंतोष के कारण, स्थायी पर्यटन की बढ़ती मांग की आलोचना करता है (MowforthAnd Munt, 2015)।

इस क्षेत्र में पर्यटन पहले से ही विकसित है लेकिन पर्यटकों को बहुत सारी समस्याएं जैसे– उचित सड़क नेटवर्क और सामाजिक बुनियादी ढांचा के नहीं होने का सामना करना पड़ रहा है जिससे इको–टूरिज्म का विकास दूसरे क्षेत्र के समान नहीं हो पाता है जैसे दक्षिण भारत के क्षेत्र। उत्तराखंड में पर्यटन उद्योग को विकसित करने के लिए संभावनाएं है और कुछ क्षेत्रों के स्थानीय स्तर पर राजस्व और रोजगार उत्पन्न करने में यह एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है। पर्यटक नई जगहों को देखना चाहते हैं जो प्रकृति के करीब और शहर की हलचल से दूर हों। इसलिए पर्यटन में इकोटूरिज्म (Ecotourism), न्यू एज टूरिज्म (NewAge Tourism), विलेज टूरिज्म (Village Tourism), रूरल पर्यटन (Rural Tourism), स्वास्थ्य पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन सब के बाद समुदाय आधारित पर्यटन जैसे नई अवधारणाएं उभरे हैं। भारत में, उत्तराखंड में प्रदूषण अन्य राज्यों के मुकाबले सबसे कम है इसलिए भविष्य में इस क्षेत्र में पर्यावरण पर्यटन का विकास की पर्याप्त क्षमता है। उत्तराखंड में पर्यटन के सतत् विकास को ऊँचाइयाँ प्राप्त करने के लिए पारिस्थितिकी–पर्यटन एकीकृत योजना के माध्यम से विकास की जरूरत है। उत्तराखंड में तीर्थयात्रा और साहसिक पर्यटन का आयोजन जो कई सरकारी विभाग और अन्य संस्थानों द्वारा इस क्षेत्र में संचालित किया जाता रहा है या प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन वो सवाल यह उठता है कि पारिस्थितिकी–पर्यटन मॉडल विकसित करने के लिए क्या प्रयास किए जा रहे हैं? जिससे स्थानीय लोगों की आय को यथासंभव बढ़ाया जा सके। 'पहाड़ी क्षेत्रों से लोगों के पलायन को रोकने के लिए' पर्यावरणीय समस्याओं और पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ उन्हें प्राकृतिक के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। पर्यटन की स्थिति और दिशा को केवल राजस्व उत्पन्न करने पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए साथ ही स्थानीय समुदायों को पर्यावरण संरक्षण को प्रेरित करना होगा और रोजगार के अवसर भी पैदा करने होंगे। यह तभी संभव हो सकता है जब स्थानीय समुदाय सामाजिक–आर्थिक उन्नति करें और स्थानीय कला, संगीत, हथकरघा, पारंपरिक आवास और सामुदायिक स्तर पर ऐसे कई प्रयास बनाया जा रहा है और पर्यटन को इतना बढ़ावा दिया जा रहा है। जिनमें होम स्टे, ग्राम पर्यटन और ग्राम पर्यटन से ट्रेकिंग इस प्रकार समझ सकते हैं कि वे परिस्थितियाँ जिनमें पर्यटक प्रकृति के साथ धुन में रहना सीख सकेंगे

और स्थानीय लोगों के लिए आजीविका का स्रोत बन जाएगा और स्थानीय लोग पर्यावरण के साथ पर्यटन को बढ़ावा देंगे और प्राकृतिक संरक्षण भी। उत्तराखण्ड एक पवित्र निवास है यहाँ स्थित चार–धाम पवित्र हिंदू मंदिरों में से एक है जो बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री जैसे प्रसिद्ध मंदिर आध्यात्मिक महिमा को बढ़ाते हैं। इस प्रकार उत्तराखंड भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का सही प्रतिनिधित्व करता है जिसमें मुख्यतः धार्मिक, सांस्कृतिक एवं रीति–रिवाजों का एक संगम, वन्यजीव विरासत की समृद्धता, पहाड़, शांति व शुद्ध वातावरण हैं। पर्यटन के लिए इस राज्य में बहुत अवसर हैं, यह प्रकृति, वन्यजीव, साहसिक या तीर्थाटन हो, अगर साहसी हैं और कठिन चुनौतियों की तरह, आप उच्च और कम ऊँचाई पर ट्रेकिंग, नदी राफ्टिंग, पैरा ग्लाइडिंग, ग्लाइडिंग, पर्वतारोहण, स्कीइंग और कई अन्य गतिविधियों के लिए जा सकते हैं। प्रमुख स्थलों में हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मसूरी, अल्मोंड़ा, केदारनाथ, बदरीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान, नैनीताल, रानीखेत और पिथौरागढ़ हैं।

हम जो वस्त्र धारण करते हैं, उनका भी अपना लोक विज्ञान है। दरअसल, वस्त्र किसी भी क्षेत्र और समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक के साथ आर्थिक पृष्ठभूमि को परिलक्षित करते हैं। वस्त्रों से इतिहास के सूक्ष्म पहलुओं और संबंधित क्षेत्र के भौगोलिक परिवेश एवं मानवीय संस्कृति का आकलन भी होता है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखंडी पहनावे के इसी पारंपरिक स्वरूप से परिचय करा रहे हैं, साथ ही यह बताने का प्रयास भी किया गया है कि हिमालयी क्षेत्र की पारंपरिक बारहनाजा पद्धति का जीवन में क्या महत्व है और क्यों इसे संपूर्ण कृषि संस्कृति का दर्जा दिया गया है। हर समाज की तरह उत्तराखंड का पहनावा (वस्त्र विन्यास) भी यहाँ की प्राचीन परंपराओं, लोक विश्वास, लोक जीवन, रीति–रिवाज, जलवायु, भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, व्यवसाय, शिक्षा व्यवस्था आदि को प्रतिबिंब करता है। पहनावा किसी भी पहचान का प्रथम साक्ष्य है। प्रथम या प्रत्यक्ष जो दृष्टि पड़ते ही दर्शा देता है कि 'हम कौन हैं?' यही नहीं, प्रत्येक वर्ग, पात्र या चरित्र का आकलन भी वस्त्राभूषण या वेशभूषा से ही होता है। पहनावा न केवल विकास के क्रम को दर्शाता है, बल्कि यह इतिहास के सूक्ष्म पहलुओं के आकलन में भी सहायक है। आदिवासी जनजीवन से आधुनिक जनजीवन में निर्वस्त्र स्थिति से फैशन डिजाइन तक की स्थिति तक क्रमागत विकास देखने को मिलता है। इस हिसाब से देखें तो उत्तराखंड की वस्त्र विन्यास परंपरा आदिम युग से ही आरंभ हो जाती है।

## उद्देश्य एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी–पर्यटन में अंर्तसंबंध एक स्थायी पारिस्थितिकी–टूरिज्म पर केंद्रित है। आध्यात्मिक, ग्रामीण, सांस्कृतिक विविधता, पारिस्थितिकी संरक्षण, साहसिक और समुदाय आधारित के साथ एकीकृत एवं सतत् पर्यटन की ओर बढ़ावा देना है। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य स्थानीय संस्कृति की विविधता का प्रयोग से समुदायों में रोजगार के अवसर पैदा करना, उत्तराखंड में दूरदराज के इलाकों में गरीबी को कम करने और पलायन कम करने तथा पर्यावरणीय वातावरण के संरक्षण हेतु नये आयामों के विकास हेतु कदम उठाने पर बल देता है। उत्तराखंड पूरे भारत में और दुनिया भर में एक शानदार प्राकृतिक व सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है, सुंदरता के साथ–साथ हिंदुओं और अन्य धर्मों के तीर्थस्थल भी यहाँ सांस्कृतिक विविधता को बढ़ाते है। उत्तराखंड में स्थित मध्य हिमालय पर्वत श्रंखलायें जो अपनी महानता के लिए जाना जाता है, सतत् वाहिनी नदियाँ और कई दृष्टिकोण रखने वाले पर्यटन स्थल, एक सुंदर राज्य तो बनाते ही है साथ ही गरीबी, बेरोजगारी की वास्तविकता, परिणामी भेदभाव और बाहर पलायन एक पीड़ादायक तथ्य भी है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ताओं द्वारा उत्तराखंड राज्य में सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी–पर्यटन में अंर्तसंबंध के अध्ययन करने के लिए द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए राज्य के विभिन्न कार्यालयी वेबसाइट, वार्षिक पत्र–पत्रिकाओं, उत्तराखंड राज्य में सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी–पर्यटन पर विभिन्न पुस्तकें एवं समाचार पत्रों इत्यादि की सहायता ली गई है।

## अध्ययन क्षेत्र स्थिति एवं विस्तार

भौगोलिक रूप से अध्ययन क्षेत्र भारत के उत्तरी भाग में मध्य हिमालय क्षेत्र में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र 28°7′ उत्तर से 31°4′ उत्तर अक्षांश और 77°7′ पूर्व से 81°1′ पूर्व देशांतर के बीच स्थित है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 53483 किमी2 है। कुल क्षेत्रफल का 86.07 प्रतिशत पहाड़ी क्षेत्र है और 13.93 प्रतिशत मैदानी क्षेत्र है (Kumar etAl., 2019)। उत्तराखंड भारत का एक अंतरराष्ट्रीय सीमावर्ती राज्य है। अध्ययन क्षेत्र उत्तर में चीन, पूर्व में नेपाल, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में मैदानी जिलों से उत्तर प्रदेश की सीमा बनाता है। अध्ययन क्षेत्र को दो कमिश्नरी, गढ़वाल कमिश्नरी (07 जिले– देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग

और चमोली) और कुमाऊँ कमिश्नरी (06 जिले– अल्मोंड़ा, नैनीताल, उधमसिंह नगर, बागेश्वर, चंपावत और पिथौरागढ़) में बांटा गया है (Maithani etAl., 2015)। यह 2011 की जनगणना के अनुसार 1,00,86,292 जनसंख्या है जो 19.17 प्रतिशत की वृद्धि दर पिछले जनगणना से अधिक था। पुरुष महिला अनुपात 1000:963 है और जनसंख्या का घनत्व 189 वर्ग किमी0 प्रति है। उत्तराखंड की साक्षरता दर 79.63 प्रतिशत है।

## पर्यटन के प्रकार एवं स्थिति

उत्तर भारतीय क्षेत्र में एक हिमालयी राज्य उत्तराखंड है जिसमें पर्यटन का दायरा बहुत बड़ा है। राज्य में कई प्रमुख हिंदू तीर्थ स्थल लोकप्रिय रूप से देवभूमि (देवताओं की भूमि) के रूप में जाना जाता है (Alhabash etAl., 2012)। इसलिए, इसके पर्यटन का एक बड़ा हिस्सा राज्य में पर्यटन का धार्मिक व सांस्कृतिक रूप है। धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन का प्रमुख आकर्षण चार धाम तीर्थ है और पंच केदार (केदारनाथ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमहेश्वर, कल्पेश्वर), पंच प्रयाग (देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग, विष्णुप्रयाग)। दुनिया प्रसिद्ध कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान और विश्व विरासत फूलों की घाटी और नंदा देवी जैवमंडल भी उत्तराखंड में स्थित है जो प्रकृति प्रेमी और शोधकर्ता का प्रमुख आकर्षण केन्द्र है (GardinerAnd Kwek (2017))

वर्तमान अध्ययन पर्यटन परिपथों का निर्माण, पारिस्थितिकी–पर्यटन को बढ़ावा देना, ग्राम पर्यटन और समस्याओं का पता लगाना और इसके लिए एक उपयुक्त योजना का सुझाव देना है। उत्तराखंड में सतत् पर्यटन विकास और प्रचार करें और इस तरह के एक स्थानीय रिवाज और पारंपरिक खाद्य पदार्थ, व्यंजन, संस्कृति, लोकगीत, हस्तशिल्प, वास्तुकला विरासत और आदि की शुरुआत करें जो स्थानीय समुदायों में उच्च मूल्य हैं लेकिन अभी तक उचित सिफारिश निर्धारित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाये गये है। उत्तराखंड पर्यटन में तीर्थ स्थान, साहसिक पर्यटन, हनीमून गंतव्य, सांस्कृतिक पर्यटन और सभी समुदाय आधारित पर्यटन के बाद भी प्रकृति के क्षेत्र में पर्यटन स्थलों के विकास की एक उच्च संभावना है। राज्य में पर्यटन से आय का हिस्सा और योगदान सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग आधा (49.6 प्रतिशत)। उत्तराखंड के पूरे पहाड़ी क्षेत्र में रोमांच के लिए विविधता के साथ पर्यटन के आयाम है, जैसे– जल क्रीड़ा, कई प्रकार के स्थानीय खेल, अन्य गतिविधियाँ, प्राकृतिक पर्यटन, सतत् पर्यटन, तीर्थ पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, प्राकृतिक क्षेत्र में ट्रेकिंग और आदि। कुछ महत्वपूर्ण हिल स्टेशन हैं

मसूरी, नैनीताल, उत्तरकाशी, न्यू टिहरी रानीखेत, कौसानी, चंबा और आदि जहाँ पर्यटक साल भर में सभी यात्रा कर सकते हैं। कुछ पर्यटन स्थल जो साल भर की यात्रा के लिए प्रसिद्ध हैं, राज्य के पर्यटन स्थलों की सूची तालिका–1 में दी गई है।

**तालिका-1: उत्तराखंड राज्य के विख्यात प्रमुख पर्यटन स्थलों की सूची**

| क्र. | पर्यटन स्टेशन | गंतव्य स्थान |
|---|---|---|
| 1 | पहाड़ी स्टेशन | अल्मोंड़ा, औली, भीमताल, मसूरी, चकराता, चंबा, चोपता, धनोल्टी, द्वारहाट, कौसानी, खिर्सू, डोडीताल, दयारा बुग्याल, हरसिल, पौड़ी, नई टिहरी, रानीखेत, सत्तल, रामगढ़, उत्तरकाशी, नरेंद्रनगर, नैनीताल, पिथौरागढ़ इत्यादि। |
| 2 | वन्य जीवन (अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान) | कॉर्बेट नेशनल पार्क, गंगोत्री नेशनल पार्क, राजाजी, बिनसर, अस्कोट, नंदा देवी, फूलों की घाटी इत्यादि। |
| 3 | तीर्थ स्टेशन | बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री, देवप्रयाग, तुंगनाथ, आदिबद्री, कैलास मानसरोवर, सुरकंडा, चंद्रबदनी, ऋषिकेश, हरिद्वार जोशीमठ, कर्णप्रयाग, हेमकुंड साहिब गौरीकुंड, गंगोलीहाट, गंगनानी इत्यादि। |
| 4 | साहसिक स्टेशन | ऋषिकेश, कौडियाला, शिवपुरी, देवप्रयाग, नई टिहरी, टेहरी डैम, औली, बेदनी बुग्याल, गोविन्द घाट, हनुमान चट्टी, हर की दून, डोरिअ ताल, पिंडारी ग्लेशियर इत्यादि। |

(स्रोतः Parihar, 2022)

यहाँ के हरे भरे जंगल हैं देवदार, ओक, रोडोडेंड्रोन, जुनिपर और बर्च के पेड़ों के साथ प्रचुर मात्रा में पर्यावरण और वन्यजीव पर्यटन के लिए स्थान है (Hasan etAl. 2020)। Holtzman etAl, 2020 के अनुसार, पर्यटन, आतिथ्य और व्यापार के लिए कुल मानव संसाधन की आवश्यकता 2012 में क्षेत्र लगभग 0.30 मिलियन, 2017 में बढ़कर 0.45 मिलियन और 2022 में 0.69 मिलियन हो गया और जनशक्ति की आवश्यकता अगले 10 वर्षों के दौरान 0.39 मिलियन (18.9 प्रतिशत) बढ़ने के आसाढ़ है साथ ही देहरादून, हरिद्वार

और नैनीताल अधिकांश मांग उत्पन्न करेगा जबकि अन्य पहाड़ी जिले भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे बशर्ते राज्य सरकार बुनियादी ढांचे के विकास का समर्थन करे/जारी रखे और इन जिलों में व्यापार गतिविधियों और पर्यटन के विकास पर निरंतर ध्यान बनाए रखे।

## सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी-पर्यटन में अंर्तसंबंध

संस्कृति में समय, स्थान, संभावनाएं, जरूरतें, वस्तुओं की कमी, प्रौद्योगिकी, गंतव्य और कार्यक्षेत्र मायने रखता है। प्रस्तुत लेख को एक सवाल से शुरू करते हैंः संस्कृति, पर्यावरण और पारिस्थितिकी से कैसे जुड़ी है? परिणाम, काम के आधार पर यह मानते हैं कि पारिस्थितिकी–पर्यटन लोगों और समाजों के बीच आपसी समझ और सम्मान में योगदान को परिभाषित करता है। व्यक्तिगत और सामूहिक पूर्ति के लिए एक वाहन, मानव जाति की सांस्कृतिक विरासत का एक उपयोगकर्ता और इसकी वृद्धि में योगदानकर्ता, पर्यटन विकास में हितधारकों के मेजबान देशों और समुदायों के दायित्वों के लिए एक लाभकारी गतिविधि।

***''द इंटरनेशनल इकोटूरिज्म सोसाइटी''*** का कहना है कि पारिस्थितिकी–पर्यटन गतिविधियों में निम्नलिखित सिद्धांतों की पूर्ति शामिल है, कुछ का काम–

- पर्यावरणीय नकारात्मक प्रभाव को कम करना, क्षेत्रीय संस्कृति और पर्यावरण की रक्षा करना।
- आगंतुकों और होटल मालिकों को सकारात्मक अनुभव प्रदान करें।
- स्थानीय निवासियों के आत्म–सम्मान को बढ़ाकर उन्हें आर्थिक रूप से लाभान्वित करना।
- मानवाधिकारों और श्रम समझौतों का समर्थन करें।
- कार्य से मुख्य उम्मीद कुछ प्रस्ताव हैं जो विरासत संरक्षण और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण और उत्तेजक वातावरण बनाने और स्थानीय समुदाय को शैक्षिक लाभ प्रदान करने के लिए हैं।

विश्व के कई देशों की विभिन्न अर्थव्यवस्थाएं और उद्योग पर्यटन पर निर्भर हैं, जो दुनिया के प्रवाह को निर्देशित कर सकते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन, कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में देश की जीवन शैली से संबंधित है, जैसे कि उनकी कला, वास्तुकला, अनुष्ठान, त्यौहार और मूल्य जो देश की संस्कृति को व्यक्त करने में मदद करते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन में आगंतुक का शामिल होना या

किसी स्थान की अनूठी विरासत और विशेष चरित्र के संपक्र में आना शामिल है। आगंतुक को जगह के मूल्यों, भाषाओं, जीवन शैली और रीति–रिवाजों के बारे में अधिक जागरूकता से अवगत कराया जाता है। पर्यटन के माध्यम से संस्कृतियों को एक साथ जोड़ने की संभावना है, दुनिया के निवासियों के बीच सामंजस्य बनाने में सहायता करता है। यह मानते हुए कि संस्कृति और विरासत पर्यटकों को आकर्षित करने में दो महत्वपूर्ण कारक हैं, वे विकास और अर्थव्यवस्था में सुधार के संसाधन के रूप में अपना कद बनाए रखते हैं।

कहा जा रहा है, विरासत और संस्कृति दोनों दो महत्वपूर्ण संपत्ति हैं जिन्हें बनाए रखा जाना चाहिए, संरक्षित किया जाना चाहिए और बढ़ाया जाना चाहिए। जीवन की गुणवत्ता में सुधार, रहने की स्थिति और गरीबी को कम करने से सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को और अधिक संरक्षित करने में मदद मिलेगी। ऐसी संपत्ति को मानवता की पहुँच के भीतर बनाना, पर्यटन के रूप में एक शक्तिशाली उपकरण के माध्यम से सभ्यताओं को संप्रेषित करना सांस्कृतिक पर्यटन विकास की स्थिरता माना जाता है। इस तरह के उद्देश्यों तक पहुँचने और बनाए रखने के लिए पर्यटन नीतियों और संरक्षण और संरक्षण नीतियों के नियमावली और कार्यान्वयन में उच्च मानकों की आवश्यकता होगी, जिसमें सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, बढ़ाने और सुधारने में समुदायों की भागीदारी शामिल है। नकारात्मक प्रभावों को कम करने और अधिक सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए समाज, पर्यावरण और पर्यटन के बीच संतुलन केवल सांस्कृतिक पर्यटन के महत्व और इसके चिरस्थायी सकारात्मक प्रभावों के बारे में जागरूकता बनाए रखने के माध्यम से रचनात्मकता और सांस्कृतिक विविधता के प्रसार के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। सांस्कृतिक सतत् पर्यटन (सीएसटी–2017) संस्कृति और पर्यटन के बीच जटिल संबंधों पर चर्चा करता है और कैसे योजनाकार, आक्रिटेक्ट और मुख्य कलाकार सांस्कृतिक पर्यटन के महत्व और भूमिका के सही परिप्रेक्ष्य को व्यक्त करने और फैलाने में मदद कर सकते हैं और इसे कैसे बनाए रख सकते हैं।

पर्यटन कुछ प्रकार के सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव पैदा कर सकता है या नहीं भी कर सकता है क्योंकि यह स्वाभाविक रूप से लोगों को एक संस्कृति और पृष्ठभूमि से अस्थायी रूप से दूसरों के साथ बातचीत करने के लिए प्राथमिकता लाने के बारे में है। इनमें भाषा, धार्मिक विश्वास, परंपराएं, रीति–रिवाज, जीवन शैली, व्यवहार पैटर्न जैसे पहलू शामिल हैं जिनमें वेशभूषा संहिता समय की समझ, बजट और अजनबियों के प्रति दृष्टिकोण भी अंतर्निहित

है। जब हम घरेलू पर्यटन मजबूत करते हैं तो ये अंतर मामूली से लेकर अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के मामले में महत्वपूर्ण तक हो सकते हैं। 'सामाजिक प्रभाव' वह शब्द है, जो पर्यटन स्थलों के स्थानीय निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में परिवर्तन का वर्णन करता है, जिसके केंद्र में पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के बीच बातचीत होती है। पर्यटकों की आगमन के कारण सम्बन्धित व्यक्तियों के परिवेश (वास्तुकला, कला, रीति–रिवाज, अनुष्ठान आदि) को प्रभावित करने वाले परिवर्तन सांस्कृतिक प्रभावों का निर्माण करते हैं।

## सांस्कृतिक विविधता

सांस्कृतिक विविधता उनके यौन अभिविन्यास, लिंग, पालन–पोषण, सामाजिक–आर्थिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण विभिन्न लोगों के जीवन के तरीके की समझ और स्वीकृति है, क्योंकि संस्कृति इतने सारे क्षेत्रों को समाहित करती है कि एक व्यक्ति क्या बनाता है, आतिथ्य उद्योग में अधिक सामंजस्यपूर्ण अनुभव के लिए इन अंतरों को पहचानना और उनका जश्न मनाना महत्वपूर्ण है। पर्यटन और आतिथ्य में कर्मचारियों के बीच सांस्कृतिक अंतर पर केंद्रित है, क्योंकि संस्कृतियों का प्रबंधन इस उद्योग का एक अविभाज्य और बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। हालाँकि, इसकी जटिलता में संस्कृति शब्द काफी भ्रमित करने वाला हो सकता है। संस्कृति की एक शब्दकोश परिभाषा में इतिहास, सामान्य लक्षण, भौगोलिक स्थिति, भाषा, धर्म, जाति, शिकार प्रथाओं, संगीत, कृषि आदि जैसे कई तत्व शामिल हैं। इससे संस्कृति और सांस्कृतिक अंतर को परिभाषित करना बहुत कठिन हो जाता है।

उत्तराखंड इतिहास के क्षेत्र का गौरवशाली अतीत गाती है, यहाँ महान सम्राटों और साम्राज्यों की मुख्य विशेषताओं के साथ इसकी उत्पत्ति और विकास का एक लंबा इतिहास है। उत्तराखंड यह विभिन्न धार्मिक स्थानों, भक्ति और तीर्थयात्रा की सबसे पवित्र और अनुकूल राज्य के रूप में माना जाता है ***"Dev Bhumi"*** या ***'परमेश्वर की भूमि'*** भी कहा जाता हैं। कुंभ मेला, दुनिया में सबसे बड़ा धार्मिक सभा माना जाता है, प्रमुख हिंदू तीर्थों में से एक है जो हरिद्वार में है। यह कुमाऊँ और गढ़वाल मण्डल के विभिन्न जातीय समूहों का एक विषम मिश्रण है। यहाँ के निवासी नृत्य क्षेत्र में जीवन और मानव अस्तित्व के साथ जुड़े रहे हैं, वे अनगिनत मानवीय भावनाओं के प्रदर्शन है। संगीत उत्तराखंड की सांस्कृतिक रूपों का एक अभिन्न हिस्सा है, लोक गीत के लोकप्रिय श्रेणियों बसंती, मंगलस, खुदेड़ और चौपाटी के शामिल। राज्य में स्थानीय शिल्प, लकड़ी पर नक्काशी काफी प्रमुख है और घी संक्रान्ति,

खतरुआ, फूल देई, हरेला, मेला, नंदा देवी मेला, आदि प्रमुख त्यौहार हैं। कुमाऊँनी और गढ़वाली भाषा दो मुख्य क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, लेकिन सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। कुमाऊँनी और गढ़वाली के पश्चिम और उत्तर में कुछ आदिवासी समुदायों में जौनसारी और शौका बोलियों को बोलने हेतु प्रयुक्त किया जाता हैं। दूसरी ओर, शहरी आबादी में ज्यादातर हिंदी, जो संस्कृत के साथ–साथ बोलती है उत्तराखंड के एक आधिकारिक भाषा है।

यहाँ के लोग प्रत्येक उत्सव व कृषि काल को बहुत उत्साह से बनाते है, जो यहाँ के लोगों को अन्य राज्यों से अलग करता है। यहाँ उत्सवों में लोग नाच–गा कर अपनी खुशी व सद्भाव का इजहार करते है। कुमाऊँ क्षेत्र का मुख्य नृत्य छलेरी है जो यहाँ प्रत्येक खुशी के मौके व शादी–ब्याह में किया जाता है। इसमें पुरूष, महिलाओं की पोशाक पहनकर नृत्य करते है। यह नृत्य कुमाऊँ क्षेत्र की संस्कृति को प्रदर्षित करता है। यहाँ के त्यौहार, मेले, रीति–रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान, नृत्य, गाने उत्तराखण्ड को बाकी की दुनिया की संस्कृति से अलग करते है। यहाँ के प्रसिद्व त्यौहारों में मकर संक्रान्ति, बसन्त पंचमी, हरेला, फूलदेई, वट सावित्री, घी–संक्रान्ति, गंगा दशहरा, धुधुती, भिटौली व अन्य है। भिटौले का त्यौहार भाई व बहन के प्रेम के तौर पर बनाया जाता है, इसमें भाई अपनी बहन को उपहार आदि भेंट करता है। यह त्यौहार चैत्र के महीने में मनाया जाता है, उसी प्रकार सावन आने पर हरेला का त्यौहार मनाया जाता है जो कि हरियाली का त्यौहार कहा जाता है। कुमाऊँ क्षेत्र में ऐंपण का भी बहुत महत्व है जो इस क्षेत्र के प्रत्येक घरों की दहलीज के बाहर देखने को मिल जायेगा। ऐंपण कई आकृतियों में बनाये जाते है जिसमें हसन चौकी, जनेउ चौकी, आचार्या चौकी, धूली अर्घ्य चौकी, दुर्गा चौकी, चामुंडा हस्ति चौकी आदि मुख्य है।

यहाँ विभिन्न जनजातियों में भिन्न–भिन्न प्रकार के वस्त्र एवं आभूषण धारण करने की परंपरा प्रचलन में रही है। मसलन कुमाऊँ व गढ़वाल की बोक्सा, थारू अथवा जौहारी जनजाति की महिलाएं पुलिया, पैजाम, झड़तार छाड़ जैसे आभूषण धारण करती हैं। पुलिया अन्य क्षेत्रों में पैरों की अंगुलियों में पहने जाने वाले आभूषण हैं, जिनका प्रचलित नाम बिच्छू है। गढ़वाल में इन्हें बिछुआ तो कुमाऊँ में बिछिया कहते हैं। इसके अलावा गले में पहनी जाने वाली सिक्कों की माला भी उत्तराखंड की सभी जनजातियों में प्रचलित है। गढ़वाल में इसे हमेल और कुमाऊँ में अठन्नीमाला, चवन्नीमाला, रुपैमाला, गुलुबंद, लाकेट, चर्यों, हंसुली, कंठीमाला, मूंगों की माला जैसे नामों से जाना जाता है। ***कुमाऊँ में पुरुष परिधानः*** धोती, पैजामा, सुराव, कोट, कुर्त्ता, भोटू,

कमीज मिरजै, टांक (साफा) टोपी आदि एवं ***गढ़वाल में पुरुष परिधानः*** धोती, चूड़ीदार पैजामा, कुर्ता, मिरजई, सफेद टोपी, पगड़ी, बास्कट, गुलबंद आदि। ***कुमाऊँ में स्त्री परिधानः*** घाघरा, लहंगा, आंगड़ी, खानू, चोली, धोती, पिछोड़ा आदि एवं ***गढ़वाल में स्त्री परिधानः*** आंगड़ी, गाती, धोती, पिछौड़ा आदि। ***कुमाऊँ में बच्चों के परिधानः*** झगुली, झगुल कोट, संतराथ आदि एवं ***गढ़वाल में बच्चों के परिधानः*** झगुली, घाघरा, कोट, चूड़ीदार पैजामा, संतराथ (संतराज) आदि। उत्तराखंड की महिलाएं पहले घाघरा, आंगड़ी और पुरुष चूड़ीदार पैजामा व कुर्ता पहनते थे। अब इनका स्थान पेटीकोट, ब्लाउज व साड़ी ने ले लिया है, जाड़ों में ऊनी कपड़ों का प्रयोग होता है। जबकि, विवाह आदि मांगलिक कार्यों के मौके पर कई क्षेत्रों में आज भी सनील का घाघरा पहनने का रिवाज है। इसके साथ ही गले में गलोबंद, चर्यो व जै माला, नाक में नथ, कानों में कर्णफूल व कुंडल, सिर में शीशफूल, हाथों में सोने–चांदी के पौंजी और पैरों में बिछुए, पायजब व पौंटा भी पहने जाते हैं। खासकर विवाहित महिलाओं की पहचान तो गले में चर्यो पहनने से ही होती है। ***पारंपरिक आभूषण सिर मेंः*** शीशफूल, मांगटीका, सुहाग बिंदी, बांदी (बंदी)। ***कानों मेंः*** मुर्खली (मुंदड़ा), कर्णफूल, तुग्यल, बाली, कुंडल, बुजनी (पुरुष कुंडल)। नाक मेंरू बुलाक, फुल्ली, नथ (नथुली)। ***गले मेंः*** कंठी माला, तिलहरी, चंद्रहार, गुलोबंद, हंसुली (सूत), लाकेट, चर्यो। ***हाथ मेंः*** पौंजी (पौंछी), कड़ा, अंगूठी, गोखले, धागुली। ***कमर मेंः*** करधनी, तगड़ी, कमर ज्योड़ी। ***पैरों मेंः*** झिंवरा, इमरती, पौंटा, पाजेब, अमीर तीतार, झांवर, बिछुवा। देश के अलग–अलग भागों मे शादी व अन्य उत्सवों में अलग–अलग परिधान व वस्त्र पहने जाते है उसी प्रकार उत्तराखण्ड के भी अपना पौराणिक वस्त्र है जो उत्तराखण्ड को दूसरे राज्यों से अलग बनाते है। इन वस्त्रों में सें सबसे प्रमुख है हंसुली, चरेऊ, चांदी की पायल, चांदी का गले का हार, धागुला, बिछुए, गुलबंद, पिछौरा आदि प्रमुख है जो यहाँ शादी, मेलो व त्यौहारो के दौरान पहना जाता है।

इसी तरह शिरोवस्त्र, पगड़ी, दुपट्टानुमा ओढ़नी आदि भी प्राचीन परंपराओं की ही देन हैं। सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्रों की कताई, बुनाई, सिलाई, कढ़ाई व जरीदार काम न केवल तकनीकी विकास के क्रम को दर्शाते हैं, बल्कि विभिन्न नमूनों व डिजाइनों के प्रति रुचि एवं सृजनात्मकता का परिचय भी देते हैं। इसी के चलते समय के साथ हथकरघा उद्योगों का विकास हुआ और वस्त्रों को उनकी विशेषताओं के आधार पर अनेक नामों से जाना जाता था, जैसे– भांग के रेशे से निर्मित वस्त्र भंगोला, भेड़ आदि जानवरों की ऊन से निर्मित वस्त्र ऊनी व कपास के रेशों से निर्मित वस्त्र सूती कहलाते थे।

जिस तरह उत्तराखंड मुख्य रूप से दो हिस्सों गढ़वाल और कुमाऊँ में बंटा है, ठीक उसी तरह से उत्तराखंडी नथ भी दो प्रकार की होती है। इसमें भी टिहरी की नथ का कोई सानी नहीं। माना जाता है कि इस नथ का इतिहास राजशाही के दौर से शुरू होता है। तब राज परिवार की महिलाएं सोने की नथ पहना करती थीं। ऐसी मान्यता रही है कि जो परिवार जितना संपन्न होगा, वहाँ नथ भी उतनी ही भारी और बड़ी होगी। धन–धान्य की वृद्धि के साथ इसका आकार भी बढ़ता जाता था। हालांकि, बदलते दौर में युवतियों की पसंद भी बदली और भारी नथ की जगह स्टाइलिश एवं छोटी नथों ने ले ली। जबकि, दो दशक पूर्व तक नथ का वजन तीन से पांच या छह तोले तक भी हुआ करता था। इस नथ की गोलाई भी 35 से 40 सेमी तक रहती थी। टिहरी की नथ का क्रेज न सिर्फ पहाड़ों में है, बल्कि पारंपरिक गहनों के प्रेमी दूर–दूर से उत्तराखंड आकर अपनी बेटियों के लिए यह पारंपरिक नथ बनवाकर ले जाते हैं।

देश के प्रत्येक राज्य की अपनी कुछ खास परम्परायें होती है जिन्हे वो अन्य राज्यों से अलग बनाते है। देश के अलग–अलग भागों में शादी व अन्य अवसरों पर विभिन्न प्रकार का नृत्य व संगीत होता है। उसी प्रकार उत्तराखण्ड का भी अपना नृत्य व संगीत है जो उत्तराखण्ड को दूसरे राज्यों से अलग बनाता है। यहाँ शादी, पूजा, मेलों में अलग–अलग प्रकार के नृत्य किये जाते है जो कि ***बराडा नटी, लंगवीर नृत्य, पांडव नृत्य, बाजुबंद नृत्य, रमोला नृत्य, छपेली नृत्य, छांछरी नृत्य, जोहरा नृत्य, छोलिया नृत्य, जैंठा व जडडा*** मुख्य नृत्य है।

उत्तराखंड ने सदियों से लोक संस्कृति, लोक कालाओं, लोक गाथाओं को संजोकर रखा है। विश्व प्रसिद्ध नौटी की नंदाराजात हो या फिर देवीधुरा का बगवाल युद्ध, गुप्तकाशी के जाख देवता का जलते अंगारों पर हैरतअंगेज नृत्य हो या फिर जौनसार का बिस्सू मेला। ये सभी देवभूमि की लोकसंस्कृति की झलक दिखलाती है। उत्तराखंड में रामायण, महाभारत की सैकड़ों विधाएं मौजूद हैं, जिसमें से कई विधाएं विलुप्ती की कगार पर हैं। परंतु कई लोगों के अथक प्रयास और दृढ़ संकल्प, निश्चय से इनके संरक्षण और विकास के लिए अभूतपूर्व कार्य कर इस लोक संस्कृति को बचाने के लिए अहम भूमिका निभाई है। जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी लोगों और श्रद्धालुओं को यहाँ की लोकसंस्कृति के दर्शन कराते हैं, साथ ही वर्षों पुरानी सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने का प्रयास भी करते है। ऐसी ही एक लोक संस्कृति है रम्माण जो चमोली के पैनखण्डा से यूनेस्को के विश्व सांस्कृतिक धरोहर बनने में रम्माण ने लोक संस्कृति की अनूठी छटा पेश की है। जिसने देवभूमि को हर बार गौरवान्वित

होने का अवसर दिया है। रम्माण का इतिहास लगभग 500 वर्षों से भी पुराना है। जब यहाँ हिन्दू धर्म का प्रभाव समाप्ति पर था तो आदि गुरु शंकराचार्य ओर से हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म के लिए पूरे देश में चार पीठों की स्थापना की गई, साथ ही ज्योर्तिमठ (जोशीमठ) के आस–पास के इलाकों में हिन्दू धर्म के प्रति लोगों को पुनः जागृत करने के लिए अपने शिष्यों को हिन्दू देवी–देवताओं के मुखौटे पहनाकर रामायण, महाभारत के कुछ अंशों को मुखौटा नृत्य के माध्यम से गाँव–गाँव में भेजा गया ताकि लोक हिन्दू धर्म को पुनः अपना सकें। शंकराचार्य के शिष्यों की ओर से कई सालों तक मुखौटे पहनकर इन गाँवों में नृत्यों का आयोजन किया जाता रहा, जो बाद में यहाँ के समाज का अभिन्न अंग बनकर रह गई और आज विश्व धरोहर बन चुकी है। पैनखण्डा (जोशीमठ) के सलङू–डूंग्रा गाँव में रम्माण का आयोजन प्रतिवर्ष बैशाख माह में किया जाता है। एक पखवाड़े तक चलने वाली मुखौटा शैली की यह लोक संस्कृति आज शोध का विषय बन गई है। पांच सौ वर्ष से चली आ रही इस धार्मिक विरासत में राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान के पात्रों की ओर से नृत्य शैली में रामकथा की प्रस्तुति दी जाती है। जिसमें 18 मुखौटे 18 ताल, 12 ढोल, 12 दमाऊं, 8 भंकोरे प्रयोग में लाये जाते हैं। इसके अलावा राम जन्म, वनगमन, स्वर्ण मृग वध, सीता हरण, लंका दहन का मंचन ढोलों की थापों पर किया जाता है। जिसमें बण्यां–बण्यांण, कुरू जोगी तथा माल–मल्ल नृत्य के विशेष चरित्र होते हैं जो लोगों को खासे हंसाते हैं, साथ ही जंगली जीवों के आक्रमण का मनमोहक चित्रण म्योर–मुरैण नृत्य नाटिका भी होती है।

**बण्यां-बण्यांण नृत्य-** इसके बारे में कहा जाता है कि ये तिब्बत के व्यापारी थे जो व्यापार करने गाँवों में आते थे, एक बार चोरों ने इनका सब कुछ लूट लिया जिसे इस नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

**म्योर-मुरैण नृत्य-** पहाड़ों में जंगलों में लकड़ी और घास लाने के समय जंगली जानवरों की ओर से आक्रमण किया जात है, जिसका चित्रण म्योर–मुरैण नृत्य में किया जाता है।

**माल-मल्ल नृत्य-** 1804–14 के समय गोरखा काल में स्थानीय लोगों और गोरखाओं के मध्य हुए युद्ध का चित्रण इस नृत्य में किया जाता है।

**कुरू-जोगी हास्य पात्र-** जो अपने पूरे शरीर पर कुरू (विशेष प्रकार का घास चिपकने वाला) लगाकर लोगों के मध्य जाता है। कुरू चिपकने के भय से लोग इधर–उधर भागते हैं, कुरू जोगी (साधु) अपने शरीर के कुरू को निकालकर लोगों पर फेंकता है अर्थात कुल मिलाकर रम्माण में संस्कृति,

इतिहास, जीवनशैली की अनूठी झलक देखने को मिलती है। रम्माण के अंत में भूम्याल देवता प्रकट होते हैं और समस्त गाँववासी भूम्याल को एक परिवार विशेष के घर विदाई देने पहुँचते हैं, जहाँ पूरे सालभर उसी परिवार द्वारा भूम्याल देवता की पूजा–अर्चना की जाती है।

उत्तराखंड अपने मंदिरों, तालों, ग्लेशियरों, पर्वतों के अलावा अपने सुपाच्य भोजन के लिए भी प्रसिद्द है। यहाँ पर गढ़वाल व कुमाऊँ में अलग–अलग किस्म के स्वास्थ्य बर्धक विभिन्न स्वाद व सुगंध वाले भोजन मिलते है, जो पर्यटकों को बहुत पसंद आती है जिसे खाने के बाद पर्यटक आजीवन याद रखते है। यहाँ के भोजन मे *काले* ***भट्ट की भट्टी, दाल बड़े, खीरे का रायता, आलू टमाटर का झोली, गहत का पराठा, झंगोरा की खीर, सिंगोरी, अरसा, गुलगुला, मंडुआ की रोटी, फाड़ा, काफूली, फानू, बड़ी, चौंसू, कंडाली का साग, टटवानी, अरसा, गढ़वाल का फनाह, उरद दाल के पकोड़े भांग की चटनी, आलू के गुटके, डुबुक, भट्ट की चुर्कानी, अरसा, तेंचुआनि, चौंसू, काफूली*** व कई अन्य प्रकार का व्यंजन उपलब्ध होता है।

सामान्य विविधता में ***''आयु, वर्ग, जातीयता, लिंग, शारीरिक और मानसिक क्षमता, नस्ल, यौन अभिविन्यास, आध्यात्मिक अभ्यास और सार्वजनिक सहायता की स्थिति के संबंध में लोगों के बीच मतभेदों को स्वीकारना, समझना, महत्व देना और जश्न मनाना''*** के रूप में परिभाषित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, सांस्कृतिक पर्यटन अनिवार्य रूप से सांस्कृतिक प्रेरणाओं के लिए व्यक्तियों की आवाजाही है, जैसे अध्ययन पर्यटन, प्रदर्शन कला और सांस्कृतिक पर्यटन, त्योहारों और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की यात्रा, स्थलों और स्मारकों की यात्रा, प्रकृति का अध्ययन करने के लिए यात्रा, लोकगीत या कला और तीर्थयात्रा।

## पारिस्थितिकी-पर्यटन

Havva, J.M.And Hunt, J. (1998) का तक्र है कि बढ़ती दिलचस्पी पारिस्थितिक पर्यटन में बड़े पैमाने पर पर्यटकों के नकारात्मक प्रभावों का परिणाम है जो पर्यावरण पर था। प्रकृति आधारित पर्यटन, स्थायी पर्यटन, वैकल्पिक पर्यटन, हरित पर्यटन, जिम्मेदार पर्यटन, सॉफ्ट पर्यटन, पारिस्थितिकी–पर्यटन, ग्राम पर्यटन और होम स्टे का उपयोग अक्सर इस लाइन में किया जाता है। पर्यटन में संसाधन का सामान्य विकास के साथ वित्तीय कमाई प्राप्त करते है। सतत् पर्यटन एक अवधारणा है जो द्रव्यमान से जुड़े पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक नुकसान को पर्यटन से दूर करने की कोशिश करती है। पर्यटन

के केंद्रों का परिदृश्य अक्सर अपरिवर्तनीय रूप से अवकाश में बदल जाते हैं क्षेत्रों, स्थानीय संस्कृति का अक्सर व्यावसायीकरण किया जाता है, अपराध दर में वृद्धि होती है और रोजगार की तलाश में युवा अपने गाँव छोड़ देते हैं। यह प्राकृतिक क्षेत्रों के लिए जिम्मेदार यात्रा है जो पर्यावरण और स्थानीय लोगों की भलाई को बनाए रखता है और संरक्षित करता है। पारिस्थितिक पर्यटन जैव विविधता के लिए एक संरक्षण संभावित प्रभावी रणनीति है। पारिस्थितिकी–पर्यटन का प्रमोशन हमारे प्रयोगों के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ***''मुँह बोली बहन''*** के रुप में हो सकता है।

## सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकी-पर्यटन के वैज़्वीकरण व स्थानीय विकास हेतु प्रयास

सांस्कृतिक पर्यटन को आकर्षित करने के लिए एक स्थानीय सर्वेक्षण के आधार पर योजना बनाना आपकी प्राथमिकता व भविष्य के कार्यक्रम को प्रभावित करने से अधिक कर सकता है। जो आपके क्षेत्र को एक सांस्कृतिक और कलात्मक गंतव्य के रूप में परिभाषित करने में भी मदद कर सकता है। पर्यटक/यात्री एक ***''प्रामाणिक अनुभव''*** की तलाश करते हैं, और आपके समुदाय की अपनी विशेष विशेषताएँ होती हैं जो इसे दूसरों से अलग करती हैं। इन सुविधाओं में आपकी संस्कृति, इतिहास, परंपराएं और हां, आपकी कला भी शामिल हैं। आपके समुदाय के पास बताने के लिए एक कहानी है, और उस कहानी को बताने का आकर्षक तरीका खोजना आगंतुकों को आकर्षित करने का एक तरीका है। यह आप पर निर्भर है, कि अपने क्षेत्र में अन्य संगठनों और व्यक्तियों के साथ जुड़ें या बस आगंतुकों के अपने संगठन पर प्रभाव को मापें। करने के लिए महत्वपूर्ण बात कहीं से शुरू करना है जिसमें आपको कोई पैसा खर्च करने की भी जरूरत नहीं है। इस बारे में सोचें कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं और अपने आप से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछें: ***''हम जो करते हैं उसे क्यों करते हैं?'' ''लोग मेरे वर्तमान प्रस्तावों का लाभ क्यों उठाते हैं?'' ''किस कारण से हमें वित्त पोषित किया जाता है?'' ''हम अपने समुदाय में क्या बदलाव लाने की कोशिश कर रहे हैं?''***

ये प्रश्न और उनके जैसे अन्य प्रश्न आपको यह तय करने में मदद कर सकते हैं कि क्या मापना है और इसे कैसे मापना है। एक बार आपके पास अपनी संख्याएं हो जाने के बाद, उनका विश्लेषण करें और देखें कि आप जो कर रहे हैं उसमें सुधार कैसे कर सकते हैं। एक बार जब आप कोई परिवर्तन लागू कर लेते हैं, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, यह देखने

के लिए फिर से मापें कि क्या आपने वह परिणाम प्राप्त किया है जो आप चाहते थे। पर्यटन के वैश्वीकरण व स्थानीय विकास हेतु कुछ मुख्य प्रयासों में से निम्नलिखित है–

**(क) बेहतर ग्राहक सेवा :** सांस्कृतिक रूप से विविध टीम होने से, आप विभिन्न प्रकार के मेहमानों की बेहतर ढंग से देखभाल कर सकते हैं, चाहे वे कहीं से भी आए हों। विपरीत–सांस्कृतिक संचार की सुविधा और पूरी तरह से यह समझना कि प्रत्येक अतिथि की जरूरतें और संवाद करने के तरीके इस बात पर निर्भर करते हैं कि वे कहाँ से आए हैं, आप प्रतियोगिता में बढ़त हासिल कर सकते हैं। इस बढ़त का एक उदाहरण तंग–बुनने वाले धार्मिक समुदायों के मामले में हो सकता है, जहाँ मुंह से बोलना एक मजबूत ताकत है। जब इन समुदायों में से किसी के पास आपके होटल में सकारात्मक अनुभव होता है, तो इसकी अधिक संभावना होती है कि वे इसे किसी मित्र को सुझाएंगे और बार–बार मेहमान बनेंगे।

**(ख) नया करने का मौका :** नवाचार विभिन्न दृष्टिकोणों से संचालित होता है और विविध पृष्ठभूमि के कर्मचारियों और मेहमानों के होने से, आप नवाचार को प्रेरित करने की अधिक संभावना रखते हैं। यह उन उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करके हो सकता है जो अन्य देशों में लोकप्रिय हैं जो अभी तक उस देश में नहीं पहुँचे हैं जहाँ आपका होटल स्थित है, या सुविधाओं को एकीकृत करके जो एक संस्कृति के लिए एक आवश्यकता नहीं हो सकती है लेकिन दूसरों के लिए है।

**(ग) बेहतर बाजार विभाजन :** विविध कर्मचारी होने से, आप अधिक विविध आबादी की सेवा भी कर सकते हैं। इसका मतलब है कि आपके पास एक बेहतर बाजार विभाजन हो सकता है क्योंकि आप उनके दर्द बिंदुओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और उनकी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं ताकि आप अपनी सेवाओं और उत्पादों को बाजार की मांगों के अनुकूल बनाकर व्यापक दर्शकों तक पहुँच सकें।

**(घ) हिमालयन कल्चरल सेंटर, संग्रहालय उत्तराखंड :** उत्तराखंड की समृद्ध लोकविरासत को सहेजने की दिशा में राज्य सरकार की कोशिशें अब धरातल पर नजर आने लगी हैं। इस कड़ी में देहरादून के *नींबूवाला (गढ़ीकैंट)* में संस्कृति विभाग का अत्याधुनिक हिमालयन कल्चरल सेंटर का भवन बनकर तैयार हो गया है। नेशनल बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कॉरपोरेशन *(एनबीसीसी)* ने इसे बनाया है। इस सेंटर में अत्याधुनिक ऑडिटोरियम, राज्य स्तरीय संग्रहालय, ओपन

थिएटर समेत अन्य सुविधाएं एक छत के नीचे उपलब्ध होंगी। संग्रहालय में राज्य की सभ्यता, संस्कृति से जुड़े मूर्त–अमूर्त प्रत्येक पहलू का समावेश होगा। साथ ही लोक कलाओं के संरक्षण में भी यह सेंटर महत्वपूर्ण भागीदारी निभाएगा। लोककलाओं के संरक्षण के साथ ही लोक संस्कृति के संवाहकों को उचित मंच प्रदान करने के मकसद से इस सांस्कृतिक केंद्र की पहल को धरातल पर उतारा गया है। सांस्कृतिक केंद्र में 2518 वर्गमीटर क्षेत्र पर 825 सीटर और विशेष रूप से दिव्यांगजनों के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त ऑडिटोरियम का निर्माण किया गया है। साथ ही 12203 वर्गमीटर क्षेत्र में राज्य स्तरीय संग्रहालय बनाया गया है। ऑडिटोरियम डिजिटल और अत्याधुनिक ध्वनि प्रणाली से लैस है साथ ही सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी यह आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। भवन में चार म्यूजियम हॉल, दो एक्जीबिशन गैलरी, मीटिंग हॉल, लाइब्रेरी भी है। ग्रीन बिल्डिंग कॉन्सेप्ट पर बने इस सांस्कृतिक केंद्र के भवन में *रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम* भी बनाया गया है। बताया गया कि इसमें ऑटोक्लीन सेफ्टीटैंक तकनीक का भी प्रयोग किया गया है। सांस्कृतिक केंद्र को बनाने वाले प्रोजेक्ट कांट्रेक्टर शलभ गर्ग के अनुसार सांस्कृतिक केंद्र परिसर में 300 से अधिक वाहनों के पार्किंग की भी व्यवस्था की गई है। हिमालयन कल्चरल सेंटर का संग्रहालय उत्तराखंड की सभ्यता, संस्कृति के संरक्षण में अहम भूमिका निभाएगा। संस्कृति विभाग की निदेशक बीना भट्ट जी का कहना हैं कि संग्रहालय में उत्तराखंडी खान–पान, वास्तुकला, रीति–रिवाज, आभूषण, पांडुलिपियां, स्मारकों की शैली, सिक्के, लोकवाद्य समेत राज्य की लोक संस्कृति से जुड़ी मूर्त–अमूर्त वस्तुएं प्रदर्शित की जाएंगी और यह सेंटर उत्तराखंड की लोकविरासत के संरक्षण में मील का पत्थर साबित होगा। इसके साथ ही पारंपरिक लोकविधाओं के संरक्षण के लिए इनका ब्यौरा संरक्षित *(डॉक्युमेंटेशन)* भी किया जाएगा, जिससे लोकविधाओं को महफूज रखा जा सके और यह ज्ञान भावी पीढ़ी तक पहुँच सके।

## विकास हेतु सुझाव एवं सम्भावनायें

अब सवाल यह उठता है कि उत्तराखंड के लोग क्यों पर्यटन को आर्थिकी का आधार नहीं बना पा रहे हैं? क्यों आज भी रोजगार हेतु पलायन ही मुख्य प्रक्रिया है? उत्तराखंड में पर्यटन रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार साल भर में यहाँ लाखों पर्यटक आते हैं लेकिन ज्यादातर हम देखते हैं भोजन मेनू, चीनी और दक्षिण भारतीय व्यंजन उपलब्ध है लेकिन उत्तराखंड के संदर्भ में पारंपरिक खाद्य पदार्थों को इसमें शामिल नहीं किया जाता है भोजन मेनू एकल पारंपरिक व्यंजन भी। इससे स्थानीय संस्कृति का आदान–प्रदान अधूरा रह जाता है

और किसानों को पारंपरिक खाद्य पदार्थों के उत्पादन से अधिक लाभ नहीं मिलता है और परिणाम पारंपरिक खाद्य पदार्थों की उत्पादकता में कमी है। आजीविका के स्रोत, कृषि क्षेत्र में युवाओं की रुचि की कमी के कारण ही नौकरी और अन्य खोजने के लिए उत्तराखंड से दूसरे राज्य में प्रवास करते रहे है जिससे यहाँ के गाँव के गाँव वीरान होते जा रहे है। फाइनेंशियल एक्सप्रेस के मुताबिक उत्तराखंड सरकार ने कहा राज्य के रोजगार कार्यालयों में मार्च 2022 तक 6,66,677 लोगों पंजीकृत हैं और उनमें से कई पेशेवर रूप से प्रशिक्षित हैं। आंकड़े बताते हैं कि बेरोजगारी, दूरस्थ/ग्रामीण क्षेत्रों में खराब शिक्षा प्रणाली, कम रहने की सुविधा, प्राकृतिक आपदा के कारण उत्तराखंड और अन्य राज्यों में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों के लिए पलायन और अधिक हो सकता है।

उत्तराखंड ज्यादातर चार धाम यात्रा और अन्य धार्मिक पर्यटन के लिए लोकप्रिय है और इस दौरान मानवीय गतिविधियों के अत्यधिक दबाव के कारण यात्रा में लगता है कूड़ा निस्तारण का अनुचित प्रबंधन, पार्किंग सुविधाओं का प्रबन्ध ना होना, कोई स्वस्थ और स्वच्छ भोजन उपलब्ध नहीं होना, कोई नियम और विनियम नहीं होता है। एकीकृत योजना के लिए महत्वपूर्ण सुझाव स्थिरता के माध्यम से पर्यटन का विकास और उत्तराखंड में पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव न्यूनतम करने हेतु सुझाव नीचे दिए गए हैं:

- परिवहन में पुरानी हालत की बसें, खराब और टेढ़ी–मेढ़ी सड़कें, आवास सुविधाएं, अभिगम्यता शॉपिंग और मॉल सुविधाएं, सेवा और सुरक्षा जैसेः खानपान, मनोरंजन, सुरक्षा, राज्य के बाहर से आयात के कारण लागत संबंधी अच्छा और अनुभवी पर्यटन संचालक।
- प्राकृतिक और प्राकृतिक सुंदरता में समग्र संतुष्टि अवलोकन के आधार पर और पर्यटकों से सुझाव।
- सड़कों और परिवहन सुविधाओं में सुधार कचरा निपटान का उचित प्रबंधन और निश्चित स्थान पर रखरखाव पर्यावरण।
- विशिष्ट और आध्यात्मिक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन का सर्किट प्लान के साथ मास्टर प्लान विकसित करना।
- पर्यटन को साथ–साथ बढ़ावा देने उनके अन्य घटक सामुदायिक आधार पर जोर।
- पर्यटक, पर्यटन बाजार को और अधिक समझें इसे ग्राहक की पसंद के अनुसार बाजार विकसित करें।

- स्थानीय लोगों को सरल तरीके से प्राकृतिक संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाएं।
- स्थानीय लोककथाओं को बढ़ावा देने और विलुप्त हुये या होने वालों को पुनःआरंभ करने पर जोर देने के साथ–साथ, पारंपरिक संगीत, गीत, नृत्य, वेशभूषा, भोजन के व्यंजन जिससे हम स्थानीय स्तर पर आजीविका संबंधी अवसर पैदा कर सकते हैं।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन ने स्थायी पर्यटन के रुप में मध्य हिमालयी राज्य उत्तराखंड में सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी–पर्यटन में अंर्तसंबंध तथा पारिस्थितिकी–पर्यटन की संभावना का संकेत दिया है। पर्यटकों के अवलोकन, हमारे और स्थानीय लोगों के दृष्टिकोण के अनुसार, उत्तराखंड में बहुत सारे कारक हैं, जो उत्तराखंड में पर्यटन को प्रभावित कर सकते हैं जिसमें बरसात के मौसम में भारी बारिश, भू–स्खलन, बादल फटना, और त्वरित बाढ़ व अन्य बुनियादी ढांचा सुविधाएं पर्यटन को प्रमुखतया प्रभावित करने वाले कारक हैं। प्राकृतिक संसाधनों के विकास और संरक्षण के साथ ही राज्य में वित्तीय और सामाजिक–आर्थिक उत्पादन बढ़ाने और समुदाय के लिए लाभ के उद्देश्य और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सामुदायिक पर्यटन का विकास करने को प्राथमिकता दी है। पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करने हेतु पर्यटन छोटे और न्यूनतम पैमाने पर वर्गीकृत और विकसित किया जाना चाहिए। सरकारी, गैर सरकारी, और स्थानीय अधिकारियों को छोटे पैमाने के आध्यात्मिक क्षेत्र विकसित करने चाहिए जिसमें प्राकृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक गंतव्य शामिल हों और कुछ के स्थानीय समुदाय द्वारा प्रबंधन और संचालन पर जोर देना है ताकि क्षेत्रीय स्तर पर नये नये रोजगार सृजित होते रहे और आर्थिक स्थिति कमजोर ना हों। अपने पारंपरिक खाद्य व्यंजनों को बढ़ावा देने और इन वस्तुओं को भोजन का मेन्यू पर जोड़ने के लिए स्थानीय लोगों, होटल व्यवसायियों, रेस्तरां और अन्य लोगों को इस पर जोर देना चाहिए। कालांतर में शिक्षा, तकनीकी क्षेत्र में उन्नति और आवागमन के साधनों का प्रभाव वस्त्राभूषणों पर भी पड़ा। नतीजा, धीरे–धीरे लोग परंपरागत पहनावे का त्याग करने लगे। हालांकि, अब एक बार फिर लोग परंपराओं के संरक्षण के प्रति गंभीर हुए हैं और पारंपरिक वस्त्रों को आधुनिक वस्त्रों में ढालकर पहनने का चलन अस्तित्व में आ रहा है।

गरीबी को दूर करने और साझा समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक पहचान का समावेश और मान्यता एक महत्वपूर्ण कारक है। सांस्कृतिक विविधता की रक्षा करना शहरों में आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय प्रवास दोनों के संदर्भ में सामाजिक संपक्र और सामंजस्य को बढ़ावा देने का एक तरीका है। संस्कृति सामाजिक और आर्थिक विकास के साथ–साथ प्रतिस्पर्धात्मकता का भी एक मंच है। ऐतिहासिक केंद्र शहरी समुदायों के विकास, सांस्कृतिक और रचनात्मक उद्योगों को बढ़ावा देने और स्थायी पर्यटन को बढ़ाने के लिए संपत्ति हैं। ये गतिविधियां आय पैदा करके और स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार पैदा करके गरीबी कम करने में योगदान करती हैं। शहरों की पहचान और स्थानीय संस्कृतियों की सुरक्षा, और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना, रहने की क्षमता सुनिश्चित करने और सामाजिक उपयोग के लिए हरित क्षेत्र बनाने के लिए प्राकृतिक विरासत के उत्थान सहित शहरों को जीवंत जीवन–स्थान बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। वैश्विक विरासत के रूप में विश्व विरासत स्थलों और सांस्कृतिक विरासत के सभी रूपों की सुरक्षा अंतरराष्ट्रीय शांति प्रयासों को बढ़ावा देने में मदद करती है।

## सन्दर्भ


1. परिहार, डी0,एस0 एवं दीपक (2020), पर्यटन में वैश्वीकरण के प्रयास व सकारात्मक प्रभावः जनपद अल्मोंड़ा के परिपेक्ष्य में, दृष्टिकोण, वर्ष–12, अंक–3, पृ0सं0– 1366–1375।
2. सिंह, हु0, कठायत, सी0एस0, परिहार, डी0एस0, सिंह, च0प्र0, सिंह, सु0 एवं कुमार, नी0 (2022), कुमाऊँ हिमालय के विकासखण्ड मुनस्यारी में पर्यटनः विकास एवं सम्भावनायें, International Journal of Multidescipilinary Educational Research, Vol. 11, Issue-10 (1), pp. 1-14. (http:èèijmer.in.doi.è2022è11.10.01)
3. सिंह, सु0 एवं परिहार, डी0,एस0 (2022), तहसील बागेश्वर में पर्यटन की समस्यायें और सम्भावनायेंः सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. के माध्यम से, International Journal ofApplied Research, Vol. 8 (3), pp. 360-374. (https:èèdoi.orgè10.22271èallresearch.2022.v8.i3e.9589)
4. Alhabash, S., Park, H.And Kononova,A. (2012): Exploring the motivations of facebook use in Taiwan. Cyberpsychol Behav Soc Network, Vol. 15, pp. 304-311.
5. Gardiner, S.And Kwek,A. (2017): Chinese participation inAdventure tourism. Journal of Travel Research, Vol. 56, pp. 496-506.
6. Hasan, M.K.,Abdullah, S.K.And Lew, T.Y. (2020):An integrated model for examining tourists revisits intention to beach destinations. Journal of QualityAssurance HospitalityAnd Tourism, Vol. 21, pp. 716-737.

7. Havva, J.M.And Hunt, J. (1998): Eco-tourists motivationalAnd demographic characteristics:A case of North Carolina travelers. Journal of Travel research, Vol. 36, pp. 57-61.

8. Holtzman, N.S., Vazire, S.And Mehl, M.R. (2010): Sounds likeA narcissist: behavioral manifestations of narcissism in everyday life. Journal of Research in Personality, Vol. 44, pp. 478-484.

9. Kumar K., TiwariA., Mukherjee S.,Agnihotri V.And Verma R.K. (2019): Technical report: waterAtA glance. Uttarakhand, GBPNIHESD,Almora, Uttarakhand, India, p. 6.

10. Maithani D.D., Prasad G.And Nautiyal R. (2015): Geography of Uttarakhand. Sharda Pustak Bhawan,Allahabad, pp. 1-14.

11. Mowforth, M.And Munt, I. (2015): TourismAnd sustainability: development, globalisationAnd new tourism in the Third World (4th Edition). Routledge Publication, pp. 10-200.

12. Parihar, D.S., Rana, K.S., Singh, M., Vishwakarma,A.And Deepak (2020): Study of tourismAnd scope of tourism development in Uttarakhand:A case study in district Pithoragarh. Ikzks0 vrqy tks"kh ,oa eukst ik.Ms; (editors), mRrjk[k.M esa Ik;ZVu ds fofHkUu vk;ke% volj ,oa pqukSfr;kaA txnEck ifCyf"kax dEiuh] ubZ fnYyh] i`0la0& 143&151A

13. Parihar, D.S. (2021): Study of suitable sites for tourism development in the Gori Ganga watershed Kumaun Himalaya by using Remote SensingAnd GIS.ACADEMICIA:An International Multidisciplinary Research Journal, Vol. 11, Issue- 12, pp. 321-328. (https:èèdoi.orgè10.595 8è2249-7137.2021.02695.1)

14. Parihar, Dr. D.S. (2022): Impacts, challengesAnd opportunities in tourism industries due to COVID-19 pandemic in Himalayan State Uttarakhand, India. Management ChallengesAnd Opportunities duringAndAfter Pandemic Situations (edit. Dr. N. KumarAndA. Gupta) in Vandana Publications, pp. 111-131.

15. Parihar, D.S.And Deepak (2022): Rural tourism development in Tehsil Munsyari, Kumaun Higher Himalaya. The Deccan Geographer (International Geography Jornal), Vol. 60, (Issue-1 & 2), pp. 61-69.

138

## सम्पादक परिचय

**डॉ प्रतिभा नेगी**, एम॰ए॰, पीएच॰डी॰ (अर्थशास्त्र)

वर्तमान में रा॰स्ना॰महाविद्यालय बेरीनाग पिथौरागढ, सोबन सिंह जीना अल्मोडा में पिछले 05 से अधिाक वर्षो से स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षाओं के अध्यापन कार्य में संलग्न है। उनके द्वारा लिखित/सम्पादित 02 पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 10 से अधिक शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुकी हैं। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में शोध संलग्न डॉ॰ नेगी द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भी अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं तथा एक सेमिनार का आयोजक सचिव के रूप में सफल आयोजन कर चुकी हैं। वर्तमान में भी विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं।

**डॉ॰ जितेन्द्र कुमार लोहनी**, एम॰ए॰, पी-एच॰डी॰, यू-सेट (अर्थशास्त्र), एडीसीएचएन, डीसीपीएम।

वर्तमान में अर्थशास्त्र विभाग, डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल में पिछले 12 से अधिक वर्षों से स्नातक, स्नातकोत्तर एवं प्री॰ पी-एच॰डी॰ कक्षाओं के अध्यापन कार्य में संलग्न हैं। उनके द्वारा लिखित/सम्पादित 05 पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 30 से अधिक शोध-पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तथा यूजीसी केयर लिस्टेड जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं और लगभग 10 से अधिक पुस्तकों के चैप्टर के रूप में अपना योगदान दे चुके हैं। क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में शोध संलग्न डॉ॰ लोहनी द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भी अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये हैं तथा एक वेबिनार का आयोजन सचिव के रूप में सफल आयोजन कर चुके हैं। वर्तमान में एक प्रतिष्ठित नेशनल जर्नल के रिव्यूअर के रूप में जुड़े डॉ॰ लोहनी को वर्ष 2019 में 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेंस' तथा 'सर्टिफिकेट ऑफ एप्रीशियेशन' तथा वर्ष 2022 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल द्वारा 'प्रो॰ वाई॰पी॰एस॰ पांगती रिसर्च अवार्ड 2021' से भी सम्मानित किया जा चुका है।

₹ 1195/-

**NB Publications**
SF-1, 2nd Floor, A-5/3, DLF Ankur Vihar
Loni Ghaziabad-201 102 U.P. (India)
E-mail: nbpublications26@gmail.com
Mob.: 9999829572, 8700829963

ISBN 978-93-91550-23-3

उत्तराखण्ड : संस्कृति एवं पर्यटन • डॉ॰ प्रतिभा नेगी
डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी

# उत्तराखण्ड
## संस्कृति एवं पर्यटन

**डॉ॰ प्रतिभा नेगी**
**डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी**

# उत्तराखण्ड
## संस्कृति एवं पर्यटन

सम्पादक

**डॉ. प्रतिभा नेगी**

**डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी**

**N. B. Publications**

Ghaziabad - 201102 (India)

Published By:
**N. B. Publications**
SF-1, A-5/3, D.L.F., Ankur Vihar,
Loni, Ghaziabad-201102, U.P. (India)
Phones : 8700829963, 9999829572
E-mail : nbpublications26@gmail.com

Sale Distributor By:
**KUNAL BOOKS**
4648/21, 1st Floor, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002.
Phones: 011-23275069, 9811043697
E-mail: kunalbooks@gmail.com
Website: www.kunalbooks.com

**उत्तराखण्ड : संस्कृति एवं पर्यटन**

© Editors
First Published : March 2023
ISBN: 978-93-91550-23-3

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

The opinions and views expressed are exclusively those of the authors and in no way the editors or the publisher is responsible for the same.

Published in India by N.B. Publications, and printed at **Trident Enterprises,** Noida, (U.P.)

# कथन

देवभूमि उत्तराखण्ड अपनी बहुआयामी संस्कृति के लिये वैश्विक स्तर पर अपना विशिष्ट स्थान रखती है। पूर्वकाल से ही प्रदेश में प्रचलित संस्कृति को वर्तमान में भी यहाँ के खान–पान, वेश–भूषा, आभूषणों, देवालयों, नौलों, मेले एवं यात्राओं, पर्वों आदि विभिन्न रूप में देखा जा सकता है। यह समृद्ध संस्कृति जहाँ राज्य को भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख आयाम के रूप में स्थापित करती है वहीं यह पर्यटकों के लिये भी सदैव से ही आकर्षण का केन्द्र रही है। प्रत्येक वर्ष घरेलू तथा अंर्तराष्ट्रीय पर्यटक देवभूमि में अपने उद्देश्य के अनुसार पर्यटन गतिविधियों का आनंद लेने पहुँचते हैं। एक ओर जहाँ यह स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को संचालित करता है वहीं दूसरी ओर यह राज्य की आय के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में भी जाना जाता है। पर्यटन एवं उससे जुड़ी गतिविधियां राज्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने में भी सहायक की भूमिका का निर्वहन करती है। प्रदेश में पर्यटन की अपार संभावनाओं को देखते हुए इसे पर्यटन प्रदेश के रूप में भी स्थापित किये जाने की दिशा में समय–समय पर विभिन्न सरकारों द्वारा प्रयास किये जाते रहे हैं।

राज्य में विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों का अपना एतिहासिक एवं पौराणिक महत्व रहा है। प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले ये मेले विभिन्न संस्कृतियों का संगम होते हैं जिनमें स्थानीय लोकगीत, लोकवाद्य, लोककथाओं, वेशभूषा, आभूषण, खान–पान आदि को देखने एवं जानने का अवसर प्राप्त होता है। ये पौराणिक मेले आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण होने के साथ ही सामाजिकता का एक वृहद केन्द्र भी होते हैं तथा स्थानीय लोगों की आर्थिकी से भी प्राचीन समय से जुड़े रहे हैं। जौलजीवी मेला, थल मेला, बागेश्वर मेला, देवीधुरा मेला, कुम्भ मेला आदि वैश्विक पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं जिनमें

प्रतिवर्ष असंख्य लोग शामिल होते हैं। प्रदेश में विभिन्न अंतरालों में होने वाली यात्राओं का भी अपना महत्व है। नन्दा राजजात यात्रा इनमें प्रमुख है। गढ़वाल क्षेत्र के अंतर्गत चमोली जनपद से शुरू होने वाली यह यात्रा प्रत्येक बारह वर्ष में आयोजित की जाती है जिसमें देश से ही नहीं वरन् विदेशों से भी श्रृद्धालु शामिल होने आते हैं।

उत्तराखण्ड में उगने वाले विभिन्न किस्मों के अनाज तथा उनसे बनने वाले स्वादिष्ट व्यंजन भी पर्यटकों को वर्तमान में आकर्षित करने लगे हैं। अधिकतर भोजन अथवा व्यंजन प्राचीन पारंपरिक पद्यतियों से बनाये जाने के कारण अपने बेहतर स्वाद के लिये पर्यटकों के मध्य देश ही नहीं वरन् विदेशों में भी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। कफुली, चुड़कानी, डुबके, चैंसा, ठठवाणी, बाल मिठाई, खेंचुआ, झंगोरे की खीर और भी न जाने कितने व्यंजन इस श्रेणी मे शामिल होते हैं जो प्रदेश को एक विशिष्ट स्थान दिलवाते हैं। वर्तमान कुछ समय से पर्यटकों का इन स्वादिष्ट व्यंजनों की ओर रूझान को देखते हुए राज्य में फूड टूरिज्म के अवसर बढ़ने की संभावना के रूप में देखा जाने लगा है। जो एक ओर रोजगार के अवसर उत्पन्न करेगा वहीं दूसरी ओर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की संभावनाओं को भी बढ़ाने की ओर कार्य करेगा।

प्रदेश में प्राचीन समय से ही तीर्थाटन के लिये श्रृद्धालु आते रहे हैं। केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंमोत्री तथा यमुनोत्री चार धाम के नाम से विख्यात हैं जिनमें प्रति वर्ष तीर्थाटन एक निश्चित समयान्तराल तक चलता रहता है। इसके अतिरिक्त तुंगनाथ, मदमहेश्वर, त्रियुगीनारायण, गोपीनाथ मंदिर, नरसिंह मंदिर, पंच बद्री, पंच केदार, पंच प्रयाग जैसे पर्यटन स्थल सदैव से ही उत्तराखण्ड को विशिष्ट स्थान प्रदान करते रहे हैं। कत्यूरी शासनकाल में निर्मित अधिकांष मंदिरों की वास्तुशिल्प देखते ही बनती है। जिनके निर्माण का समय इतिहासकारों द्वारा लगभग एक हजार वर्ष से भी पुराना माना जाता है। केदारनाथ, तुंगनाथ, मदमहेश्वर, जागेश्वर, बैजनाथ, कपिलेश्वर, बागेश्वर आदि स्थानों में शिव मंदिर तथा कोसी कटारमल अल्मोड़ा में निर्मित भव्य सूर्य मंदिर अपनी वास्तुकला का अद्वितीय नमूना है। नानकमत्ता साहिब, रीठासाहिब, हेमकुंड साहिब, पीरान कलियर आदि भी राज्य में तीर्थाटन की दृष्टि से प्रमुख स्थल प्राचीन काल से ही रहे हैं। जिनके दर्शनार्थ प्रत्येक वर्ष तीर्थाटन का उद्देश्य लेकर दर्शनार्थी प्रदेश में आते हैं। इन सबके अतिरिक्त प्रदेश को कैलाश मानसरोवर यात्रा के भारतीय क्षेत्र की तरफ से यात्रा तय करने के मार्ग के रूप में भी जाना जाता है जो कि प्रतिवर्ष भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित की जाती है।

तीर्थाटन के अतिरिक्त पर्यटन के विभिन्न आयाम उत्तराखण्ड की धरती को पर्यटन के क्षेत्र में समृद्ध बनाते हैं। पर्यावरण को संरक्षित करते हुए संपोषणीय रूप से पर्यटन गतिविधियों का स्वरूप जिसे ईको पर्यटन के नाम से भी संबोधित किया जाता है। विभिन्न साहसिक खेलों की भूमि होने के कारण साहसिक पर्यटन की अपार संभावनाएं युवा पर्यटकों को आकर्षित करती हैं तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन का कार्य भी करती है। ट्रेकिंग, माउन्टेनियरिंग, कयाकिंग, व्हाइट वाटर राफ्टिंग जैसे विभिन्न साहसिक खेल राज्य में साहसिक पर्यटन को गति प्रदान करने वाले हैं। वर्तमान समय में प्रदेश के खाली होते गांवों को पुनः मुख्यधारा से एवं पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति एवं भोजन से जोड़ने के लिये रूरल टूरिज्म जैसी नवीन विधा का प्रदेश में संचालन शुरू हुआ है। जिसमें होम स्टे जैसी योजना के माध्यम से स्थानीय ग्रामीणों को स्वरोजगार उपलब्ध हो रहा है।

इन पर्यटन विधाओं के अतिरिक्त योग एवं स्वास्थ्य हेतु भी विभिन्न केन्द्र पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। मेडिकल टूरिज्म का भी महत्व राज्य के परिप्रेक्ष्य में बढ़ता चला जा रहा है। आर्युवेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्यतियों के माध्यम से ईलाज मेडिकल टूरिज्म की संभावनाएं राज्य में बढ़ाता है। वनों एवं एकांत से लगाव रखने वाले पर्यटकों हेतु विभिन्न नेशनल पार्क, वाइल्ड लाइफ सेंक्च्युरी, बर्ड वाचिंग रिजर्व जैसे अनेक स्थल राज्य में पर्यटकों को जीव एवं वानस्पतिक विविधता के दर्शन कराते हैं। जिसे वर्तमान में फॉरेस्ट टूरिज्म के नाम से भी जाना जाने लगा है तथा यह राज्य में लोगों की आजीविका के महत्वपूर्ण साधन के रूप में भी स्थापित होता जा रहा है।

राज्य अपनी प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक विभिन्न प्राचीन धरोहरों के लिये भी जाना जाता रहा है जिन्हें देखने प्रतिवर्ष पर्यटक राज्य में आते हैं। यदि हम प्रागैतिहासिक कालखण्ड को अनुभव करना चाहते हैं तो लखुउडियार, फड़कानौला, ल्वेथाप, देवीधुरा, अलकनन्दा घाटी, जालली, नैनीताल का खुटानी नाला एवं अन्य बहुत से स्थानों पर गोलनुमा आकृति जिसे 'कपमार्क्स' के लिए जाना जाता है। इन स्थानों पर आदिमानव के विचरण के साक्ष्य वर्तमान में भी देखने को मिलते हैं। उस इतिहास से रू–ब–रू होने तथा उसके जीवंत दर्शन करने के लिये यह पर्यटन संभावनाओं में वृद्धि में सहायक हो सकते हैं। प्रागैतिहासिक काल से इतिहास में पौराणिक कालखण्ड का उल्लेख करते बहुत से स्थान उत्तराखण्ड में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। हरिद्वार तथा कनखल जैसे स्थान पौराणिक उल्लेखों में भी उल्लिखित किये गये हैं।

उत्तराखण्ड के एतिहासिक कालखण्ड की तरफ बढ़ें तो कत्यूरी तथा चंद शासकों द्वारा विभिन्न स्थानों पर निर्मित भव्य मंदिर तथा जलकुण्ड जिन्हें स्थानीय भाषा में 'नौला' नाम से संबोधित किया जाता है राज्य के महत्वपूर्ण एतिहासिक धरोहर के रूप में पर्यटकों को आध्यात्मिक, एतिहासिक तथा संस्कृति के दर्शन कराते हैं। जनपद बागेश्वर में पाँचवीं सदी में निर्मित 'बद्रीनाथ का नौला', चम्पावत में 'एक हथिया नौला', 'बालेश्वर का नौला' कुछ अति प्रसिद्ध तथा एतिहासिक कालखण्ड की यात्रा कराने वाले भवन हैं। राज्य में औपनिवेशिक काल में बने भव्य भवन आज भी जीवंत तथा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहे हैं प्रतिवर्ष इन भवनों की वास्तुकला को देखने पर्यटक इन स्थलों पर पहुँचते हैं। स्वतंत्रता के बाद एवं राज्य की स्थापना के पश्चात् भी पर्यटकों के आकर्षण को बढ़ाने हेतु सरकारों द्वारा विभिन्न प्रयास इस दिशा में समय–समय पर किये जाते रहे हैं तथा वर्तमान में भी किये जा रहे हैं। चार धाम योजना, शिव सर्किट योजना, अपनी धरोहर अपनी पहचान, मानसखण्ड माला योजना जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रदेश की संस्कृति एवं पर्यटन को विकसित किये जाने की दिशा में प्रयास जारी हैं।

इस सम्बन्ध में यह पुस्तक "उत्तराखण्ड : संस्कृति एवं पर्यटन" जो कि उन विद्वजनों का सम्मिलित प्रयास है जिन्होंने उत्तराखण्ड की संस्कृति एवं पर्यटन के विभिन्न आयामों को विवेकपूर्ण विश्लेषण के आधार पर अपने शोधपत्र एवं लेख के माध्यम से इस पुस्तक के प्रयोजन को सफल बनाने हेतु अपने सहयोग के रूप में प्रस्तुत किया है। हम आशा तथा विश्वास करते हैं कि हमारा यह प्रयास अकादमिक जगत में भविष्य में इस दिशा में होने वाले महत्वपूर्ण शोधों के साथ–साथ आम पाठकों के ज्ञानार्जन में सहायक होगा। अतः सर्वप्रथम हमारा प्रणाम माँ सरस्वती को जिनके आर्शीवाद से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ। हमारा हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं उन समस्त प्रबुद्धजनों को जिनके लेखों के बिना इस कार्य को एक पुस्तक का रूप देना संभव नहीं हो पाता क्योंकि यह शोधपूर्ण अंर्तयात्रा उनके कारण ही संभव हो पाई।

हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं अपने समस्त परिजनों एवं सहयोगियों का जिन्होंने पग–पग पर हमें इस संकल्प की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया तथा हमारी प्रेरणा का स्रोत बने। भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की आशा एवं पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि होने पर क्षमाप्रार्थना एवं मार्गदर्शन की भी अपेक्षा रखते हैं।

पुस्तक के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग हेतु श्री प्रेम सिंह बिष्ट, एन. बी. पब्लिकेशन, गाजियाबाद को भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करना हमारा परम कर्तव्य है।

अतः अंत में हम यह आशा करते हैं कि अपने समस्त प्रबुद्ध लेखकों के सहयोग से किया गया हमारा यह सहकारी प्रयास उत्तराखण्ड की संस्कृति एवं पर्यटन के अध्ययन को एक पृथक एवं नवीन आयाम देने तथा निकट भविष्य में इस दिशा में होने वाले शोध एवं कार्यों में सहयोगी साबित होगा।

**डॉ. प्रतिभा नेगी**

**डॉ. जितेन्द्र कुमार लोहनी**

# अनुक्रम


1. जनपद पिथौरागढ़ के मेलों का आर्थिक स्वरूप : एक अध्ययन 1
*दिव्या ओली/डॉ. जितेंद्र कु. लोहनी/प्रो. पदम एस. बिष्ट*

2. उत्तराखण्ड के पर्यटन पर स्थानीय कला एवं हस्तशिल्प का प्रभाव 10
*डॉ. प्रतिभा नेगी*

3. उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ में पर्यटन की सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ 21
*डॉ. धीरज सिंह खाती*

4. मध्य हिमालयी राज्य उत्तराखंड में सांस्कृतिक विविधता व पारिस्थितिकी–पर्यटन में अंर्तसंबंध 30
*डी. एस. परिहार/महेन्द्र सिंह/नीरज कुमार*

5. हिमालयी राज्य में कोविड–19 के बाद यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य उद्योग 52
*नीरज कुमार/डी.एस. परिहार/महेन्द्र सिंह*

6. विलुप्त होते महत्त्वपूर्ण तीर्थ–मन्दिर उत्तराखण्ड की तीर्थाटन–पर्यटन अर्थव्यवस्था के लिए गम्भीर चुनौती 64
*डॉ. प्रीतम कुमारी*

7. उत्तराखण्ड में आपदा एवं पर्यटन 77
*डॉ. पारूल भारद्वाज/प्रमोद कुमार/नमिता मिश्रा*

8. कुमाऊँ के लघु कुटीर उद्योग में उद्यमिता संभावनाएं ('पिछौड़ा' परिधान के विशेष संदर्भ में) 81
*आरती जोशी/डॉ. रूचि द्विवेदी*

9. कुमाऊँ के गंगावाली क्षेत्र का सांस्कृतिक महत्व एवं पर्यटन के अवसर 85
*कौशल उप्रेती*

10. उत्तराखण्ड की संस्कृति में पर्यटन वर्तमान स्थिति 94
*डॉ. निशा आर्या*

11. उत्तराखण्ड में पर्यटन के अवसर एवं संभावनाएँ एक विवेचना 99
*डॉ. कवलजीत कौर*

12. भारतीय संस्कृति का पारम्परिक स्वरूप 110
*डॉ. प्रदीप कुमार पेटवाल*

13. उत्तराखण्ड की सुदृढ़ लोक संस्कृति एवं लोक कला एक अध्ययन 120
*डॉ. नीति गोयल*

14. हिमालय में पर्यटन की संभावनाएं एवं चुनौतियां 126
*डॉ. विजय कुमार*

15. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण 137
*डॉ. शैला जोशी*

16. उत्तराखण्ड की प्राकृतिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में पर्यटन : एक दृष्टि 143
*डॉ. विनीता बिष्ट*

17. बागेश्वर जनपद में पर्यंटन की सम्भावनायें (कांडा तहसील के विशेष सन्दर्भ में) 148
*डॉ. निधि अधिकारी*

18. उत्तराखण्ड के पर्यटन क्षेत्र पर कोविड–19 का प्रभाव 154
*मनोज कुमार*

19. उत्तराखण्ड के पर्यटन पर कोविड–19 का प्रभाव 159
*सुनीता यादव/प्रोफेसर मनीषा तिवारी*

20. उत्तराखण्ड में पर्यटन का एक स्वरूप : पारिस्थितिकीय पर्यटन 168
*अरूण सिंह/डॉ. नन्दन सिंह बिष्ट*

21. उत्तराखण्ड का ग्रामीण जन जीवन थारू जनजाति के परिपेक्ष्य में 175
*डॉ. बिनीता बिष्ट*

22. उत्तराखण्ड में पर्यटन की वर्तमान स्थिति 180
*हरीश सिंह*

23. उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विरासत : द्वाराहाट मंदिर समूह 186
*डॉ. पूनम पन्त*

24. पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाएँ 192
(कुमाऊँ मण्डल के विशेष सन्दर्भ में)
*डॉ. दीपक कुमार टम्टा/अलका आर्या/विपिन चन्द्र टम्टा*

25. देवभूमि उत्तराखण्ड हिमालय में पर्यटन : रोजगार के संसाधन के रूप में अध्ययन 201
*सुरेन्द्र सिंह/भगवती नेगी*

26. उत्तराखण्ड में पर्यटन क्षेत्र पर कोविड–19 का प्रभाव 223
*विनीता भौर्याल/डॉ. अर्चना त्रिपाठी*

27. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में व्यक्ति की भूमिका 231
*प्रोफेसर सरोज वर्मा*

28. उत्तराखंड की लोकसंस्कृति 236
*मोनिका/दीपा/भावना पंत/प्रीति*

29. उत्तराखण्ड में पर्यटन और धार्मिक स्थल 244
*डॉ. कविता राठौर*

30. मानव की उत्पत्ति और सभ्यता का उद्गम है श्री बदरिकाश्रम 257
*डॉ. भगवती प्रसाद पुरोहित*

*31* उत्तराखण्ड पर्यटन : अतिथि देवो भवः 267
*कुसुम सुयाल*

# 5

# हिमालयी राज्य में कोविड-19 के बाद यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य उद्योग

**नीरज कुमार**
*भूगोल विभाग, रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, उत्तराखण्ड*
**डी.एस. परिहार**
*भूगोल विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, डी. एस. बी. परिसर, नैनीताल, उत्तराखण्ड*
**महेन्द्र सिंह**
*भूगोल विभाग, सोबन सिंह जीना वि.वि., अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड*

**सारांश**

कोविड–19 के प्रभाव से पर्यटन सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक था, जिसका राज्य की अर्थव्यवस्था पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है यहाँ की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यटन, यात्रा और आतिथ्य उद्योग में बड़ी सम्भावनाएं हैं। पर्यटन उद्योग से रोजगार के अवसर मिलते हैं। स्थानीय हस्तकला और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है। राज्य में इस उद्योग से सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों का विकास किया जा रहा है, जो प्रदेश की आजीविका का मुख्य साधन है। यह हिमालय की गोद में बसा प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण जैव विविधता एवं पास्थितिक दृष्टि से सम्पन्न रहा है। पहाड़ी भू–भाग होने से उत्तराखण्ड में पर्यटन उद्योग के लिए अपार सम्भावनाएं हैं जो अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। जिससे स्थानीय

निवासियों इस व्यवसाय से जुड़े लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर प्रदान होते हैं। यहाँ पर्यटन की अन्य विधाएँ साहसिक पर्यटन, हरित पर्यटन तथा ग्रामीण पर्यटन का विकास हो रहा है। आने वाले समय में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावनाएं हैं जिसके लिये कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड में पर्यटन का भविष्य सुनहरा है।

**मुख्य शब्द :** पर्यटन, यात्रा, कोविड–19, आतिथ्य उद्योग, रोजगार व हिमालयी राज्य।

## प्रस्तावना

कोरोना वायरस ने चीन के वुहान शहर से फैलते–फैलते पूरे विश्व को इस महामारी ने अपने चपेट में लिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोविड–19 के रूप में इसको महामारी घोषित किया। इस दौरान कई देशों ने लॉकडाउन का फैसला किया। यात्रा करना विशेष रूप से अवकाश प्रयोजनों के लिए संभव नहीं था। वास्तव में 2020 की शुरूआत कोविड–19 के प्रकोप से पर्यटन सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक था और यात्रा, पर्यटन उद्योग तथा अर्थव्यवस्था पर महामारी के विनाशकारी प्रभाव के साथ विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। जिसका व्यापक रूप से उत्तराखण्ड में पर्यटन एवं आतिथ्य उद्योग पर असर पड़ा। भारत में महामारी को रोकने के लिए मार्च 2020 में पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया गया जिससे दुनिया भर के देशों की सम्पूर्ण सामाजिक आर्थिक संरचना पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उत्तराखण्ड एक पर्वतीय एवं हिमालयी राज्य है जिसकी अर्थव्यवस्था में यात्रा एवं पर्यटन सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। राज्य में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है पर्यटन एवं आतिथ्य उद्योग से राज्य में रोजगार एवं सूक्ष्म लघु उद्योगों का विकास किया जा रहा है। पर्यटन ही प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है प्रदेश में होटल, रेस्टोरेंट में तथा साहसिक गतिविधियों से जुड़े व्यावसायी लगभग एक लाख लोग पर्यटन व्यवसाय से जुड़े हैं। चारधाम यात्रा व अन्य पर्यटन गतिविधियां शुरू होने से कोविड के बाद बन्द पड़े उद्योगों को सांस मिलेगी। पर्यटन महामारी से उभरने के बाद उत्तराखण्ड में पर्यटन का कारोबार विकसित हो रहा है पिछले छः महीनों में चारधाम यात्रा पर करीब 44 लाख तीर्थ यात्री उत्तराखण्ड आये।

यात्रा पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के लिए उत्तराखण्ड में अपार सम्भावनाएं हैं यहाँ पर्यटन की विभिन्न विधाओं के लिए पर्याप्त संसाधन मौजूद हैं प्रदेश में प्रसिद्ध चारधाम केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री से उत्तराखण्ड

की देश–दुनिया में पहचान है। धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन के अलावा, साहसिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन एवं हरित पर्यटन का हब बन सकता है क्योंकि उत्तराखण्ड अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। खूबसूरत ग्लेशियरों, फूलों की घाटियों, बुग्यालों, बर्फाआच्छादित पहाड़ियों, वनस्पति एवं जानवरों की विविधता के साथ–साथ सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है। यह उद्योग विकसित व विकासशील राष्ट्रों में लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

कोविड के बाद हाल में योग का विश्व स्तर पर प्रसार होने से ऋषिकेश योगा पर्यटन के लिए उभरता हुआ क्षेत्र है। सांस्कृतिक पर्यटन में मेले एवं त्यौहार जैसे– झंडा मेला (देहरादून), चैती मेला (उधम सिंह नगर), जौलजीबी मेला (पिथौरागढ़), उत्तरायणी मेला बागेश्वर सांस्कृतिक पर्यटन की विविधताओं एवं सम्भावनाओं को उजागर करते हैं। नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए मसूरी, नैनीताल, कौसानी, रानीखेत, मुनस्यारी, धारचूला एवं अन्य स्थल प्रदेश में स्थित हैं। पर्वतीय क्षेत्र होने से यहाँ साहसिक पर्यटन की विभिन्न विधाओं की अनेक सम्भावनाएं विद्यमान हैं। ट्रैकिंग, स्किइंग, जल क्रीड़ाए, पैराग्लाइडिंग। हरित व वन्य पर्यटन में 6 राष्ट्रीय उद्यान व वन्य 7 जीव विहार एवं नन्दा देवी बायोस्फेयर स्थित हैं। जो जैव विविधता को बनाये रखने के साथ–साथ पर्यटन के विकास में योगदान देते हैं। गढ़वाल व कुमाऊँ मण्डल विकास निगम प्रदेश में पर्यटन का प्रचार एवं प्रसार करने के साथ–साथ रोजगार के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भविष्य में पर्यटन के विकास से स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करने के साथ ही सूक्ष्म लघु उद्योगों को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने वाला मुख्य व्यवसाय बन रहा है।

## उद्देश्य

1. उत्तराखण्ड में पर्यटन की विभिन्न विधाओं एवं गतिविधियों की पहचान करना।
2. पर्यटन के प्रकारों एवं प्रमुख पर्यटन स्थलों का अध्ययन।
3. भविष्य में संभावित पर्यटन स्थलों का अध्ययन व सुझाव तैयार करना।

## अध्ययन क्षेत्र एवं शोध विधि

उत्तराखण्ड ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से अभिभूत है। हिमालय के उत्तुंग शिखरों के सानिध्य में पल्लवित अनेक महत्वपूर्ण नदियों

का उद्‌गम श्रोत है। ऊँचे–ऊँचे हिमशिखरों, गहरी संकीर्ण नदी घाटियों, ग्लेशियरों, हरीभरी वनस्पतियों से युक्त उत्तराखण्ड अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य वाला है। उत्तराखण्ड को भारत के 27वें राज्य के रूप में 9 नवम्बर 2000 ई0 में उत्तर प्रदेश से पृथक कर किया गया। यह भारत के उत्तरी भाग में $28^0$43′ से $31^0$27′ अक्षांश व $77^0$34′ से $81^0$02′ पूर्वी देशान्तर के मध्य 53,483 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है। इसके अन्तर्गत गढ़वाल व कुमाऊँ मण्डल सम्मिलित हैं। गढ़वाल मण्डल में सात जिले हरिद्वार, देहरादून, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराकाशी, रूद्रप्रयाग और चमोली हैं। कुमाऊँ मण्डल के छः जिले नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत और उधम सिंह नगर हैं। इसके उत्तर में तिब्बत (चीन) पूरब में नेपाल की अन्तराष्ट्रीय सीमाएं, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश तथा दक्षिण में उत्तर प्रदेश स्थित है।

उत्तराखण्ड की समस्त भूमि प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। यहाँ अनेक धार्मिक स्थलों का आविर्भाव हुआ है। अनेक धार्मिक स्थलों की उपस्थिति राज्य के पर्यटन उद्योग के लिए वरदान साबित हुई है इसी कारण यह धार्मिक पर्यटन के रूप में अधिक विकसित हुआ। देवदार, चीड़, बांज, बांस आदि वृक्षों से युक्त अलौकिक एवं नैसर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्य वाले इस क्षेत्र में अतीत से ही देश–विदेश के तीर्थ यात्री एवं पर्यटक आते थे। तीर्थ स्थलों के कारण पुराण काल से इसे देवभूमि नाम से जाना जाता है। यह एक सीमांत राज्य है जिसकी भौगोलिक सीमाएं बहुआयामी हैं। यहाँ आय के मुख्य स्रोतों में पर्यटन एवं यात्रा की मुख्य भूमिकाएं हैं। धार्मिक, सांस्कृतिक और अब आधुनिक पर्यटन *(साहसिक, हरित, ग्रामीण पर्यटन)* के लिए आयाम इस प्रदेश को देश के पर्यटन उद्योग क्षेत्र में निश्चय ही सर्वोपरि स्थान दिलाते हैं। यहाँ सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग निवास करते हैं। प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता, उदारता, बधुत्व, शान्तिप्रियता समाज के मानवीय मूल्यों के आधारभूत तत्व हैं इसलिए यह प्रदेश हिमालय की तरह उच्च मानवीय मूल्यों का पोषक और संवर्द्धक है।

अर्न्तराष्ट्रीय परिपेक्ष्य में उत्तराखण्ड का पर्वतीय क्षेत्र विश्व के 12 प्रमुख जैव विविधता वाले केन्द्रों में से एक है। प्राकृतिक संरचना तथा बहुआयामी रूप के कारण यहाँ पर्यटन और आतिथ्य उद्योग की सर्वाधिक सम्भावनाएं हैं। नैनीताल, मसूरी, चमोली, कौसानी, मुक्तेश्वर, रानीखेत, देहरादून, ऋषिकेश, मुनस्यारी और राष्ट्रीय कार्बेट पार्क प्रमुख पर्यटन स्थल है। इस प्रदेश की सांस्कृतिक परम्परा, नैसर्गिक सौन्दर्य तथा शीतल व प्राणदायिनी शुद्ध वायु पर्यटकों को आकर्षित करने लिए प्रमुख संसाधन हैं। यह शोध पत्र पूर्ण करने

हेतु अवलोकनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। इसमें प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

## कोविड-19 के बाद उत्तराखण्ड में पर्यटन

2020 की शुरूआती दौर में कोविड महामारी से पर्यटन सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक था जिसका अर्थव्यवस्था पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा था। लॉकडाउन खुलने के बाद उत्तराखण्ड में धार्मिक यात्राओं चारधाम यात्रा से पर्यटन एवं आतिथ्य उद्योग का फिर से यहाँ के लोगों के आर्थिक सामाजिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पर्यटन एक मानवीय प्रक्रिया होने के साथ–साथ आर्थिक महत्व का विषय भी है। कोविड के बाद सरकार ने बाहरी राज्यों से आने वाले व्यक्तियों और श्रद्धालुओं के लिए कोविड–19 जांच की अनिवार्यता को खत्म किया। जिससे उत्तराखण्ड के पहाड़ी वादियों में पर्यटकों के लिए दरवाजे खोले। कुछ महत्वपूर्ण गाईडलाइन्स तय करके उत्तराखण्ड ने महामारी के बाद पर्यटकों के लिए सभी रास्ते खोले जिसके परिणामस्वरूप धीरे–धीरे घरेलू पर्यटन में वृद्धि देखी गयी। प्रदेश के जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क को बेस्ट वाईल्ड लाइफ डेस्टिनेशन और ऋषिकेश को बेस्ट एडवेंचर गन्तव्य और केदारनाथ को बेस्ट स्पिरिच्युअल डेस्टिनेशन घोषित किया गया।

देश में पर्यटन और आतिथ्य उद्योग पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव अचूक रहा प्रदेश के लिए अर्थव्यवस्था पर्यटन पर अत्यधिक निर्भर है। यहाँ पर्यटन क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए ग्रामीण पर्यटन, हरित पर्यटन व साहसिक पर्यटन को रोजगार पैदा करने हेतु बढ़ावा दिया जा रहा है। जो हिमालयी राज्य के प्रमुख क्षेत्र होने से सालाना लाखों पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित कर रहा है।

## प्रदेश में पर्यटन की विधाऐं ( प्रकार )

प्रदेश में धार्मिक (तीर्थाटन) सांस्कृतिक, साहसिक, वन्य जन्तु, ईको पर्यटन, मनोरंजन, पर्यटन के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं।

**धार्मिक पर्यटन-** उत्तराखण्ड में विभिन्न धर्मो के तीर्थस्थल विद्यमान हैं जिनमें बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री चार धाम के लिए व हरिद्वार हेमकुंड साहिब, नानकमत्ता, पिरान कलियर, मीठा रीठा साहिब विश्व प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं जिनमे लाखों पर्यटक दर्शन के लिए आते है। नंदादेवी राजजात यात्रा तथा कैलाश मानसरोवर यात्रा में देश–विदेश से पर्यटक पहुँचते है। इसके

अतरिक्त बहुत से छोटे बड़े धार्मिक पर्यटन स्थल हैं जो भविष्य में प्रदेश के पर्यटन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है।

**सांस्कृतिक पर्यटन-** ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण संगीत कला धार्मिक सांस्कृतिक पर्यटन की अवधारणा भी पर्यटन से जुड़ गई है यह क्षेत्र उसने प्राकृतिक परिवेश तथा विभिन्न संस्कृतियों के कारण देश–विदेशों के पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है यह संस्कृति हमारे दर्शन, धर्म, रीति–रिवाज, रहन–सहन, वास्तुकला, संगीत, पर्व, त्यौहार मेले यहाँ के सांस्कृतिक पर्यटन की विविधताओं एवं सम्भावनाओं को प्रकट करते हैं। हमारे विशिष्ट लोकनृत्य, संगीत सभी लोगों द्वारा पसंद किए जाते हैं।

**वन्य जीव व हरित पर्यटन-** प्रदेश में हरित पर्यटन व वन्य जन्तु पर्यटन के लिए सभी गुण विद्यमान है जिससे स्थानीय निवासियों तथा पर्यटन से जुड़े व्यक्तियों को रोजगार के अवसर प्रदान होते हैं। साथ ही पर्यावरण का संरक्षण होता है। वन्य पर्यटन के लिए विश्व प्रसिद्ध कार्बेट नेशनल पार्क, राजाजी राष्ट्रीय उद्यान पर्यटन के आकर्षण के विपुल क्षमता रखते हैं।

उसके अतरिक्त बर्ड वाचिंग के लिए प्रदेश में अनेक स्थल मौजूद है। राज्य में प्रकृति प्रदत्त अनेक संसाधन हिमाच्छादित पर्वत, श्रृंखलायें झीलें, नदियां, सघन वन, गर्मजल स्रोत, विभिन्न प्रकार के फ्लोरा एवं फौना, फूलों की घाटी, ग्लेशियर व दरें पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भविष्य में इस प्रकार पर्यटन के लिए एक सुनहरा अवसर यहाँ के लिए विद्यमान हैं।

**मनोरंजन पर्यटन-** मसूरी, हरिद्वार, औली, नैनीताल, देहरादून में लच्छीवाला तथा नौकायन राज्य में मनोरंजन संबंधी विधाओं की सम्भावनाओं को परिलक्षित करते हैं।

इसके अतरिक्त भविष्य में योगा पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन के रूप उभर सकता है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जलवायुविक दशाएँ उत्तराखण्ड को बढ़ावा देने और इस जगह को योग गंतव्य के रूप में विकसित करने के लिए बहुत अनुकूल है। ऋषिकेश को योग की राजधानी के रूप में जाना जाता है। जहाँ प्रतिवर्ष पर्यटकों की संख्या (सारणी–1) में वृद्धि हो रही है। वर्तमान में उत्तराखण्ड में बहुत से योगा के केन्द्र है। जो घरेलू व अंतराष्ट्रीय पर्यटकों के बीच योग और आयुर्वेदिक चिकित्सा के माध्यम से स्वास्थ्य और हर्बल पर्यटन के रूप में उभर रहे हैं।

## उत्तराखण्ड में पर्यटन एवं आतिथ्य उद्योग की सम्भावनाएं तथा भविष्य

पर्यटन को हमेशा समावेशी विकास और रोजगार को प्रोत्साहन देने वाला प्रमुख घटक माना जाता रहा है। पूरे विश्व में ऐसा माना जाता है कि यात्रा, पर्यटन एवं आतिथ्य उद्योग क्षेत्र की गरीबी कम करने और महिलाओं को संपन्न बनाने, युवाओं, प्रवासी कर्मियों को नए रोजगार अवसर प्रदान करता है। उत्तराखण्ड एक हिमालयी राज्य के रूप मे प्राचीन काल से ही एक मुख्य गंतव्य और पर्यटन विकास की अपार सम्भावनाएँ रखता है। केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत टिहरी झील तथा आसपास के क्षेत्रों का नये पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा रहा है। कुमाऊँ में कटारमल, जागेश्वर–बैजनाथ तथा देवीधुरा हेरिटेज सक्रिट के रूप में समेकित विकास किया जा रहा है। भविष्य में इन स्थानों में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावनाएं हैं।

**सारणी-1**

**उत्तराखण्ड मे वर्ष 2010-2021 तक आये देशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या**

| क्र. | वर्ष | भारतीय | विदेशी | कुल | क्र. | वर्ष | भारतीय | विदेशी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2010 | 30972134 | 136459 | 31108593 | 7 | 2016 | 31663782 | 112799 | 31776581 |
| 2 | 2011 | 26665753 | 142687 | 26808440 | 8 | 2017 | 34581097 | 142102 | 34723199 |
| 3 | 2012 | 28329686 | 140524 | 28470210 | 9 | 2018 | 36697678 | 154526 | 36852204 |
| 4 | 2013 | 21028010 | 103596 | 21131606 | 10 | 2019 | 39066776 | 158964 | 39225740 |
| 5 | 2014 | 22520097 | 109948 | 22630045 | 11 | 2020 | 7836002 | 38763 | 7874765 |
| 6 | 2015 | 29295152 | 111094 | 29406246 | 12 | 2021 | 20002705 | 15410 | 20018115 |

स्रोतः पर्यटन सांखिकी उत्तराखण्ड

**साहसिक पर्यटन-** प्रदेश में पर्यटन उद्योग को अधिक बहुआयामी बनाने के लिए साहसिक पर्यटन की अनेक गतिविधियां जैसे– ट्रेकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग, पैराग्लाइडिंग, जलक्रीडाएं (राफ्टिंग), रज्जुमार्ग आसपास के बाजारों के लिए काफी सम्भावनाएँ हैं। ट्रैकिंग 10–20 व्यक्तियों के समूह में या अकेले ही आसान रास्तों से प्रारंभ की जा सकती है। यह पर्वतीय क्षेत्र में भ्रमण करने के लिए सस्ता, लोकप्रिय साहसिक क्रीड़ा है, जिनमें पर्यटक धार्मिक, सांस्कृतिक शैक्षिक अथवा प्राकृतिक दृश्यों के अवलोकन हेतु ट्रेकिंग कर सकते हैं। राज्य में ट्रेकिंग हेतु 100 ऐसे पर्वत शिखर हैं जो 6000 मीटर से अधिक

ऊँचाई के हैं। कुमाऊँ मंडल के ट्रेकिंग मार्गों में पिथौरागढ़–पार्वती लेक ट्रेक, पिथौरागढ़–लिपुलेख ट्रेक, बाग्वेश्वर–पिंडारी ग्लेश्यिर ट्रेक, अल्मोड़ा–चितई ट्रेक प्रमुख है, तथा गढ़वाल मंडल में पंचकेदार ट्रेक, गंगोत्री–तपोवन ट्रेक, केदारनाथ–वासुकीताल ट्रेक, फूलों की घाटी ट्रेक तथा रूपकुंड मुख्य है। इसके अलावा अन्य ट्रेकिंग मार्गों की खोज की जा रही हैं। जहाँ भविष्य में ट्रैकिंग हेतु यात्राएं की जा सकती है।

रॉक क्लाइविंग दुर्गम पहाडी स्थानों पर चट्टानों में साहसिक आनन्द के साथ चढ़ने से हैं। टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली व नैनीवाल जनपद मे प्रमुख रॉक क्लाइबिंग स्थल हैं। यह एक प्रकार का पर्वतारोहण है। प्रदेश में उत्तरकाशी के (NIM) नेहरू पर्वतारोहण संस्थान द्वारा प्रशिक्षक आवासीय सुविधाएं तथा खान–पान की व्यवस्था की जाती है।

स्कीइंग साहसिक क्रीडाओं की श्रेणी सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। जिसके माध्यम से शीतकालीन पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। औली में प्रतिवर्ष स्कीइंग महोत्सव मनाए जाने के साथ ही हिमक्रीडाओं हेतु प्रशिक्षण भी दिया जाता है। औली व बहुत से बुग्यालों में शीतकाल में हिमपात होता है। जो पर्यटकों के मुख्य क्षेत्र के रूप में उभर सकते है, इन क्षेत्रों में हिमपात का दृश्य पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं।

पैराग्लाइडिंग साहसिक खेलों में अधिक लोकप्रिय होती जा रही है प्रदेश में इन साहसिक खेलों को प्रोत्साहन के लिए अत्यधिक संभावनायें है। यहाँ आने वाले समय में ऐसे क्रीडाओं को सर्वसुलभ बनाकर पर्यटनों की संख्या में वृद्धि की जा सकती है। उत्तराखण्ड में बहुत सी सदानीरा नदियां व झीलें हैं। जिनमें जलक्रीड़ा की बहुत सारी सम्भावनाएं है। नदियों में नौकायन रिवर–राफ्टिंग जैसे अन्य खेलों का विकास किया जा रहा है।

**बर्ड वाचिंग तथा अन्य पर्यटन-** बर्ड वाचिंग व हरित पर्यटन के क्षेत्र में राज्य में तमाम सभ्भावनाएं हैं। आसन बैराज इस लिहाज से उभरता हुआ गंतव्य है। हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियां, बुग्याल, सघन वन,वन्य प्राणियों विभिन्न प्रजाति के पक्षियों एवं मछलियों को आश्रय प्रदान करती है। जो प्रकृति प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करती है। प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण व सदाबहार पर्णपाती वनों में दुर्लभ वन्य जीव जंतु मिलते हैं जिन्हें देखने के लिए बहुत से पर्यटक देश–विदेश से आते हैं। बर्ड वाचिंग व वन्य जंतु पर्यटन का भविष्य सुनहरा है।

बावजूद पर्यटन कई समस्याओं को जन्म देते हैं। कुछ लोकप्रिय स्थलों में बड़े पैमाने पर पर्यटन एक समस्या बन गया है। यह प्राकृतिक पर्यावरण और स्थानीय समुदाय को नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है। पर्यटन यात्रा को नियंत्रित एवं सुनियोजित विकास करके पर्यटन के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है, जिससे इस सीमांत राज्य की प्राकृतिक विविधता एवं सौंदर्यता बनी रहे तथा सतत् पर्यटन का विकास करके पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते है।

लौकडाउन के दौरान पर्यावरण पर मानवीय हस्तक्षेप लगभग समाप्त हो गया जिस कारण प्रदूषण में कमी जैसे सकारात्मक पक्ष देखने को मिले जिसके लिए सरकारी निकाय ने भारी मात्रा मे धन खर्च किया व हासिल करने में असमर्थ रहे भविष्य में प्रदेश की जैवविविधता को सुरक्षित करते हुए पर्यटन का विकास किया जा सकता है। स्थानीय उत्पादों, जड़ी बूटियों और हस्तशिल्प के उत्पादन और विपणन को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए तथा पारम्परिक कला व शिल्प को पुनर्जीवित करके साहसिक पर्यटन की अनेक विधाओं का विकास करके देशी व विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

## सन्दर्भ


1. उत्प्रेती, आर.एम. (2011). धरोहर जनपद पिथौरागढ़, (प्रथम संस्करण), देहरादून, सरस्वती प्रेस, 2 ग्रीन पार्क, पृ0 17–37।
2. कपूर, वि.कु. (2012). पर्यटन भूगोल, नई दिल्लीः विश्वभारती पब्लिकेशन्स।
3. कुमार, सं. (2005). पर्यटन में भूगोल, नई दिल्लीः तक्षशिला प्रकाशन।
4. जोशी, घ. (2018). उत्तराखण्ड़ का राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (चतुर्थ संस्करण, 2017), मेरठ, आर. वी. पिन्टर्स, पृ0 257–264।
5. नेगी, ज. (1999) पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, नई दिल्लीः तक्षशिला प्रकाशन।
6. नौटियाल, रा.मो. (2011). पौराणिक उत्तराखण्ड़ (प्रथम संस्करण), देहरादूनः विनसर पब्लिशिंग, पृ. 25–47।
7. बलोदी, रा.प्र. (2021). उत्तराखण्ड़ समग्र ज्ञानकोष (चतुर्थ संस्करण), देहरादूनः बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, पृ0 75–380।
8. बर्णवाल, एम.के. (2021). भूगोल एक समग्र अध्ययन (चौदहवां संस्करण), दिल्लीः कोसमोस पब्लिकेशन, पृ0 65।
9. भारद्वाज, अं. (2015). इको टूरिज्म, International Journal of Research Granthaalayah, Vol. 3 Issue-9, pp. 1-3.

10. मैठाणी, डी.डी., प्रसाद, गा. एवं नौटियाल, रा. (2015). उत्तराखण्ड का भूगोल, (प्रथम संस्करण, 2010; पुनः मुद्रित 2015) इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पृ. 188–200।

11. धूलिया, शि. एवं नेगी, आर.सिं. (2021), कोविड–19 का उत्तराखण्ड पर्यटन पर प्रभाव. International Journal of HumanitiesAnd erence Research, Vol. 7, Issue-6, pp. 105-107.

12. सिंह, सुरेन्द्र एवं परिहार, डी.एस. (2022) तहसील बागेश्वर में पर्यटन की समस्यायें और सम्भावनायेंः सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. के माध्यम से, International Journal ofApplied Research, Vol. 8 (3), pp. 360-374 (https:èèdoi. orgè10.22271èallresearch. 2022.v8.Be.9589).

13. सिंह, रा. (2007). सोर (मध्य हिमालय) का अतीत, दिल्लीः मल्लिका बुक्स, पृ. 165।

14. हरिमोहन (2003). उत्तरांचल में पर्यटन नए क्षितिज, (प्रथम संस्करण) नई दिल्लीः तक्षशिला प्रकाशन।

15. त्रिपाठी, के.एन. (2020). उत्तराखण्ड़ एक समग्र अध्ययन (एकादश संस्करण), इलाहाबादः बौद्धिक प्रकाशन, पृ0 180–222।

16. Agarwal, M.And Pathak, P. (2014). Exploring possibilities of ecotourism in the economicAnd sustainable development of Kumaun region. IJTEMT, Vol. 111, Issue-VI, pp. 22-28.

17. Cabeca, S.M. (2022). Post-pandemic tourism: opportunities for creative tourism. PEOPLE, International Journal of Social Sciences, Vol. 8, Issue-3, pp. 86-106 (DOI- https://doi. .org/10.20319/pigss.2022.83.86106).

18. Gill, N.And Singh, R.P. (2013). Socio-economic impactAssessment of tourism in Pithoragarh district, Uttarakhand. IJARSGG, Vol. 1, Issue-1, pp. 1-7.

19. Jayara, S.J. (2017). Home-stay tourism in Uttarakhand: opportunitiesAnd challenges. Jouranal ofAdvance Management Research, Vol. 5, Issue-5, pp. 52-59.

20. Mehdi, S.A. (2013). Rural mountain turism management in Pithoragarh. Kumaon Himalayas.ProblemsAnd Prospects, pp. 1-20.

21. Parihar, D.S. (2021). Study of suitable sites for tourism development in the Gori Ganga watershed Kumaun Himalaya by using remote sensingAnd GIS.ACADEMICIA:An International Multidisciplinary Research Jouranal, Vol. 11, Issue-12, pp. 321-28 (https:èèdoi.orgè10.595 8è2249-7137.2021.02695.1).

22. Parihar, D.S. (2022): Impacts, challengesAnd opportunities in tourism industries due to COVID-19 pandemic in Himalayan state Uttarakhand, India. Management Challenges and Opportunities duringAndAfter Pandemic Situations (edit. Dr. N. KumarAndA. Gupta) in Vandana Publications, pp. 111-131.

23. Rajeev, R., Singh, S.V., Chauhan, H.S.And Kumar, V. (2022). Factor influencing yoga tourism in Uttarakhand:A case study of patanjali yogpeeth. IJTSRD, Vol. 6, Issue-2. pp. 292-298.

24. Rana, S., Pravin, P.J., ShysuAnd Patnaik, S. (2011). Ecotourism in Himalayasy:A case study of Jaunsar region (Uttarakhand, India). ACADEMIA:Accelerating the World Research, pp. 1-22.

# 13. FRAGMENTED HOLDINGS: A CASE STUDY OF REMOTE & INACCESSIBLE VILLAGES OF CENTRAL HIMALAYA, INDIA

***Anita Pande***

**Abstract**

Fragmentation of land holding is hypothesized to be a striking factor contributing to a poorer competency of hill agriculture. Present investigation illustrates the changing distribution pattern and its causative factors of varying land holding classes under different villages. New classification of land holding classes is adopted, viz. Semi-marginal farm-size, Marginal farm-size, Small farm-size, Medium farm-size and Large farm-size. The objective of present investigation would be fulfilled on the basis of the hypothesis, i. e. 'Land is more fragmented in small size land holding than in large size land holding'. This is because the small class possesses separated families as a result of which the old ancestral land is divided among separated families while the large class has joint families where ancestral land is not divided so far. Apart from this scenario, the caste dominance of particular caste under different land holding class is a prominent associating factor for the disintegration of land holdings thus creating variations among small class and large class. Here it seems pertinent to note the effect of caste in land holding distribution. Another set of hypothesis may be 'Cropland fragmentation is more common at lower altitude (near settled area) than in remote high altitude area'

This is because of the fact that land holding in higher altitude possesses big plots as this is the recent encroachment of land by the individual family or by the families of new generation and it has not been divided so far. The inhabitants possess more land in high altitude than in low altitude, in general. The low altitude land (old settled area) is basically an ancestral land of residents which has been divided among the families of new generation. It is noteworthy that joint families are less in comparison to separated families. Again there is effect of caste and family structure causing variations in the distribution pattern of land holdings among low and high altitude. Apart from this scenario, there is another set of appealing circumstances for the disintegration of land holdings: a) The existence of village (along with each parcel of land it cultivates) is found at two different hills located at a substantial distance (about 3 to 4 kilometers) and here some members of the family permanently stay at one place and some at the other. b) The village itself is cut apart into two ways off settings, and here residents of the village give reasons of fodder crisis forcing them to set up an additional house with small farm in a far off location. c) The village is extended across the single hill with topographic and climatic diversities and here a different culture prevails that the whole community migrates between low altitude and high altitude settlement. Movement agenda is adjusted by the needs of different crops preferred at two altitudes. The advantages and disadvantages conferred by consolidation ought to be investigated for designing consolidation packages readily acceptable to the people and easily implemental by the Government.

**Keywords**

Fragmented holdings, marginal farm-size, small farm-size, medium farm-size, large farm-size, caste-structure, low altitude and high altitude.

## Introduction

Landholding is an important socio-economic factor which greatly affects the farmer's decision regarding choice of crop, land conservation and farm development. Land ownership maps and data can be used for establishing priorities for land conservation and development. For instance, leased or settled public land should be treated with conservation measures first to serve as demonstrations for private farms. Owner- cultivated lands/farms may receive higher priority than rented lands; etc. Land ownership data will also provide information for land use adjustment and settlement opportunities.

The primary objective is to study the changing distribution pattern and its causative factors of varying land holding classes and to examine the factors influencing fragmentation of landholdings commonly regarded as a major obstacle to agricultural development in Central Himalaya. The villages under study fall in Pranmati watershed of Central Himalaya extending in between $30^0$ 4'45" N to $30^0$12'29" N latitudes and $79^0$29'2" E to $79^0$36'39" longitudes in Uttarakhand state.

## Methodology

The landholding status is studied under various phases: Owned, Leased in, Leased out, Barren/Underutilized, Net Cultivated. A comparative study has been made based on the landholding data of 1993-94 and 2010-2011 to identify the status of landholding fragmentation/distribution and its causative factors in Pranmati Watershed.

Agricultural Census of India has classified the agricultural holdings in 14 classes which have been grouped into 06 categories, viz. i. Sub-marginal (Up to 0. 02 ha), ii. Marginal (0. 02-1. 0 ha), iii. Small (1. 0 - 2. 0 ha), iv. Semi-medium (2. 0 - 4. 0 ha), v. Medium (4. 0 -10. 0 ha), vi. Large (10 ha or more). Keeping in view the minimum and maximum range of the area of landholding (an average of 0. 16 to 2. 24 has in 1993-94 and 0. 007 to 2. 306 has in

2010-2011) within studied villages, the application of agricultural census based classification does not seem suitable for the adequate picture of landholding distribution in the watershed. Swarup (1993) in his study on Garhwal Himalaya found that in a hilly context the classification adopted by agricultural census is not quite suitable because in hilly areas even the medium sized landholdings with an area of 4. 0 to 10. 0 ha each is factually a large landholding. So a new classification of landholding classes is adopted. This classification is based on following logics:

a) Maximum and minimum range of the area of landholding

b) With a view that an equal interval of landholding classes will point out the proportionate fragmentation of landholdings either in increasing order or decreasing order

c) To point out the proportionate distribution of average landholding area under changing landholding classes, so a reasonable comparative study among landholding class as well as village can be made; viz. Below 0. 02 ha: Semi-marginal Farm-size; 0. 02-0. 5 ha: Marginal Farm-Size; 0. 5 to 1. 0 ha : Small Farm-size; 1. 0 to 1. 5 ha : Medium Farm-size and Above 1. 5 ha : Large Farm-size. This classification has been kept uniform for all villages so as to enable comparisons within village and also to provide a general picture of the watershed.

**III. Status of fragmented holdings**

***i. Spread of plots within the village:*** First and foremost, the fragmentation of holdings is observed within the village. Each Family has a central house but also builds a small house in each parcel of land it cultivates. Thus, within a revenue village, there is more than one house owned by a family. Apart from this scenario, the inhabitants also converted the land in Kharaks (Kharaks are seasonal/temporary settlements used for livestock rearing) into agricultural land and permanent houses, e. g. Fig. 1.

**Table 1: Villages and Kharaks**

| Sn | Main Village (altitude in metres amsl) | Kharak (altitude in metres amsl) |
|---|---|---|
| 1. | Kolpuri (2100-2350) | Sonsia (2600) |
| 2. | Gerur (1875) | Nanoli (2300) |
| 3. | Bursol (1900) | Prant (2100-2200) |
| 4. | Bunga (1800-2000) | Chame (2360-2520) |
| 5. | Ratgaon (1720-2700) | Kunj (2960) & Ahinkol (3040) |

Source: Field Survey

***ii. Spread of plots in other village :*** Table 2 exhibits following characteristics regarding the spread of plots in other villages:

- In the instances where village itself exists at two distinct hills separated by a considerable distance and here some members of the family permanently stay at one place and some at the other. The people of the main village Gerur and Bunga also own land in Kalchunda located at a distance of about 3-4 Kilometres from the main village Gerur.

- Often, the village itself is cut apart into two ways off settings, and here residents of the village give reasons of fodder crisis forcing them to set up an additional house with small farm in a far off location, e. g. Bunga is the main village but a few people also own land at Pie located at a distance of 3 Kilometres.

**Table 2: Spread of plots in other villages**

| Sn. | Main Village | Other Village | Distance (km) |
|---|---|---|---|
| 1. | Dungri* | Dungri chak Ruisan | 3. 0 to 5. 0 |
| 2. | Dungri chak Ruisan* | Dungri | 3. 0 to 5. 0 |
| 3. | Durmola | Dungri | 1. 0 to 1. 5 |
| 4. | Durmola | Dungri chak Ruisan | 4. 0 to 6. 0 |
| 5. | Kaira | Dungri | 3. 0 to 4. 0 |
| 6. | Gerur | Kalchunda | 3. 0 to 4. 0 |
| 7. | Gumar | Bunga | 4. 0 to 5. 0 |
| 8. | Ratgaon Upari chak* | Ratgaon Gunth | 3. 0 to 4. 0 |
| 9. | Ratgaon Gunth* | Ratgaon Upari chak | 3. 0 to 4. 0 |

Other Village Distance (kms)

* These are independent Revenue villages but the land in both villages belongs to the same inhabitants of the same village.

Source: Field Survey

***iii. Vast e**xtension of village across the single hill:* Another set of scenario has been noticed in village Ratgaon. This village is extended (4 kms) in between the altitude of 1720 m to 2700 m across the single hill with topographic and climatic diversities. Though people own two or more land parcels separated by a distance, dissection of village is not visible because of contiguity of agricultural land. Here a different culture prevails that the whole community migrates between low altitude and high altitude settlement. Movement agenda is adjusted by the needs of different crops preferred at two altitudes. Small satellite villages appear to be of more recent origin than the large contiguous villages. (Saxena et al: 1994).

***iv. Forest land encroachment:*** The inhabitants are in practice to encroach the land towards Reserve

Forest area. The visible cause seems diversion towards cash crop (potato and amaranths- *amaranthus paniculatus*) production. Clear felling is never practiced to create agricultural patches in the forest matrix. These are relatively flat land patches characterized by fairly deep fertile soils (locally called as 'Gantha') devoid of standing trees that have been tilled to raise the crop. To testify their age old ownership, encroachers establish at least one cattle shed and fence the patch by stone wall. The vary fact that they employ Nepali labours for raising the wall, indicates that they are not weak at least on the economic front.

***v. Multi - location of plots under different farm-size:*** Fragmentation scenario is also studied by the number of location of plots in different farm-size. Table 3 illustrates farm-size wise average number of locations of plots in the studied villages.

**Table 3: Average Number of Locations of Plots under different Landholding Classes**

| Landholding Class (ha) | Number of Locations of Plot |
|---|---|
| Sub-marginal Up to 0. 02 | 3 to 7 |
| Marginal 0. 02 - 0. 5 | 15 to 17 |
| Small 0. 5 - 1. 0 | 22 to 25 |
| Medium 1. 0 - 1. 5 | 60 to 65 |
| Large > 1. 5 | 63 to 70 |

Source: Field Survey

***vi. Landholding per capita (ha):*** Table 4 exhibits that per household landholding is decreasing from 1993-94 to 20110-11 (Fig. 3).

**Table: 4 Landholding per capita (ha) under different villages in Pranmati Watershed**

| Sn | Village | 1993-94 | 2010-11 |
|---|---|---|---|
| 1. | Dungri | 0. 421 | 0. 256 |
| 2. | Ruisan | N. A. | 0. 203 |
| 3. | Darmola | N. A. | 0. 144 |
| 4. | Kolpuri | 0. 833 | 0. 670 |
| 5. | Gerur | 0. 523 | 0. 313 |
| 6. | Bursol | 0. 879 | 0. 474 |
| 7. | Gumar | 0. 398 | 0. 142 |

Source: Field Survey

***vi. Landholding per household (ha):*** It is evident from Table 5 that per capita landholding is decreasing 1993-94 to 2010-11 excluding Gerur where a different scenario is observed and here landholding increased from 1993-94 to 2010-11 (Fig. 4). This is because…….

**Table 5: Landholding per household (ha) under different villages in Pranmati Watershed**

| Sn | Village | 1993-94 | 2010-11 |
|---|---|---|---|
| 1. | Dungri | 0. 107 | 0. 080 |
| 2. | Ruisan | N. A. | 0. 055 |
| 3. | Darmola | N. A. | 0. 036 |
| 4. | Kolpuri | 0. 124 | 0. 099 |
| 5. | Gerur | 0. 082 | 0. 093 |
| 6. | Bursol | 0. 133 | 0. 085 |
| 7. | Gumar | 0. 074 | 0. 030 |

Source: Field Survey

## III. Analysis and Discussion

***Average size (ha) of agricultural land:*** Average size (ha) of agricultural land under varying landholding classes in 1993-94 (Table 6 Fig. 2a) and 2010-11 (Table 7 Fig. 2b).

The first hypothesis for the present study: **'*Land is more distributed/fragmented in small size landholding than in large size landholding'*** is quantified by Table 8. This is because the small class possesses separated families (evident from maximum number of households and minimum average family size under small class) as a result of which the old ancestral land is divided among separated families while the large class has joint families (evident from minimum number of households and maximum average family size under large class) where ancestral land is not divided so far.

> Apart from this logic, the caste structure/dominance of particular caste under different landholding class is a prominent associating factor for the distribution of landholding (fragmentation) to create variations among small class and large class. Here it seems pertinent to note the effect of caste in landholding distribution: The Rajputs are basically landholders so they possess more landholding in comparison to other castes. Villages are dominated by Rajput caste. Due to the position of landholder along with maximum population of Rajput caste have created the variation in landholding distribution between small and large class.

Thus the dominance of Rajput caste among multi-caste structure under small class constituted by separated families and omni presence of Rajput caste (single caste structure) under large class constituted by joint families is responsible for the more fragmentation of landholding in small class and less fragmentation in large class (Fig. 5).

The second hypothesis for the present study: ***'Cropland distribution/fragmentation is more common at lower altitude/near settled area than in remote high altitude area'*** is quantified by Table 9 & 10. This is because the landholding in higher altitude possesses big plots because this is the recent encroachment of land by the individual family or by the families of new generation so it is not divided so far. The inhabitants possess more land in high altitude than low altitude, in general.

The low altitude land (old settled areas) is an ancestral land of residents which is divided among individual families or among the families of new generation. It's noteworthy that joint families are less in comparison to separated families. Again there is effect of caste and family structure causing variations in the distribution (fragmentation) pattern of landholdings among low and high altitude as discussed already. The aforementioned facts can be justified by the interpretation of landholding distribution (number of plots/ha) under different landholding class in different villages (Fig. 6 &7):

**i. Marginal Class**

Under marginal class maximum fragmentation (142. 31 ± 98. 94) is noticed in case of village Kulburi followed by Bursol (136. 63 ± 90. 86) and Gumar (124. 64 ± 119. 91) while minimum fragmentation (64. 40 ± 39. 37) is noticed in case of Dungri followed by Gerur (87. 25 ± 76. 88).

The fragmentation of landholding in directly related with the multi-caste distribution of land under marginal class. The cause of maximum fragmentation of land in aforesaid three villages (Kulburi, Bursol and Gumar) is that the marginal class possesses higher percent of Rajputs in comparison to other caste - In Kulburi, out of total households, 28. 30 % belong to marginal class constituted by 26. 41% of Rajputs while only 1. 89% of SCs. In Bursol, out of total households, 40. 32% belong to marginal class constituted by 37. 09 % of Rajputs while only 3. 22 % of SCs. In Gumar, out of total households, 71. 43% belong to marginal class constituted by 66. 67% of Rajputs only 4. 76% of SCs.

The cause of minimum fragmentation of land in later two villages – Dungri and Gerur is that the other caste (Brahmins and SCs) constitute higher percent than Rajputs. In Dungri, out of total households, 32. 5% belong to marginal class constituted by 20. 0% of SCs and 12. 5% of Brahmins. In Gerur, out of total households, 68. 86% belong to marginal class constituted by 27. 02% of Rajputs, 21. 62% of Brahmins and 16. 23% of SCs. The data (caste structure of Gerur) reflects one complexity that here the maximum land belongs to Rajputs followed by other castes (Brahmins and SCs). However, the percentage of other caste (Brahmins and SCs) constitutes major part (37. 85%) of marginal group. It is evident from this discussion that here the land fragmentation is low because of the dominance of other caste which possess less land in comparison to Rajputs.

**ii. Small Class**

Under small class maximum fragmentation is found in village Bursol (70. 79 ± 25. 71) followed by Kulburi (59. 17 ± 47. 32) while minimum fragmentation is observed in village Gumar (19. 93 ± 7. 88) followed by Dungri (22. 04 ± 9. 73). Village Gerur (42. 98 ± 34. 45) lies in between maximum and minimum fragmentation.

In both cases of maximum fragmentation is caused by the dominance of single caste (Rajputs). In case of Kulburi and Bursol, out of total households, 38. 70% and 47. 17% belong to small class and this total percentage under respective villages contributes to the Rajput caste only.

Medium type of fragmentation (in comparison to maximum and minimum) in Gerur is caused by multi-caste structure. Here out of total households, 16. 23% belong to small class constituted by 6. 76% of Rajputs, 8. 11% of Brahmins and 1. 36% of SCs. Thus a multi-caste structure (among which the percent of other caste (9. 47%) exceeds the Rajput caste) of Gerur under small class resulted into the uneven distribution of landholding in Gerur.

The cause of minimum fragmentation of land is the dominance of other caste in comparison to Rajputs. In Gumar, out of total households, 23. 80% belong to small class Constituted by single caste i. e. SCs. In Dungri, out of total households, 20. 0% belong to small class constituted by 12. 5% of Rajputs, 2. 5% of Brahmins and 5. 0% of SCs. Thus, again an uneven distribution of castes has contributed to low fragmentation.

**iii. Medium Class**

Under medium class, maximum fragmentation is noticed in case of Gumar (48. 03 ± 0). Similar fact is observed in case of Kulburi (38. 09 ± 8. 95) and Bursol (32. 94 ± 6. 69) while minimum fragmentation is found in case of Dungri (22. 85 ± 19. 89) followed by Gerur (29. 86 ± 14. 47).

The case of Gumar is an exception due to the single household of this village under medium class. Here, out of total households, 4. 76% fall under medium class which belongs to only Rajput caste. In Kulburi and Bursol,

out of total households, 24. 53% and 9. 68% households belong to medium class and constitute the Rajput caste as a whole. Thus, the dominance of Rajput caste resulted into high landholding fragmentation.

In case of the minimum fragmentation: In Dungri, out of total households, 27. 5% belong to medium class constituted by 25. 0% of Rajputs and 2. 5% of SCs. While in Gerur, out of total households, 14. 86% belong to medium class constituted by 12. 16% of Rajputs and 2. 7% of Brahmins. Its evident from aforediscussed data that here other castes do not contribute for the minimum land fragmentation as noticed in rest cases.

Here, the noteworthy fact is that a sharp variation does not exist among the minimum and maximum fragmentation of landholdings within the villages as compared to marginal and small classes. The term minimum is used here for the purpose of comparative study to differentiate lower and higher value. The cause of this slight variation is that medium class has only Rajputs under each village. Only Dungri and Gerur contribute to the negligible percent of other castes i. e. 2. 5% and 2. 7%. And this minuet involvement of other castes in these two villages created some fluctuations in landholding distribution as discussed in the preceding paragraph.

**iv. Large Class**

Table 1 reveals that Gumar and Kulburi do not possess households having the large landholding class. Bursol possesses maximum fragmentation (32. 34 ±7. 11) while rest two villages - Dungri and Gerur has minimum or comparatively less fragmentation (18. 19 ±10. 93 and 19. 87 ± 9. 98 respectively). Again in all these three villages, large class is constituted by Rajput caste. Out of total households of each village, 11. 29% in Bursol, 4. 05% in Gerur and 17. 5% in Dungri belongs to large class. Only 2. 5% of households of SCs are involved in case of Dungri.

In short, the large landholding class has comparatively less variation among villages which indicates that the large landholders have big plots in comparison to small landholders.

**Facts about the absence of 'large farm – size'** (Case of village Gumar and Kulburi)

The large size landholding class is absent from village Gumar and Kulburi. In case of Gumar, due to low population (148) pressure the expansion of new agricultural land is not of that much extent to cover the large class; sufficient forest cover is also an associating factor for the concentration of the habitation at one place.

It's noteworthy that wherever in the watershed the new land is encroached or expended towards higher altitude, this is especially for cash crop but in Gumar potato production is negligible or less in comparison to other villages. The unsuitable land/soil for potato cultivation (as enquired from the inhabitant) has discouraged villagers for expansion of land. One contrasting feature of this village is that maximum concentration is towards paddy cultivation in comparison to wheat and potato. Per ha production of paddy is satisfactory than wheat, while in rest villages paddy cultivation is almost ignored due to negligible yield of crop.

The village has an easy approach to Pine forest (below village) as well as Oak forest (above village). The inhabitants use Pine leaves for animal bedding and Oak leaves for fodder; consequently manure produced by Pine leaves is an opposing factor for the good quality and production of potato crop. Similar fact is also noted in case of village Dungri where at low elevation (due to presence of Pine forest) potato quality and yield both are low in comparison to high (due to presence of Oak forest) elevation. (Its noteworthy that Oak leaves possess sufficient nutrients and NPK rich and quick decomposition capacity so provides more nutrients while Pine leaves low nutrients and are of acidic nature which looses the fertility of soil). On the basis of visual observations and local knowledge, it is studied that low altitude potato plots where Pine leave manure is a common practice are heavily under the grip of white Groub (Kurmula) insect which use to harm the crop. Apart from this, topography also seems to be an associating factor for the low fertility of soil. Gumar is situated along convex slope and absolute west facing aspect. Due to convex topography the upper fertile soil cover is washed away by rains/snow on account of its inappropriate geomorphological situation.

In case of Kulburi, the cause of absence of large landholding class is that the inhabitants do not have encroached in too higher areas from the old settled village. Although the inhabitants have almost left their old settled area (the houses are deserted and only agricultural activities are there) yet they migrated towards higher approximately 100 m higher than the old settled village. The apparent cause is the already high altitude location (2200 m) of the village which is expended only up to 2300 m. On account of its appealing geographical location for potato cultivation (gentle slope, sloppy fields, Oak forest cover providing moist conditions and fertile soil), the residents are not diverted for the encroachment towards further remote high altitude. In short, the easy availability of fertile land due to its high altitude location bounded the people for further expansion of land consequently large class landholding is not available in Kulburi.

**Table 6: Average size (ha) of agricultural land under varying landholding classes in Pranmati Watershed (1993-94)**

| Landholding Class (ha) / Village | Marginal < 0. 5 | Small 0. 5 – 1. 0 | Medium 1. 0 – 1. 5 | Large > 1. 5 |
|---|---|---|---|---|
| Dungri | 0. 16 ± 0. 11 | 0. 67 ± 0. 09 | 1. 21 ± 0. 16 | 1. 93 ± 0. 10 |
| Gumar | 0. 22 ± 0. 12 | 0. 69 ± 0. 16 | 1. 02 ± 0 | N. A. |
| Bursol | 0. 26 ± 0. 12 | 0. 68 ± 0. 13 | 1. 25 ± 0. 24 | 1. 81 ± 0. 39 |
| Gerur | 0. 24 ± 0. 14 | 0. 71 ± 0. 17 | 1. 11 ± 0. 15 | 2. 24 ± 1. 54 |
| Kulburi | 0. 21 ± 0. 13 | 0. 69 ± 0. 13 | 1. 20 ± 0. 09 | N. A. |

Source: Field Survey

**Table 7: Average Size (ha) of agricultural land under varying landholding classes in Pranmati Watershed (2010-11)**

| Landholding class (ha) / Village | Sub-marginal Up to 0.02 | Marginal 0.02 - 0.5 | Small 0.5 – 1.0 | Medium 1.0 – 1.5 | Large > 1. 5 |
|---|---|---|---|---|---|
| Dungri | 0.007 ± 0.0004 | 0.107 ± 0.0042 | 0.663 ± 0.037 | 1.447 ± 0 | N.A. |
| Ruisan | 0.012 ± 0.0006 | 0.127 ± 0.0046 | 0.680 ± 0.031 | 1.131 ± 0.098 | 1.563 ± 0 |
| Darmola | 0.013 ± 0 | 0.130 ± 0.011 | N.A. | N.A. | N.A. |
| Kulburi | 0.01 ± 0.002 | 0.212 ± 0.061 | 0.610 ± 0.021 | 1.163 ± 0.040 | 2.306 ± 0 |
| Gerur | 0.008 ± 0.0006 | 0.117 ± 0.007 | 0.652 ± 0.049 | 1.34 ± 0.094 | N.A. |
| Bursol | 0.007 ± 0.0006 | 0.148 ± 0.009 | 0.650 ± 0.019 | 1.11 ± 0.046 | 1.830 ± 0 |
| Gumar | 0.135 ± 0.0013 | 0.092 ± 0.008 | 0.660 ± 0.030 | N.A. | N.A. |

Source: Field Survey

**Table 8: Average number of plots/ha under varying landholding classes in Pranmati Watershe**

| Landholding class (ha) / Village | Marginal < 0.5 | Small 0.5 – 1.0 | Medium 1.0 – 1.5 | Large > 1.5 |
|---|---|---|---|---|
| Dungri | 64.90 ± 39.37 | 22.04 ± 9.73 | 22.85 ±19.89 | 18.19 ± 10.93 |
| Gumar | 124.64 ±119.91 | 19.93 ± 7.88 | 61.25 ± 0 | N.A. |
| Bursol | 136.63 ± 90.86 | 70.74 ± 25.71 | 32.94 ± 6.69 | 32.34 ± 7.11 |
| Gerur | 87.25 ± 76.88 | 42.98 ± 34.45 | 29.86 ±14.47 | 19.87 ±9.98 |
| Kulburi | 142.31 ± 98.94 | 59.17 ± 47.32 | 38.09 ± 8.95 | N.A. |

Source: Field Survey

**Table 9: Average number of plots/ha in low altitude under varying landholding classes in Pranmati Watershed**

| Landholding Class (ha) / Village | Marginal < 0. 5 | Small 0. 5 – 1. 0 | Medium 1. 0 – 1. 5 | Large > 1. 5 |
|---|---|---|---|---|
| Dungri | - | - | - | - |
| Gumar | 143. 71±127. 69 | 40. 42 ± 21. 73 | 48. 03 ± 0 | N. A. |
| Bursol | 175. 82 ±117. 76 | 85. 47 ± 39. 30 | 38. 24 ±14. 60 | 36. 93 ± 08. 64 |
| Gerur | 138. 68 ±194. 22 | 64. 42 ± 46. 60 | 38. 35 ±15. 59 | 32. 17 ± 41. 47 |
| Kulburi | 209. 11±170. 81 | 68. 96 ± 46. 62 | 60. 75 ± 23. 80 | N. A. |

Source: Field Survey

**Table 10: Average number of plots/ha in high altitude under varying landholding classes in Pranmati Watershed**

| Landholding Class (ha) / Village | Marginal < 0.5 | Small 0.5 – 1.0 | Medium 1.0 – 1.5 | Large > 1.5 |
|---|---|---|---|---|
| Dungri | - | - | - | - |
| Gumar | 75.48 ± 45.41 | 15.09 ± 10.24 | N.A. | N.A. |
| Bursol | 80.22 ± 65.58 | 53.18 ± 00.19 | 41.98 ± 35.98 | 29.70 ±16.74 |
| Gerur | 30.98 ± 28.16 | 24.90 ± 29.95 | 07.01 ± 05.59 | 12.15 ± 17.14 |
| Kulburi | 91.20 ± 41.57 | 38.15 ± 18.35 | 21.52 ±13.04 | N.A. |

Source: Field Survey

Fig. 2 Average Size (ha) of Agricultural Land under varying Landholding Classes in Pranmati Watershed

a. 1993-94

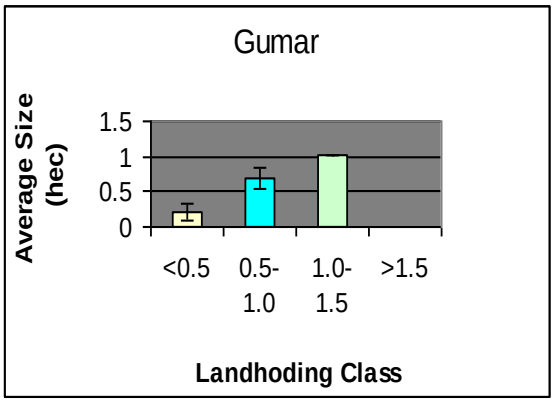


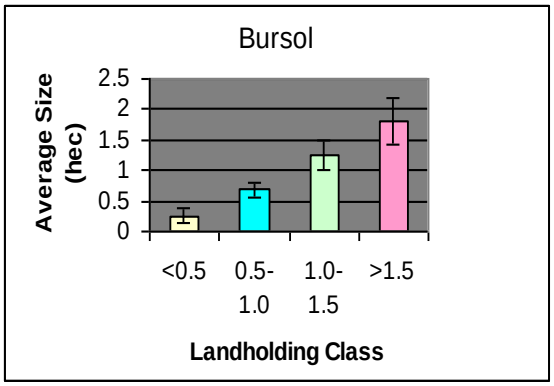


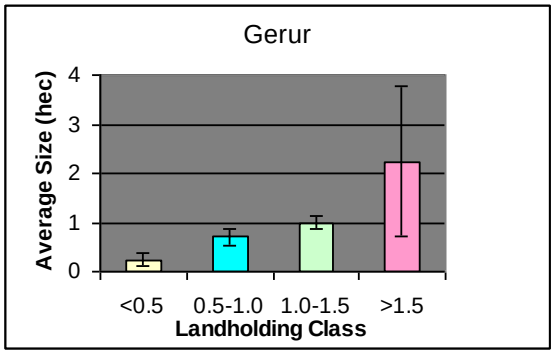


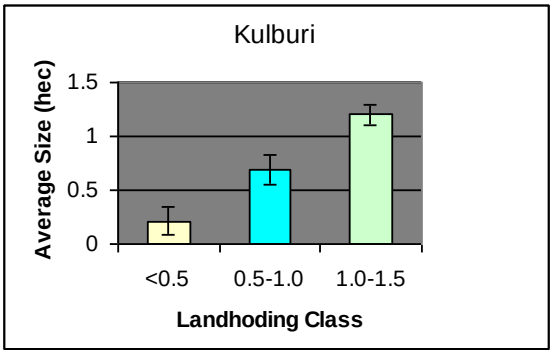


b. 2010-2011

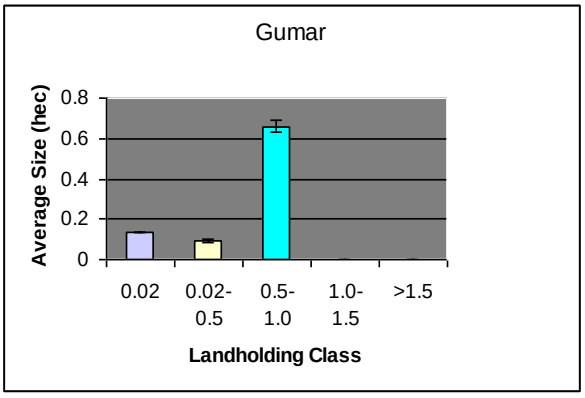


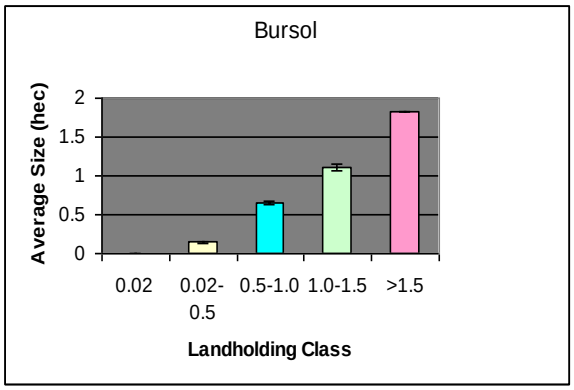


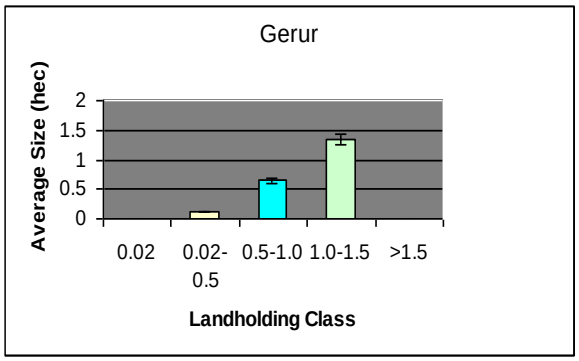


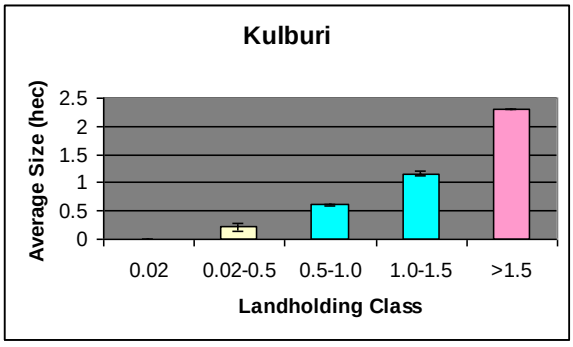

1993-94 **2010-2011**

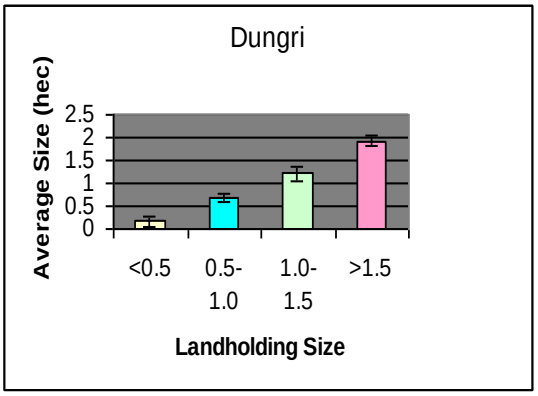


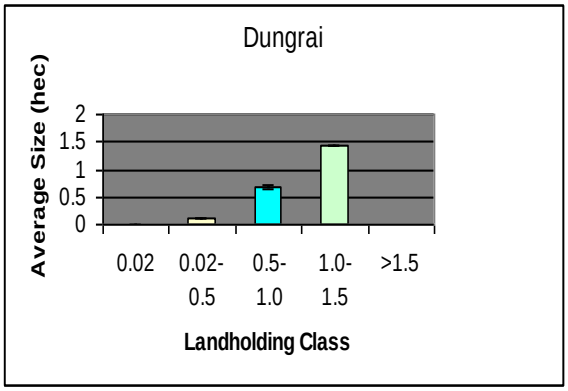


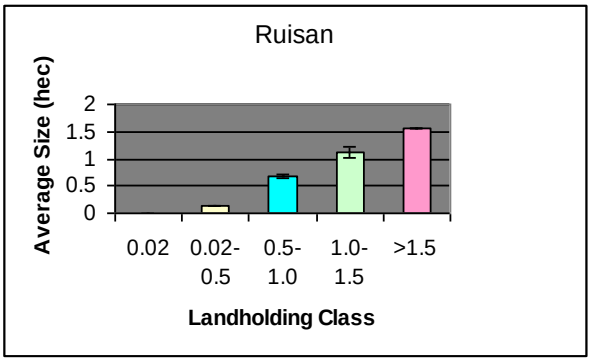


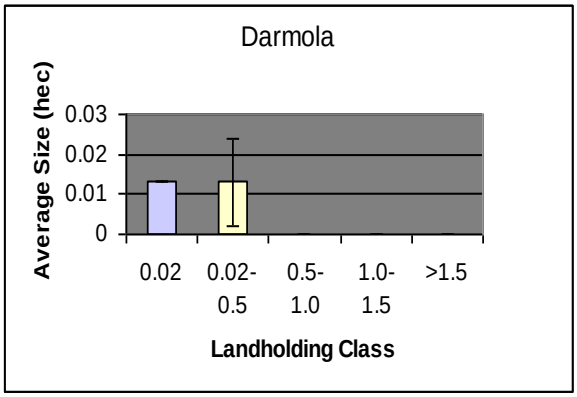

Fig. 3 Per Capita Landholding in Different Villages in Pranmati Watershed

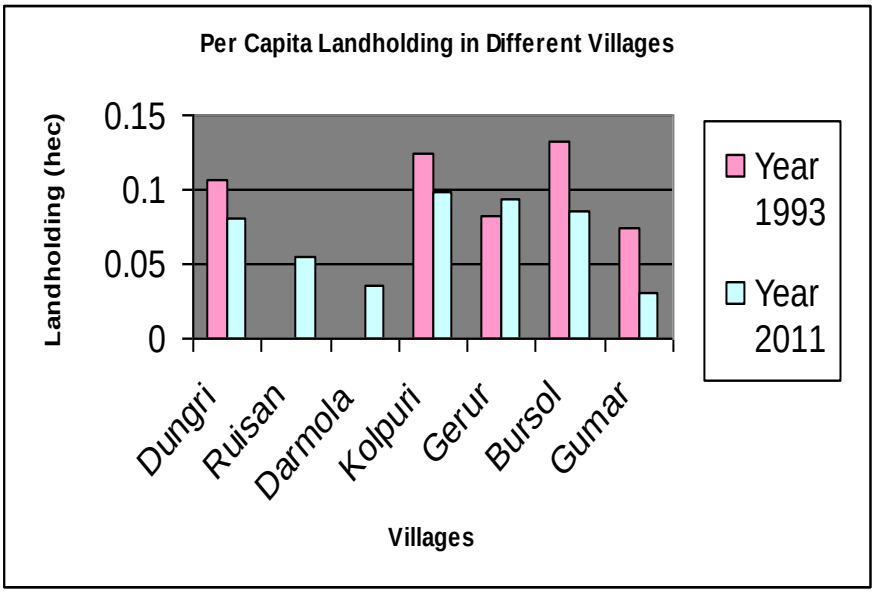


Fig. 4 Per Household Landholding in Different Villages in Pranmati Watershed

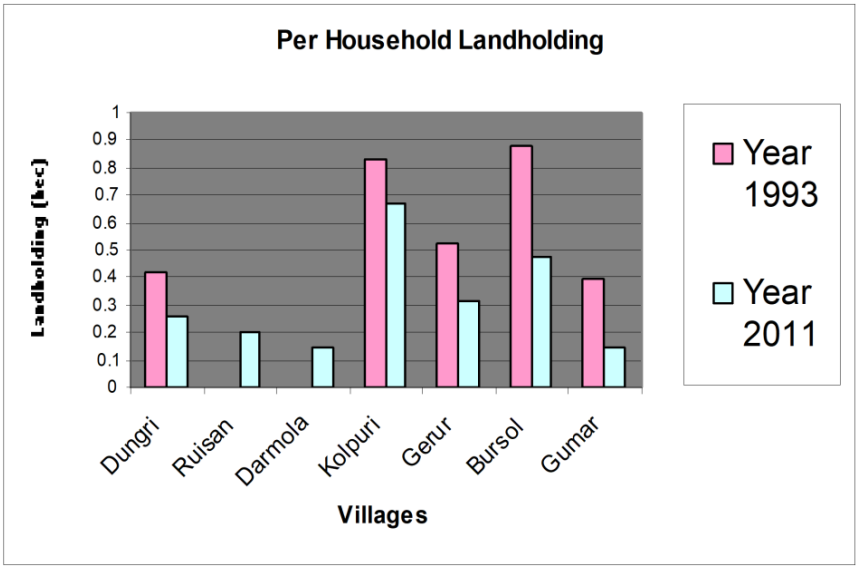

Fig 5 Average Number of Plots/ha Under Different Landholding Classes in Pranmati Watershed

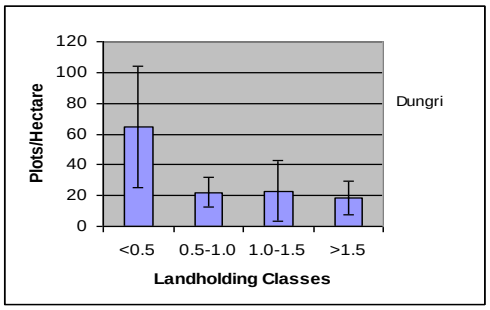


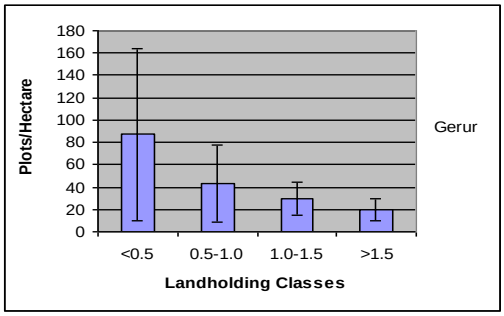


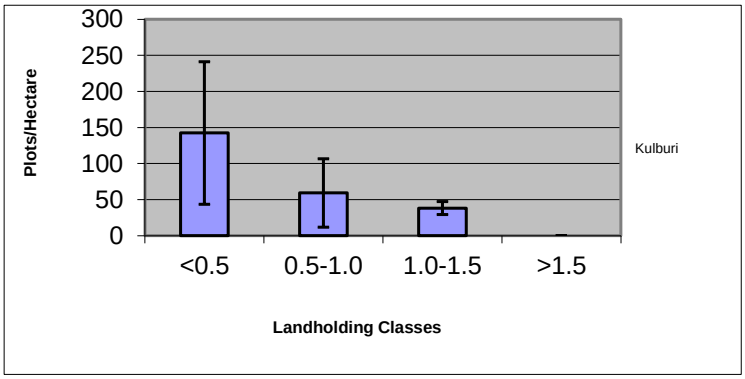


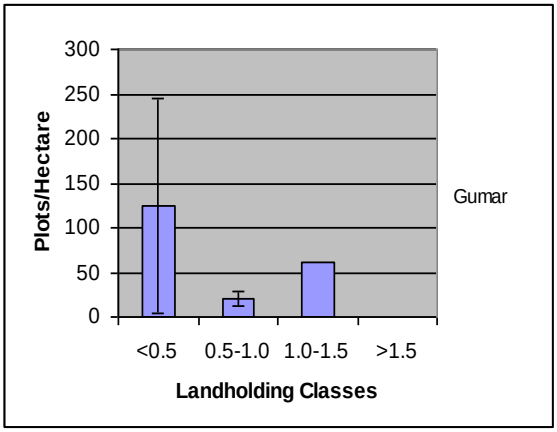


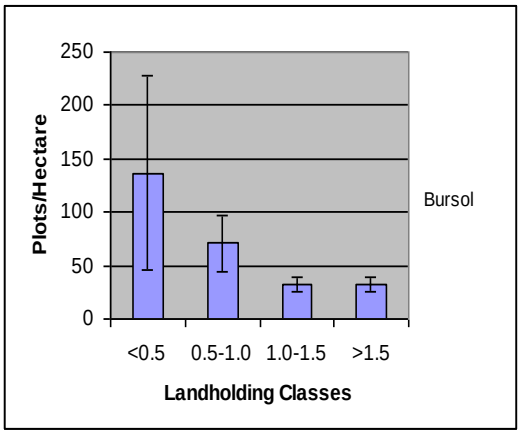

Fig 6 Average Number of Plots /ha in Low Altitude under Varying Landholding Classes in Pranmati Watershed

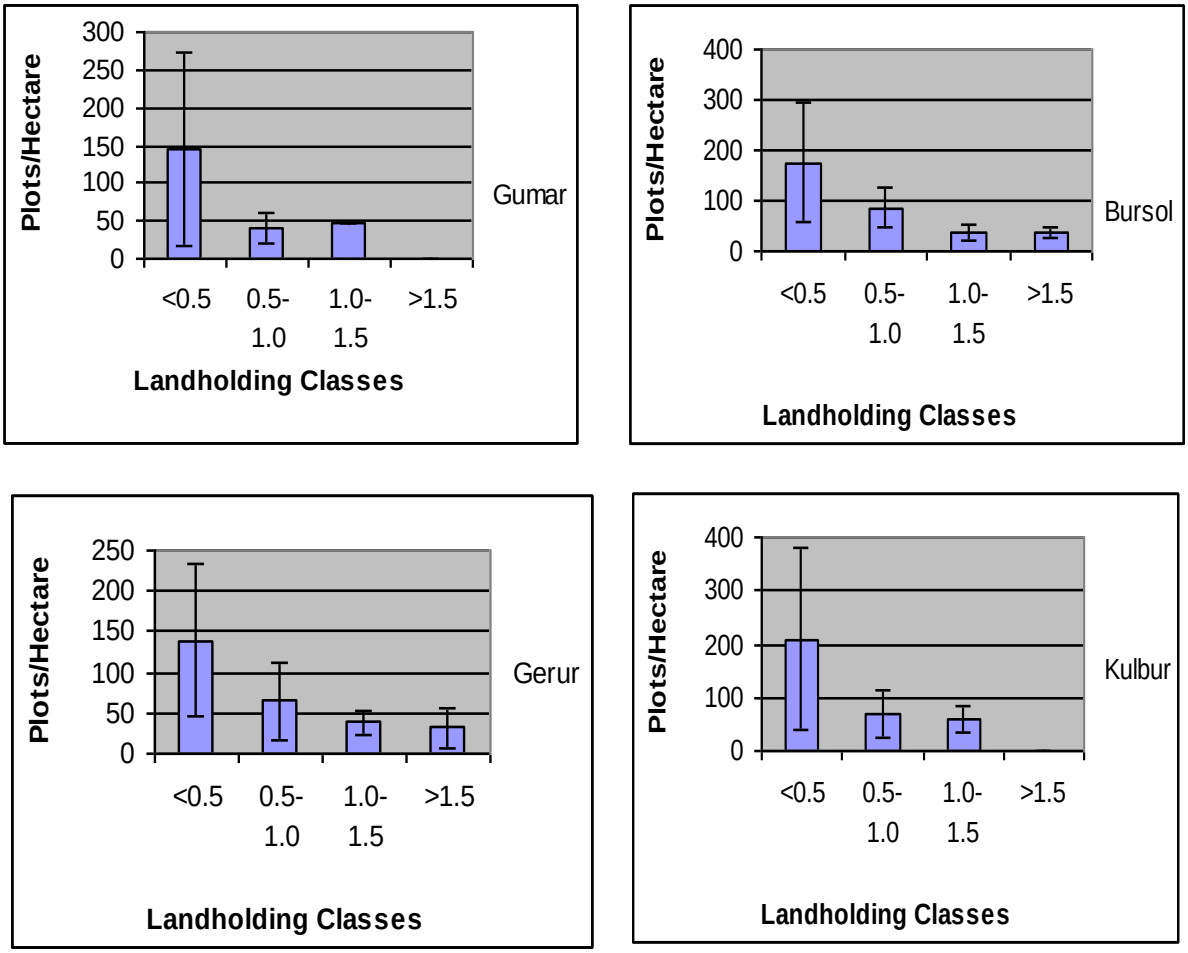


Fig 7 Average Number of Plots /ha in High Altitude under Varying Landholding Classes in Pranmati Watershed

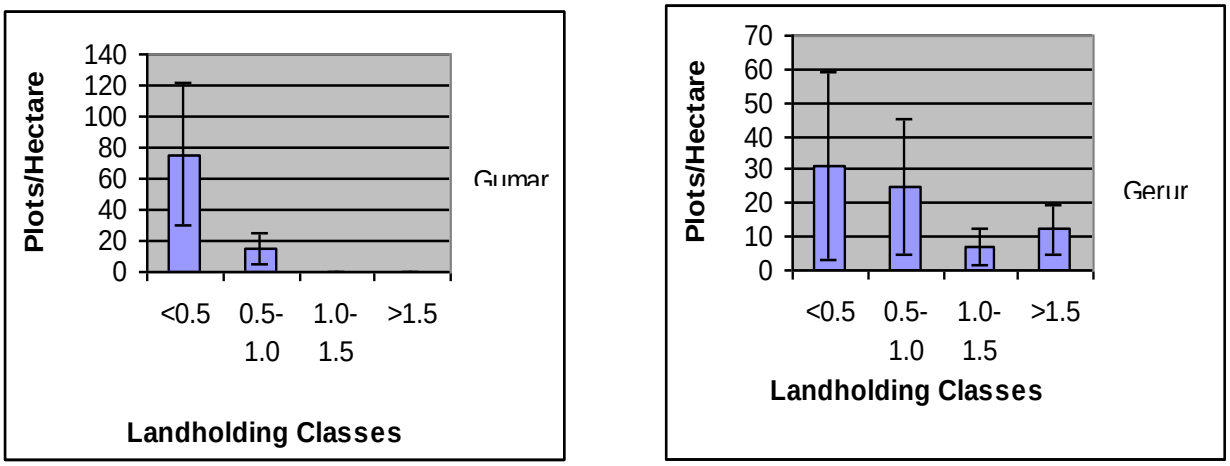

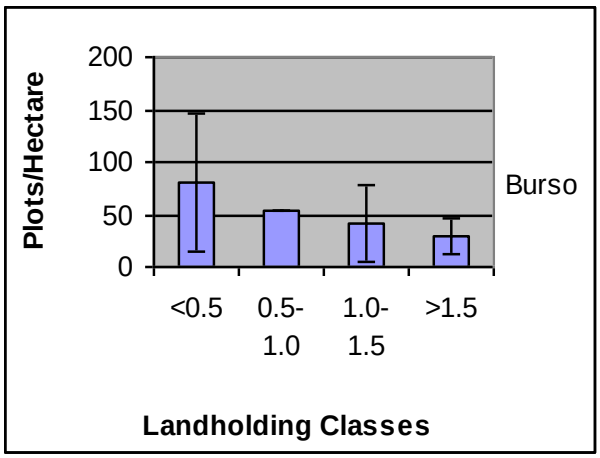


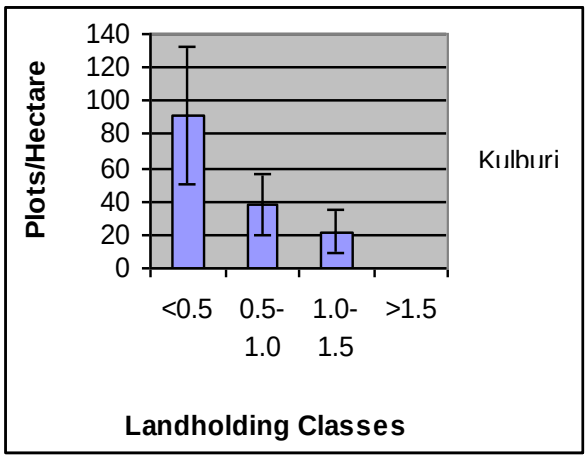


**Action Plan**

The following action plan can be projected for the proper management of '**Fragmented Landholdings'** of Central Himalayan terrain:

i. The landholding of absentee landholders should be given to either the people who are present there or to those who are basically needy on returnable basis for the fulfillment of their subsistence needs.

ii. If the valley area land is provided to anybody the area should be less and more if it is in high altitude because the per unit production of valley area/irrigated area is more than high altitude area for the consolidation of land.

iii. Government should frame varying policies for the conservation of forest land, viz. :

a) Food grains should be provided to the inhabitants in subsidized rates. This is because the land has become uneconomic due to continuous division of family and inhabitants are migrating towards high altitude ultimately encroaching Reserve Fores

b) LPG should be provided to the inhabitants in subsidized rates.

**Acknowledgement**

Some part of this study has been carried out in NORAD Project; so, I am grateful to my research team for their help during field study in the tough Himalayan terrain and discussions. I am appreciative to Dr D. S. Rawat, Senior Scientist, GBPIHED, Kosi, Katarmal, Almora for brainstorming sessions throughout discussions as well as reviewing the manuscript with great care and patience. My special gratitude is to the funding agency NORAD, Norway, for financial assistance.

**References**

•Saxena, K. G., Rao, K. S., Pande, Anita, Rana, Urmila, Sen, K. K., Nehal and Majila, B. S. (1994): ***Sustainable Rural Development, Opportunities and constraints. A Micro Level Analysis of Pranmati Watershed in Uttar Pradesh Himalaya***. Shiva Offset Press, 14 Old Cannaught Place, Dehradun.

•Agricultural Census of India

•Swarup, R. (1993):

•Binns, B. O. 1950: The Consolidation of Fragmented agricultural holdings. FAO Agricultural studies, 11.

•Kiing, R. L., s. Burton, 1981: An Introduction to the Geography of Land Fragmentation and Consolidation. Occasional Paper 8, Leicester University Geography Department.

## ABOUT THE BOOK

Uttarakhand is a divine destination for tourists. A number of tourists visit the state due to its Scenic Beauty, Pilgrim Sites, Adventure Sports Activities, Rich Culture & Heritage, Food, Fairs & Yatras and much more. The book focuses on the rich heritage, culture and tourism in Devbhoomi Uttarakhand. This book is a collection of research papers and articles contributed by eminent academicians and scholars. We hope this book will be helpful for further research in this field to develop the tourism and culture in state.

## ABOUT THE EDITORS

**Dr. Pratibha Negi**, is presently working as Assistant Professor in Government Post Graduate College, Berinag, Soban Singh Jeena University, Almora (Uttarakhand) from the year 2017. She is M.A., Ph.D. in Economics and a number of research paper /articles have been published in reputed journals and books. She has participated in 28 national and intenational seminars and authored a book. She is life member of Uttar Pradesh & Uttarakhand Economic Association.

**Dr. Jitendra Kumar Lohani**, is presently a faculty member in Department of Economics, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital. He is M.A. Ph.D. (Economics) and cleared Uttarakhand State Eligibility Test (USET). Having specialization in Regional Economics and Quantitative Economics he has more than 12 years teaching experience at Graduation, Post-Graduation and Pre-Ph.D. Classes level. Dr. Lohani has authored 03 books namely "Uttarakhand Ki Arthvyavastha", "Arthashastra Mein Ganitiya Evam SankhyikiyaVidhiyan" & "Palayan – Ek Vyatha" and has edited 02 books namely "Covid-19 : Impact, Challenges and Opportunities in Uttarakhand" & "Uttarakhand : Sanskriti Evam Paryatan". He has contributed more than 35 research papers / articles in National and International reputed journals with high impact factor including UGC Care listed journals & chapters in edited books and also presented paper in seminar and conferences time by time. He is also a reviewer of a reputed national journal. He is awarded a 'Certificate of Excellence' & 'Certificate of Appreciation' for his meritorious work in 2019 and also awarded by 'Prof. Y.P.S. PangtiResearch Award' in the year 2022.

KUNAL BOOKS
(Publisher & Distributors)
4648/21, First Floor, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi-110 002 (India)
Ph.: 011-23275069, Mob.: 9811043697, 9868071411
E-mail: kunalbooks@gmail.com
Website: www.kunalbooks.com

₹795/-

ISBN 978-93-95651-36-3

CULTURE AND TOURISM OF UTTARAKHAND

Dr. Pratibha Negi
Dr. Jitendra Kumar Lohani

KUNAL

# CULTURE AND TOURISM OF UTTARAKHAND

Dr. Pratibha Negi
Dr. Jitendra Kumar Lohani

# Culture and Tourism of Uttarakhand

# Culture and Tourism of Uttarakhand

**Dr. Pratibha Negi**
**Dr. Jitendra Kumar Lohani**

**KUNAL BOOKS**
**New Delhi - 110002 (India)**

**KUNAL BOOKS**
4648/21, 1st Floor, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002
Phones: 011-23275069, 9811043697
E-mail: *kunalbooks@gmail.com*
Website: *www.kunalbooks.com*

**Culture and Tourism of Uttarakhand**

© Editors
ISBN- 978-93-91651-36-3
First Published, 2023

**Front Page (Photo & Design) : Manoj Lohani**

*All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher.*

Publisher & Editors are not responsible for the opinions and views expressed by authors in their respective papers included in this volume.

---

Published in India by Prem Singh Bisht of Kunal Books, and printed at **Trident Enterprises**, Noida, (U.P.).

# FOREWORD

Tourism and culture are closely associated and influence each other. culture which embodies the lifestyle, customes, traditions, heritage, assumptions, beliefs, shared values and ideals of a region, enhance the attractiveness of a tourism product and destination and make them more distinct offering special tourism experience before the potential tourists. In this process tourism development tends to influence the culture to adopt mainstream practices of the land and in turn reduces its distinctiveness to some extent. The intricacies of this relationship offers tremendous opportunities for local people to find direct or indirect employment, raise their income, and standard of living. The distinctive products and destinations secure competitive advantage in terms of tourist arrivals, stays, spendings, diverse activities and popularization of specific cultural features among others. In view of tourism sector becoming more and more a buyers market being hugely demand driven, the cut throat competition among suppliers of tourism products and services at global level, the role of culture in tourism development emerges as a crucial variable.

Himalayan region of Northern and north eastern area from Jammu and Kashmir to Himanchal and Uttarakhand in the western region and north east attracts tourists for their

picturesque beauty, snow clad mountains, rivers, flora and fauna, biodiversity, clean and cold climate and above all by Virtue of their distinctive cultural heritage which varies by regions and sub regions.

Uttarakhand Himalayas are known for pilgrimage, religious and spiritual tourism , adventure and eco tourism, hillside tracking, animal parks, winter games , various sports, cultural events and festivals. Every year hundreds of thousands pilgrims visit char dham

Yatra from Haridwar - Rishikesh to Badrinath, Kedarnath, Gangotri, yamunotri in Garhwal region and Jageshwar, Purnagiri, Baijnath, Bageshwar , Gangolihat in Kumaun region of the state. Moreover, tiger park of Ramnagar, lakes of Nainital, the climatic beauty of mussori, Dehradun, Ranikhet, Kausani, Srinagar attracts large number of inbound and outbound tourists in each season.

In addition to distinctive cultural features of Uttarakhand, the state is preferred by the tourists for its peaceful environment, political and social stability, educational resources , conducive tourism infrastructure, well educated and hospitable people .

The young state in attempting to raise its own revenue is faced with the need to leverage on the promising tourism sector and thereby raise revenue on the one hand and fulfill the huge developmental needs and aspirations of the people.

I am delighted that Dr. Pratibha Negi of economics department in collaboration with Dr. Lohni as co- editor is publishing an edited book on 'Culture and Tourism of Uttarakhand " documenting reserch papers in this important theme . I hope that the publication would provide new insights on the subject. I wish my best wishes for grand success of the publication.

**Prof. C. D. Suntha**

**Director, Higher Education of Uttarakhand,**

**Haldwani, Uttarakhand**

# PREFACE

The present book "***Culture and Tourism of Uttarakhand***" is an attempt to focus on the rich culture and tourism of Uttarakhand. Uttarakhand is also known as 'Devbhoomi – Land of God' has a rich heritage culture in all respects of life. As per the history, historical evidences, epic and other literature shows the rich heritage and culture of this region from food to dresses, from folklore to fairs, from historical monuments to pilgrimage sites, from scenic sites to adventure sites, from fertile plains to snow cladded mountains makes a bunch of activities for the tourism. This all reflects the diversified and rich culture and when it is mixed with the tourism it highlights the state as remarkable. The glaciers, mountains, rivers, lakes, dense forests, pre-historic evidences, legendry history, scripted history, historical monuments, daily life of people with folk music, delicious nutritious food etc. and much more make Uttarakhand heaven in terms of tourism.

The temples which were constructed during Katyuri and Chand dynasty are still mike witness for the ancient rich culture of the region. Clothes, food, fairs, traditions, folk-artand much more shows the rich cultural heritage of the state. Every year a number of pilgrims visit the temples of Uttarakhand which were the centres of their belief. The other dimensions of tourism are also being practiced in state. The rich culture, heritage, food, temples, natural beauty etc. all are interconnected to attract the tourist in Uttarakhand. The tourism is lifeline for the livelihood for a number of people in state. It is direct as well as indirect employment providing sector and have much more importance in generating revenue

also. A number of eminent scholars has contributed their views and research in this regard.

***Professor C.D. Suntha*** in his paper"Strategies of Tourism Development in Uttarakhand: A Marketing Approach" has discussed the marketing approach for tourism. He describes that the traditional approach of tourism development which relies heavily on supply side with focus on tourism products, attractions, transportation and accommodation etc. have limitations mainly in respect of changing customers choices and preferences. He discusses this issue in three parts. In first part 'The concept of tourism marketing' 'analysing the nature and potential of tourism development in Uttarakhand' in second part and 'strategies for the application of tourism marketing approach' in third part of his paper.

***Liladhar Mishra***, in his paper "*Tourism In Uttarakhand: Types, Policies, Challenges & Way Forward*" suggests that the protection of environment is must while making the policies for tourism in state. He suggests that–"To preserve the ecological balance in the mountains, more sustainable tourism practices should be adopted due to the growing carbon footprint of tourism worldwide".

***Jitendra Kr. Lohani et.al.*** in their paper named "*Culinary Tourism In Kumaun : Potential For Employment And Economy*" has discussed the rich traditional cuisine of Kumaon region to promote Food destinations to promote tourism in this region. While focusing on this dimension of tourism a number of employment opportunities will generate and will helpful in reducing the pace of migration from this region.

***Mahendra Singh et.al.*** focused on Pilgrimage tourism in their study named "*Pilgrimage Tourism in the Holy Land of Rudraprayag District, Central Himalaya"*they suggest thatthe government should develop a pilgrimage corridor for pilgrimage tourism development in the state.

***Abhimanyu Kumar***, has contributed his study on Four-Wheeler Passenger Cab in Uttarakhand. He has conducted

his study in four districts of the state and he concludes his study as with that, the company can produce witheconomies of scale, reduce cost per unit and increase production efficiency resulting in serving customers efficiently and economically. Most importantly, compared to local brands, companies with global brands will beable to penetrate into markets more easily, regardless to high or low status seeking consumers, global brands with proper strategywill enable them to achieve an enhanced global image.

***Minaxi Goswami***, in her paper "*Scope, Challenges and Issues for Tourism Development in Berinag Region, Uttarakhand*" discusses the tourism scope in Berinag. She has described a number of tourist destinations in and around the study region. She suggests that there should be Improvement of Accessibility in Berinag Region, Planned development of tourist destination should be done in Berinag Region Tehsil, Efficient public transportation system should be developed in Berinag Region, There should be Promotional measures of Berinag Region, Development of Infrastructure in Berinag Region, Good management of natural calamities in Berinag Region, Local community should be encouraged to take participation in the tourism planning for structural development of tourist destinations. So that the development took place and Berinag become a more attracting tourist place.

***Monika Aswal***, has described the food culture and cuisines of Uttarakhand. The importance of traditional food of state is highlighted by the author. All these food items are full of nutrients which are grown by them in their fields and for this they use their traditional seeds and agriculture. These food items provide nutrients. The place remains in the kitchen, which is being passed on from one generation to another generation. Today, while Uttarakhand is progressing in the field of tourism, the dishes of Uttarakhand are getting fame all over the country. People of different states in India, liked by Uttarakhand food is taken and eaten.

***Bhawana Mahara Rautela and Devki Nandan Joshi*** contributed their paper in '*Changing Dimension of Tourism in Uttarakhand*' they discussed about the scope of tourism in Uttarakhand. They described about the state that it has mesmerizing environment of the oak and deodar canopy, snow filled mountains and chilly wind always attract thousands of tourist from the globe but still it is known only for religious purpose mostly tourist come here for religious purpose but there are vast opportunity for the other dimension of tourism so the study deals with the new dimensions of tourism like eco-tourism, dark tourism, doom tourism, agri tourism, rural tourism, natural tourism etc.

***Shalini Pandey*** focuses on Pilgrimage in Uttarakhand and its challenges and opportunities in state. In her paper she has discussed the profile of different tourist places which are renowned for Pilgrimage in state. Some challenges and opportunities has been discussed by her in the paper.

***Asha Parchey*** in her paper '*Pilgrimage Tourism in Uttarakhand*' discuss the possibilities of Pilgrimage tourism in Uttarakhand as the state is well known for its Char-Dham yatra the author has described the travel and pilgrimage tourism scope in the state.

***Divya Oli et.al.*** focuses on one dimension of tourism in Uttarakhand which is known as Rural Tourism. In their study named "*Rural Tourism: A Ray of Hope to Reduce the Migration in Uttarakhand*" they discuss the scope and the initiatives taken by the government to promote the rural tourism in Uttarakhand.

***Jitendra Iohani, Arti Joshi & Arun Singh***, has contributed their paper in Rural Tourism. They find this dimension of tourism as a key of hope to convert back the deserted villages or ghost villages to inhabited villages. For the same they have described some suggestions to improve the all dimension of tourism under the umbrella of rural tourism in state. So that it can be helpful in reducing migration from the state.

***Ashok Kumar & Ashish Tamta*** in their paper named *"Analysis of Resident's Perception with Mobility Choices: A Case Study of Nainital Township"* discussed that tourist and tourism system cannot be blamed for environmental issues, but host community and the humankind altogether have their share in these pertaining issues. Their paper is concerned with evaluating perceptions of host community of Nainital on different modes of mobility and acceptability for change in terms of their mobility behaviour.

***Anju Joshi et.al.*** in their study discussed the cultural diversity of Uttarakhand and its linkage with tourism in state. They discuss that Uttarakhand is known as Dev Bhoomi, Pilgrim Circuit with famous destinations like Char DhamYatra including Badrinath, Kedarnath, Gangotri, Yamunotri, Hemkund Sahib, Rishikesh, Haridwar are main spots. Fairs and Festivals like Kumbh Mela, Uttarayni mela, Nanda devi mela etc.are some important attraction of state. In Uttarakhand, tourism is considered to be an important vehicle for economic and social development through earning the gross revenue and foreign exchange earnings. Tourism in Uttarakhand is still in a discovering stage Tourismno doubt has immense potential but it needs to have a sound.

***Dr. Pooja Singh & Mr. Aditya Pratap Singh*** in their study named "Sustainable Tourism Management in Uttarakhand: Balancing Cultural Preservation and Economic Development" concluded that - However, there are also several challenges facing the tourism industry in Uttarakhand, including infrastructure, seasonality, capacity-building, environmental degradation, and cultural preservation. It is important that these challenges are addressed in order to ensure that tourism in Uttarakhand is developed in a way that is economically, socially, and environmentally sustainable. There are several opportunities for further development in the tourism industry in Uttarakhand. By focusing on areas such as adventure tourism, cultural tourism, medical tourism, and sustainable

tourism, the state could generate significant economic benefits while also preserving its unique cultural and environmental heritage.

We wish that these articles / research papers in the book covering various aspects of tourism and culture in Uttarakhand will be very useful for students, research scholars etc. for making their focus in this area for their further study in future.

We are thankful to the all-mighty God for his blessings to complete this work in a scheduled time. A great obligation to the parents and family members, without their support and blessings it is not an easy task to complete. We are also obliged to our senior and junior colleagues, office staff and other persons who supported to complete this task. We are also very much thankful to those great valuable contributors who contribute their valuable article / research papers and finally a great than to Mr. Prem Singh Bisht, Kunal Books, New Delhi and their supporting staff for bringing out the volume in a record time.

**Dr. Pratibha Negi**

**Dr. Jitendra Kumar Lohani**

# CONTENTS


***Foreword*** ***v***

***Preface*** ***vii***

***Our Valuable Contributors*** *xv*

**1. Strategies of Tourism Development in Uttarakhand : A Marketing Approach**

*Prof. Chandra Datt Suntha* **1**

**2. Tourism in Uttarakhand: Types, Policies, Challenges & Way Forward** **13**

*Dr. Lila Dhar Mishra*

**3. Culinary Tourism in Kumaun : Potential for Employment and Economy** **25**

*Dr. Jitendra Kumar Lohani, Dr. Pratibha Negi & Arti Joshi*

**4. Pilgrimage Tourism in the Holy Land of Rudraprayag District, Central Himalaya** **31**

*Mahendra Singh, D.S. Parihar & Neeraj Kumar*

**5. A Study of Four Wheeler Passenger Tourist Cab State of Uttarakhand** **44**

*Dr. Abhimanyu Kumar*

**6. Scope, Challenges and Issues for Tourism Development in Berinag Region, Uttarakhand** **54**

*Dr. Meenakshi Goswami*

**7. Food Culture and Cuisines of Uttarakhand** **63**

*Dr. Monika Aswal*

**8. Changing Dimension of Tourism in Uttarakhand 73**

*Bhawana Mahara Rautela & Devki Nandan Joshi*

**9. Pilgrimage in Uttarakhand: Opportunities and Challenges 84**

*Dr. Shalini Pandey & Dr. Dinesh Joshi*

**10. Pilgrimage Tourism in Uttarakhand 93**

*Dr. Asha B. Parchey*

**11. Rural Tourism: A Ray of Hope to Reduce the Migration in Uttarakhand 104**

*Divya Oli, Rashmi Bhatt & Sarika Verma*

**12. Rural Tourism in Uttarakhand : A Hope for Turning 'Ghost Villages' to 'Inhabitated Villages' 112**

*Dr. Jitendra Kumar Lohani , Arti Joshi & Arun Singh*

**13. Analysis of Resident's Perception with Mobility Choices: A Case Study of Nainital Township 122**

*Ashok Kumar & Ashish Tamta*

**14. Cultural Diversity of Uttarakhand and it's Linkage with Tourism Sector 147**

*Dr. Anju Joshi, Dr. Pratibha Rawal*
*Dr. Sarawati Bisht & Uttkarsha Joshi*

**15. Sustainable Tourism Management in Uttarakhand: Balancing Cultural Preservation and Economic Development 167**

*Dr. Pooja Singh & Mr. Aditya Pratap Singh*

**Index 178**

# OUR VALUABLE CONTRIBUTORS

1. **Prof. Chandra Datt Suntha,** Director, Higher Education of Uttarakhand, Haldwani, Uttarakhand
2. **Dr. Asha B. Parchey,** Assistant Professor, Depatment of Commerce, Govt. P.G. College, Ranikhet, Uttarakhand
3. **Dr. Ashok Kumar**, Assistant Professor, Kumaun University, Department of Tourism, 'The Hermitage', Nainital, Uttarakhand
4. **Dr. Ashish Tamta,** Assistant Professor, Uttarakhand Open University, Department of Tourism, Haldwani, Uttarakhand
5. **Dr. Jitendra Kumar Lohani**, Assistant Professor, Department of Economics, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand
6. **Dr. Pratibha Negi**, Assistant Professor, Department of Economics, Government P.G. College, Berinag, SSJ University, Almora, Uttarakhand
7. **Dr. Sarika Verma**, Assistant Professor, Department of Economics, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand
8. **D.S. Parihar**, Faculty, Department of Geography, DSB Campus Nainital, Kumaun University, Uttarakhand
9. **Devki Nandan Joshi**, Assistant Professor, Department of Geography, P.N.G Government PG College, Ramnagar, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

10. **Dr. Abhimanyu Kumar,** Assistant Professor,Department of Sociology, SSJDVSSS Govt. P.G. College, Ranikhet, Uttarakhand
11. **Dr. Lila Dhar Mishra,** Assistant Professor,Department of English, Government P.G. College, Berinag, Pithoragarh, Uttarakhand
12. **Dr. Meenakshi Goswami,** Assistant Professor, Department of Geography, Government P.G. College, Berinag, Pithoragarh, Uttarakhand
13. **Dr. Shalini Pandey,** Assistant Professor,Department of Geography, Government P.G. College, Kanda, Bageshwar, Uttarakhand
14. **Dr. Dinesh Joshi,** Assistant Professor,Department of Commerce, Mahila Degree College, Haldwani, Uttarakhand
15. **Dr. Monika Aswal,** Guest faculty, Home Science Department, Government College, Chinyalisaur, Uttarkashi, Uttarakhand
16. **Dr. Anju Joshi,** IPGGPG College of Commerce, Haldwani, Uttarakhand
17. **Dr. Pratibha Rawal,** IPGGPG College of Commerce, Haldwani, Uttarakhand
18. **Dr. Saraswati Bisht,** IPGGPG College of Commerce, Haldwani, Uttarakhand
19. **Dr. Pooja Singh,** Assistant Professor, Department of Economics, School of Arts, Humanities & Social Sciences, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur, U.P.
20. **Utkarsha Joshi,** G.B.Pant Institute of Engineering & Technology, Pauri Garhwal, Uttarakhand
21. **Divya Oli, JRF,** Department of Economics, DSB Campus Nainital, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand
22. **Rashmi Bhatt,** Department of Economics, DSB Campus Nainital, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

23. **Bhawana Mahara Rautela**, Research Scholar, Department of Geography, P.N.G Government PG College, Ramnagar, Kumaun University, Nainital 244715, Uttarakhand, India

24. **Neeraj Kumar**, Department of Geography, PG College Ranikhet, Kumaun University, Uttarakhand

25. **Mahendra Singh**, Department of Geography, SSJ University Almora, Uttarakhand

26. **Arti Joshi**, Research Scholar, Department of Applied and Reg. Economics, MJP Rohilkhand University, Bareilly, U.P.

27. **Arun Singh,** Department of Economics, D.S.B. Campus, Kumaun University, Nainital, Uttarakhand

28. **Mr. Aditya Pratap Singh,**

# 4

# Pilgrimage Tourism in the Holy Land of Rudraprayag District, Central Himalaya

***Mahendra Singh, D. S. Parihar & Neeraj Kumar***

**Abstract**

*Tourism, especially pilgrimage tourism is a significant practice in Central Himalaya (Uttarakhand Himalaya) for centuries. The Central Himalaya is known as Dev Bhoomi means the* ***'Land of God and Goddess'****. The description of pilgrimages of the State is found in the famous holy religious literature, e.g., the Mahabharata and the Ramayana. Most of the pilgrimages were constructed during the ancient period and renovated by our ancestors. The specific objective of this paper is to present a detailed description of renowned pilgrimages of the Rudraprayag district, Garhwal Himalaya. To attain this objective, relevant related literature and miscellaneous reports have been used. The spatial distribution map of the pilgrimage tourism destinations of the study area has been prepared with the help of the Department of Economic and Statistical Office Rudraprayag using Arc GIS software. The famous pilgrimage destinations of the study area are Kedarnath, Gauri Mai temple, Triyuginarayan, Madhyamaheshwar, Ruchh Mahadev, Kalimath, Omkareshwar, Chandrashila, Tungnath, Basukedar, Agustyamuni temple, Kartik Swami, Tungeshwar Mahadev, Hariyali Devi, Nari Devi temple, Mathiyana Mata temple, Koteshwar and Old Rudranath. A number*

*of national and international tourists irrespective of their religion visit these pilgrimage sites every year.*

**Keywords:** *Pilgrimage Tourism, Religious Places, Garhwal Himalaya, Uttarakhand.*

## INTRODUCTION

Pilgrimage is an important religious-cultural phenomenon which exists in about all the religions of the world, e.g., Hinduism, Islam, Buddhism, Judaism and Christianity. **Barber (1993)** defined pilgrimage by saying, ***"A journey resulting from religious causes, externally a holy site, and internally for spiritual purposes and internal understanding".*** The history of pilgrimage is as old as human civilization. Traditionally, pilgrimage is a journey to holy places based on particular's creed and belief. Nowadays, pilgrimage has become more common across religions with the same pattern and concept (Reader and Walter, 1993). Pilgrimage tourism focuses on the visitation of holy religious places (Kavoura, 2013). Most tourist visits historical monuments and some tourists are motivated to visit sacred religious places because of their belief, faith, architecture and historical values (Kot and Slusarczyk, 2014).

Currently, there is a global rebirth of pilgrimage tourism (Digance, 2006). Pilgrimage is a form of population mobility. A developing multidisciplinary area of study is ***"Mobilities"*** (Hannam et al., 2006; Sheller and Urry, 2006; Urry, 2007). Politically, economically, socially, and culturally, pilgrimages can have a significant impact on the world's trade and health. Due to its extent and spatial effect, pilgrimage is a significant topic that needs spatial movement. Although it has historically been the main source of income for several nations and towns (Barber, 1993; Vukoni, 1996; 2002), pilgrimage also generates other forms of mobility, including trade, cultural exchanges, political movements, and the less desirable spread of diseases and epidemics (Barber 1993).

Pilgrimage is closely related to the cultural phenomenon which has attracted scholar of cultural and tourism geography. They have referred culture as a super organic system and have theorized culture as a terrain, realm, domain and system of signification. The cultural values carve out pilgrimage activities into activities (Mitchell, 1995). Pilgrimage can be considered as a part of the ***'Geography of Religions'*** which focuses on the interpretation of the relationship between culture and the land based on the special reference of religious components (Sopher, 1967).

Religious and pilgrimage tourism is closely related with respect to destination (MacCannell, 1999, and Turner and Turner, 1978). This paper discusses pilgrimage tourism which is a one of the oldest forms of tourism. Pilgrimage is a widespread form of tourism for centuries. The fundamental objective of this paper is to present a detailed account of renowned pilgrimage destination sites of the Rudraprayag district of Garhwal Himalaya, Uttarakhand.

## STUDY AREA

The study area is located in the Garhwal Himalaya region of Uttarakhand state, India. It is located between the 30°10'36" N to 30°48'50" N latitudes and 78°48'46" E to 79°21'45" E longitudes which encompasses an area of 1984 $km^2$ *(Fig. 1)*. The study area varies between the elevations of 549 m to 2757 m having a mean elevation of 1653 m from the mean sea level. The study area is surrounded by district Pauri Garhwal in the south, district Chamoli in the east, Uttarkashi in the north and Tehri Garhwal in the west. Administratively, the study area is divided into four Tehsils *(i.e., Rudraprayag, Ukhimath, Basukedar and Jakholi)* and three developmental blocks *(i.e., Ukhimath, Agustmuni and Jakholi)*. The study area has 336 village Panchayats and 27 Nyaya Panchayat. According to Census Report 2011, the total population of the district was recorded 242285 out of which 114589 were male and the rest 127696 were female.

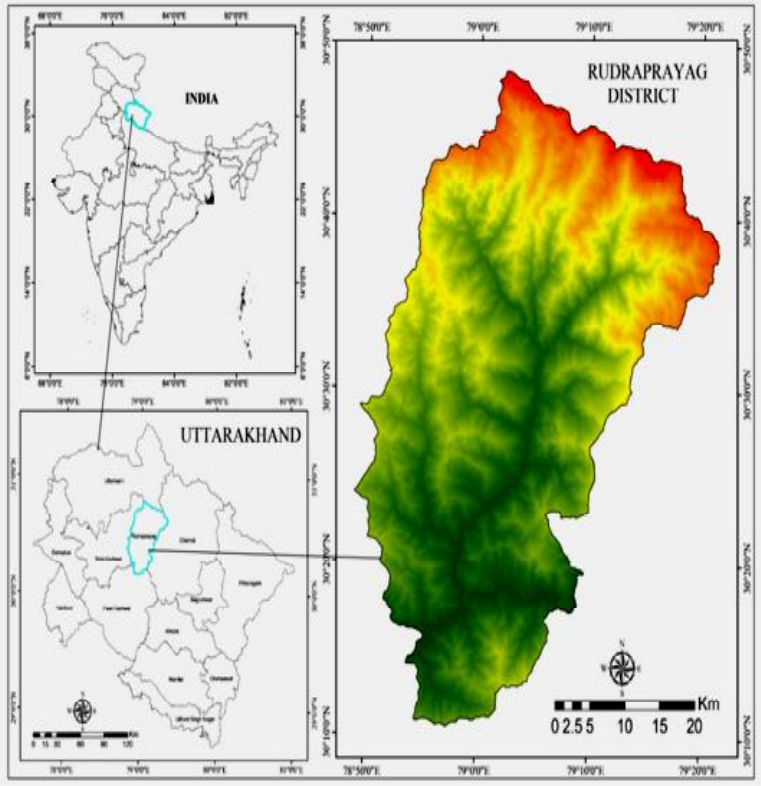


**Figure-1: Location map of the study area, viz., Rudraprayag district.**

## METHODOLOGY

For the present study, the district Rudraprayag has been selected for the study of pilgrimage tourism. A detailed account of the pilgrimage tourism in the study area is presented in this research paper. The present work is completely based on secondary data collected from relevant literature and reports. Different GIS software *(Quantum Geographical Information System and Arc GIS)* tools are used to prepare spatial distribution map of the pilgrimage destinations of the study area. This map was prepared with help of the District Economic and Statistical Office, Rudraprayag district.

## RESULTS AND DISCUSSION

Traditionally, pilgrimage has been an important religious and cultural practice in the study area. The world-renowned pilgrimage destinations such as Kedarnath, Gauri Mai temple, Triyuginarayan, Madhyamaheshwar, Ruchh Mahadev, Kalimath, Omkareshwar, Chandrashila, Tungnath, Basukedar, Agustyamuni temple, Kartik Swami, Tungeshwar Mahadev, Hariyali Devi, Nari Devi temple, Mathiyana Mata temple, Koteshwar and old Rudranath are located in this hilly district of Uttarakhand. The spatial distribution map of famous pilgrimage destinations of the study area is presented in *Figure2*. A number of national and international tourists visit these sacred places every year. A brief description of these pilgrimage sites is presented in the following paragraphs.

***Kedarnath-*** Shree Kedarnath temple is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district on the bank of Mandakini River at an elevation of 3593 m from mean sea level. Kedarnath is considered to be the eleventh best Jyotirlinga out of the twelve Jyotirlinga of Lord Shiva. According to ***'Himalaye Tu Kedar'*** Kedarnath is the best among all the pilgrimages of the Himalayas. In Kedarnath, there is a back part (Peeth) of Lord Shiva (Balodi, 2010). Kedarnath temple offers a mesmerizing sight against a beautiful backdrop of soaring snow-capped mountains. There is a serene, pure aura all around it. Kedarnath's temple is thought to be older than a thousand years. The temple is beautiful in terms of design and construction. The ***"Nandi"*** statue is located near the entryway. The interior walls of the temple have beautiful carvings on them. The Bhairav Temple, Adi Shankaracharya's Samadhi, and Gandhi Sarovar may all be reached from here. Another gorgeous lake, viz., Vasukital is located 8 kilometers away from Kedarnath.

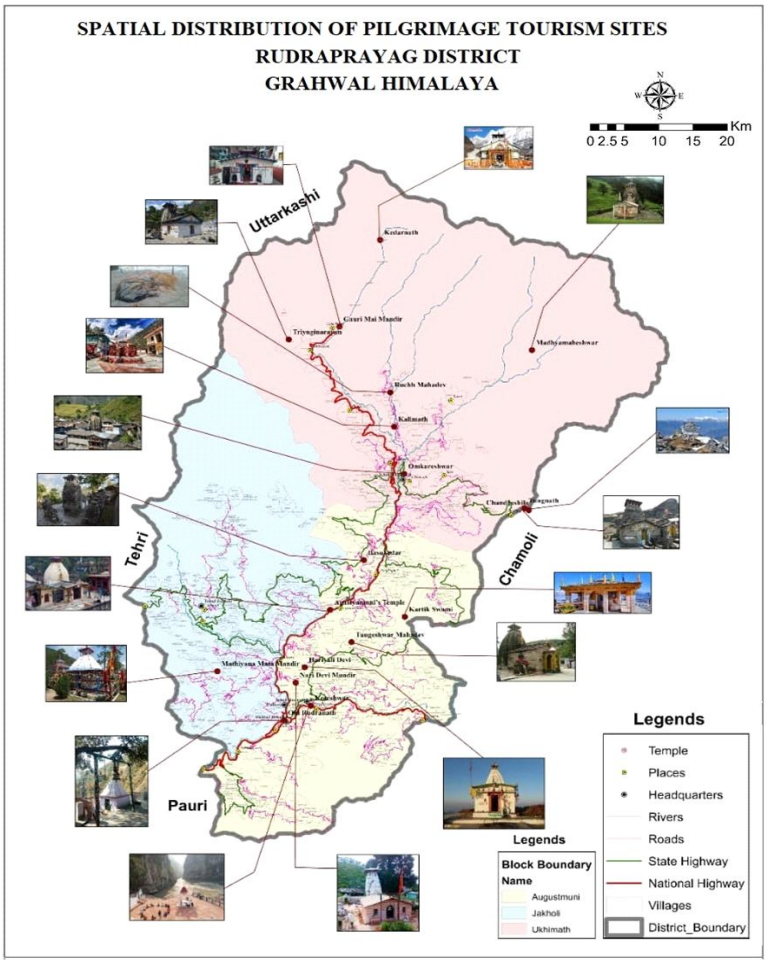


**Figure-2: Spatial distribution of pilgrimage tourism sites in Rudraprayag district, Garhwal Himalaya.**

***Gauri Mai Temple-*** Gauri Mai temple is located in Ukhimath developmental block of Rudraprayag district on the bank of Mandakini River at an elevation of 3247 m from mean sea level *(Fig. 2)*. This temple is dedicated to Goddess Parvati and situated near Gaurikund. According to legend,

Lord Shiva confessed his love for Goddess Parvati here. Lord Ganesha also got his well-known ***'Elephant-Head'*** figure here. Furthermore, there are hot springs in Gaurikund that have been converted into bathing places. As a result, this location is sacred in Hinduism.

***Triyuginarayan-*** Triyuginarayan temple is located in Triyuginarayan village of Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district on the Mandakini river basin at an elevation of 1923 m from mean sea level *(Fig. 2).* Due to its comparable architectural design to the Kedarnath temple, this temple is a popular destination for pilgrims. According to tradition, Triyuginarayan was the capital of the legendary Himavat. There are also three kunds. These are Rudra kund, Vishnu kund, and Brahma kund.

***Madhyamaheshwar-*** Madhyamaheshwar temple is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district near the bank of Madhyamaheshwar Ganga at an elevation of 3497 m from mean sea level *(Fig. 2).* It is the second ***"Panch Kedar"*** to house a Shiva shrine. This shrine is exquisitely situated in a peaceful setting. Due to the close of this temple for six months during the winter season, the worship of Lord Shiva is continued at Ukhimath. Every year millions of pilgrims visit this holy place.

***Ruchh Mahadev-*** Ruchh Mahadev is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district on the bank of Mandhani Ganga at an elevation of 1523 m from mean sea level *(Fig. 2).* In the Kalimath valley, there is Ruchha Mahadev Temple, famous as Adi Gaya. It is believed that the virtue of Adi Gaya is attained by visiting Ruchha Mahadev.

***Kalimath-*** Kalimath temple is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district in the bank of Mandhani Ganga at an elevation of 1280 m from mean sea level *(Fig. 2).* Kalimath is located near Ukhimath and Guptakashi. It is one of the region's ***"Siddha Peethas"*** and is held in high religious regard. Throughout the year, a large

number of devotees visit the Goddess Kali temple located here.

***Omkareshwar-*** Omkareshwar temple is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district near the bank of Mandakini River at an elevation of 1303 m from mean sea level *(Fig. 2)*. Omkareshwar temple in Ukhimath houses an exquisitely made and meticulously preserved Lord Shiva image. There are several well-known legends connected to this temple. Temples to the goddesses Usha, Shiva, Parvati, Aniruddha, and Mandhata can be found all across Ukhimath. Deoria Tal, which stands adjacent, catches the reflection of the Badrinath peak, replicating its magnificence.

***Chandrashila-*** This temple is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district at an elevation of 3456 m from the mean sea level *(Fig. 2)*. Chandrashila is a peak above Tungnath temple which literally translates to ***"Moon Rock"***. Views of the Himalayas include Nandadevi, Trisul, Kedar Peak, Bandarpunch, and Chaukhamba peaks. This location is associated with several legends. According to one legend, Lord Rama meditated here after defeating the demon-king Ravana. According to another legend, the moon-god Chandra spent time here in penance.

***Tungnath-*** Tungnath temple is located in Ukhimath Developmental Block of Rudraprayag district on Chandranath parvat at an elevation of 3680 m from mean sea level *(Fig. 2)*. A 2.5 Feet tall statue of Shankaracharya can be found next to the lingam at this temple dedicated to Lord Shiva. The magnificent Akash Ganga waterfall and the Nanda Devi shrine are both nearby in Tungnath. The breathtaking Chaukhamba, Kedarnath, and Gangotri-Yamunotri peaks further enhance the beauty. According to a well-known tradition, Rishi Vyas warned the Pandavas that they were guilty of murdering their own kin and that their sins would not be atoned for unless Shiva forgave them. Lord Shiva avoided them often because he was aware of their sin. So the Lord took refuge

underground, and his body parts later resurfaced in five different locations. The *"Panch Kedar"* refers to the five locations where the five magnificent temples of Lord Shiva stand. Each is identified by a different part of his body. Tugnath is considered to be the location of his hands. Kedarnath represents his hump; Rudranath represents his head; Kalpeshwar represents his hair and Madmaheshwar represents his navel. Tungnath is a significant shrine of the Hindu religion and millions of pilgrims visit this holy place every year.

***Basukedar-*** This temple is located in Basukedar village of Augustmuni Developmental Block of Rudraprayag district at an elevation of 1357 m from mean sea level *(Fig. 2)*. The Basukedar temple is a well-known temple in Uttarakhand. Lord Shiva is honoured in this temple. This location is on the way to the most sacred Dhams of Kedarnath and Badrinath. This Basukedar temple combines spirituality with scenic beauty. This temple, which dates back 1000 years, was built by Pandavas. This temple is approximately five kilometers from Chandrapuri village via Augustmuni. Yoga practitioners, travelers, and spiritual seekers find spiritual heaven in the area surrounding this temple. The main Basukedar temple is dedicated to Lord Shiva, and there are about 25 other smaller temples dedicated to various gods and goddesses.

***Agustyamuni Temple-*** This temple is located in the Augustmuni Developmental Block of Rudraprayag district at an elevation of 883 m from mean sea level *(Fig. 2)*. Agastya Muni Temple is a well-known temple in the Rudraprayag district of Augustmuni. The Agastya Muni temple is dedicated to the sage Agastya. This ancient temple was built in the South Indian style but later on changes were made for the revival. The main temple houses Agastya Muni's kund and the idol of his disciple Bhogajit. It is believed that the sage Agastya Muni meditated here for many years. The sage Agastya Muni is worshipped in this temple. The temple of Agastya Kund and Lord Shiva are also present on the temple grounds. Sage

Agastya Muni performed penance for the Sun God and Shrividya at this location. This location was given the name Augustmuni after Sage Agastya Muni. This temple holds significant religious significance. Tourists visit this holy temple while on vacation in Augustmuni. The Agastya Muni Temple is one of the most important pilgrimage sites in Augustmuni.

***Kartikswami Temple-*** Kartikswami temple is located in the Augustmuni Developmental Block of Rudraprayag district at an elevation of 2480 m from mean sea level *(Fig. 2)*. Kanak Chauri, a village 38 kilometres from Rudraprayag, is the starting point of a three kilometer journey to Kartikswami. This pilgrimage has a shrine and idol of Lord Shiva's son Kartikeya, is brimming with natural beauty and offers a close-up, panoramic view of the Himalayan ranges for tourists.

***Tungeshwar Mahadev-*** Tungeshwar Mahadev temple is located in Augustmuni Developmental Block of Rudraprayag district at an elevation of 1374 m from mean sea level *(Fig. 2)*. This temple has been standing for centuries. According to legend, the Pandavas came here to do penance. On the way from Chopta to Tunganath Temple, there were many small temples, the remains of which can still be found. There are numerous terracotta style seals and Shiva Parvati figurines on the Temple wall. A very ancient temple held in high regard by many villages, located in the midst of breathtaking natural beauty.

***Hariyali Devi-*** Hariyali Devi temple is located in Augustmuni developmental block of Rudraprayag district on the bank of the Mandakini River at an elevation of 1220 m from mean sea level *(Fig. 2)*. The main Rudraprayag–Karnaprayag route deviates from Nagrasu and proceeds to the Siddha Peetha of Hariyali Devi. It is 37 kilometers from Rudraprayag's largest town, Nagrasu, which is 22 kilometers away. This temple is encircled by mountains and dense forests. Thousands of worshippers attend this location on the days of Janmashtami and Diwali.

***Nari Devi Temple-*** Nari Devi temple is located in Nari village of Augustmuni developmental block of Rudraprayag district at an elevation of 1228 m from mean sea level *(Fig. 2*). For centuries, the temple has been dedicated to Goddess Bhagwati and Lord Tungnath. Shankaracharya founded the Nari Devi temple. This temple is magnificent and a symbol of faith. This temple is one of the most important in Rudraprayag.

***Mathiyana Mata Temple-*** Mathiyana Mata temple is located in Jakholi developmental block of Rudraprayag district at an elevation of 1862 m from mean sea level *(Fig. 2)*. Mathiyana Maa, a maternal deity, is one of the most powerful goddesses in Uttarakhand. Many stories surround her origin: Lord Vishnu cut Mata Sati's lifeless body into 51 pieces while Lord Shiva was wandering in the sky with her dead body. One of the body parts fell in the Bhardar Pati area. Another legend has it that Mathiyana Maa was a girl who married a Tibetan prince hundreds of years ago. Her stepmother and relatives murdered the prince. When her husband was burned in Rudraprayag, she performed Sati, throwing herself on her husband's funeral pyre, and then became a goddess who took revenge on murderers.

***Koteshwar-*** Koteshwar temple is located in Augustmuni developmental block of Rudraprayag district on the holy bank of Alaknanda River at an elevation of 646 m from mean sea level *(Fig.2)*. This temple is three kilometers away from Rudraprayag. The Koteshwar temple is constructed to resemble a cave. It is thought that Lord Shiva meditated here before travelling to Kedarnath. Thousands of followers come here to pray during the months of August and September.

## CONCLUSION

Uttarakhand Himalaya is an important pilgrimage destination for mainly Hindu religious people. There are several pilgrimage tourism destinations with the scenic beauty of nature in the study area, i.e., Kedarnath, Gauri Mai temple,

Triyuginarayan, Madhyamaheshwar, Ruchh Mahadev, Kalimath, Omkareshwar, Chandrashila, Tungnath, Basukedar, Agustyamuni temple, Kartik Swami, Tungeshwar Mahadev, Hariyali Devi, Nari Devi temple, Mathiyana Mata temple, Koteshwar and old Rudranath. A number of national and international tourist visits these pilgrimage sites every year especially during the summer season. The study suggests that the government should develop a pilgrimage corridor for pilgrimage tourism development in the state.

**Acknowledgment:** The authors would like to acknowledge to Mr. Niranjan Prasad, Head of the Department of Economics and Statistical Office, Rudraprayag district, Uttarakhand for his constant support in carrying out this present work especially in the development of spatial distribution map of the pilgrimage sites of the study area.

**Conflict of Interest:** The authors declare no conflict of interest.

## References Cited

1. Balodi, R.P. (2010): Uttarakhand: An Encyclopedia. Binsar Publication, Dehradun, pp. 209-231.
2. Barbar, R. (1993): Pilgrimages. The Boydell Press, London.
3. Digance, J. (2006): Religious and Secular Pilgrimage. In Timothy, D.J. and Olsen, D.H. (eds.) Tourism, Religion and Spiritual Journeys, London: Rout ledge, pp. 36-48.
4. Hannam, K., Sheller, M. and Urry, J. (2006): Editorial: Mobilities, Immobilities and Moorings. Mobilities, Vol. 1, No. 1, pp. 1–22.
5. https://www.chardhamtours.in/uttarakhand/augustmuni/agastya-muni-temple_163.html.
6. Kavoura, A. (2013): Politics of heritage promotion: branding the identity of the Greek state. Tourism, Culture and Communication, Vol. 12, pp. 69-83.
7. Kot, S. and Slusarczyk, B. (2014): Outsourcing reasons and results-survey outcomes discussion. In: The Journal of American Business Review, Cambridge, Vol. 2, No. 2, pp. 13-36.

8. MacCannell, D. (1999): The Tourist: A new theory of the leisure class. Berkeley: University of California Press.
9. Mitchell, D. (1995): There's no such thing as culture: towards a reconceptulization of the idea of culture in Geography. Transactions of the Institute of British Geographers, Vol. 20, No. 1, pp. 102-116.
10. Reader, I. and Walter, T. (1993): Pilgrimage in popular culture. The Macmillan Press, London.
11. Sheller, M. and Urry, J. (2006): The new mobilities paradigm. Environment and Planning, Vol. 38, pp. 207-226.
12. Sopher, D.E. (1967): Geography of Religions. Prentice Hall, London.
13. Turner, V. and Turner, E. (1978): Image and Pilgrimage in Christian Culture. New York: Columbia University Press.
14. Urry, J. (2007): Mobilities. Cambridge: Polity Press.
15. Vukoni, B. (1996): Tourism and religion. London: Elsevier Science Ltd.
16. Vukoni, B. (2002): Religion, Tourism and Economics, a Convenient Symbiosis. Tourism Recreation Research, Vol. 27, No. 2, pp. 59-64.
17. www.amarujala.com/uttarakhand/rudraprayag/ruchch-mahadev-temple-attached-to-the-bridge-after-eight-years-rudrapryag-news-drn385736798.
18. www.amarujala.com/uttarakhand/rudraprayag/tungnath-and-nari-temples-should-be-connected-with-tourism-circuit-rudrapryag-news-drn369586920.
19. www.indianetzone.com/49/pilgrimage tourism rudraprayag district.htm.